8 lkL–frd eY; ,o /kkfeZd fØ;k

भारतीय समाज अपनी धर्म प्रधानता एवं सांस्कृतिक विलक्षणताओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है। जहां धर्म को प्रत्येक क्षेत्र में महत्ता प्राप्त रही है। वहीं सांस्कृतिक विलक्षणताएं समाज को आपस में जोड़ने के लिए प्रसिद्ध है। भारतीय समाज विचित्रताओं से परिपूर्ण है इनकी सभी वस्तुओं और क्रियाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक प्राकृतिक और दूसरी मानक द्वारा निर्मित एवं विकसित संस्कृति में वह सब आता है जो मानव द्वारा निर्मित एवं विकसित है। जैसे बर्तन, वस्त्र–आभूषण, मकान, मशीन, औजार, हथियार, आवागमन एवं दूरसंचार के साधन, रहन–सहन एवं खान–पान की विधियां व्यवहार मापदण्ड भाषा कला–कौशल, संगीत, नृत्य, धर्म–दर्शन, आदर्श विश्वास और मूल्य। यह सभी लोक हितकारी उपलब्धियां ही संस्कृति का अंग है '(E-B- Taylor)' महोदय संस्कृति को परिभाषित करते हुए लिखा है, "संस्कृति वह जटिल सम्पूर्णतः है जिसमें, ज्ञान, कला विश्वास, नैतिकता, नियम, रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड, विधि, कानून और इसी प्रकार की अन्य क्षमताओं और आदतों का समावेश होता है जिन्हे मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में सीखता है।

व्यक्ति को अपने समाज की संस्कृति अर्थात रहन–सहन एवं खान–पान की विधियाँ व्यवहार, प्रतिमान, रीति–रिवाज, कला–कौशल और संगीत–नृत्य में प्रशिक्षित करने और उसके भाषा साहित्य और धर्म–दर्शन के ज्ञान करने से होता है और जहां तक इन सबको सीखने सिखाने की बात है व्यक्ति अपने समाज (परिवार जाति समुदाय) की सामाजिक सांस्कृतिक क्रियाओं में भाग लेते हुए स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। सांस्कृतिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में मानवशास्त्रीय विचारकों ने मूल्यों को सांस्कृतिक लक्षणो के रूप में स्वीकार किया है। उनकी दृष्टि से संस्कृति और मूल्य अभिन्न होते है। किसी समाज की संस्कृति अपने मूल्यों से पहचानी जाती है। इस अर्थ में सभी मूल्य अपनी प्रकृति में सांस्कृतिक होते है। सभी मानवशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों, धर्मशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिक विचारकों का मत एक ही है कि सभी मूल्य अपनी प्रकृति में सामाजिक होते हैं, इनमे से जो मूल्य मनुष्य. की सामाजिक क्षेत्र की क्रियाओं को निर्देशित एवं नियन्त्रित करते हैं उन्हें सामाजिक मूल्य, जो उनकी सांस्कृतिक क्षेत्र की क्रियाओं को निर्देशित एवं नियन्त्रित करते है। उन्हे सांस्कृतिक मूल्य, जो उनकी धार्मिक क्षेत्र की क्रियाओं को निर्देशित एवं नियन्त्रित करते हैं उन्हे धार्मिक (आध्यात्मिक मूल्य) मूल्य कहते है। कुछ मूल्य समान हो सकते है और कुछ मूल्य भिन्न हो सकते है।

हमारे देश में अनेक संस्कृतियां हैं और हमारा लोकतन्त्र सभी संस्कृतियों को समान आदर की दृष्टि से देखता है। वह सभी को अपनी–अपनी संस्कृति के संरक्षण एवं विकास की स्वतन्त्रता देता है और साथ ही यह अपेक्षा करता है कि सब एक दूसरे की संस्कृतियों का सम्मान करें। अपनी संस्कृति के प्रति आदर भाव के साथ–साथ दूसरी संस्कृतियों के प्रति

आदर भाव रखने को सांस्कृतिक उदारता अथवा सांस्कृतिक सहिष्णुता कहते हैं। लोकतन्त्रीय भारत सांस्कृतिक सहिष्णुता के विकास का हामी है। व्यक्ति अपने देश की ही नही अपितु अन्य देशों की संस्कृतियों का भी सम्मान करते हैं और कहीं से भी कुछ अच्छा ग्रहण करने में विश्वास करते हैं।

बस एक सावधानी के साथ की अपनी सांस्कृतिक विशेषता बनी रहे और उसकी अपने में अलग पहचान हो। भारत के सन्दर्भ में सांस्कृतिक शिक्षा के अर्न्तगत सर्वप्रथम अपनी संस्कृति को सीखना आता है और अपनी संस्कृति को सीखने को समाजशास्त्रीय भाषा में स्वसंस्कृति ग्रहण (ENCULTURATION) कहते है।

जहां तक स्वसंस्कृति ग्रहण की बात है इसका शुभारम्भ परिवार व समुदाय में हो जाता है। व्यक्ति अपने परिवार व समुदाय के सदस्यों का अनुकरण कर रहन सहन और खान–पान की विधियों एवं व्यवहार प्रतिमान सीखता है। समुदाय व समाज में प्रचलित रीति–रिवाजों को देखते, समझते और सीखते हैं। कला–कौशल और संगीत–नृत्य की शिक्षा का शुभारम्भ भी परिवार व समाज से ही होता है और धीरे–धीरे उनमे सांस्कृतिक मूल्यों का विकास होता है।

भारतीय समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की विशेषता एवं महत्ता के साथ–साथ भारतीय सामाजिक व्यवस्था मूलतः धर्म दर्शन पर आधारित है। व्यक्ति धर्म के आधार पर जीवन के समस्त कार्यों को व्यवस्थित करने का प्रयत्न करता रहा है। भारतीय समाज में व्यक्ति ज्ञान, भक्ति कर्म के द्वारा परमेश्वर के स्वरूप को समझने का प्रयत्न करता रहा है। वह सत्चित और आनन्द की प्राप्ति का प्रयास तथा जीवन के परम सत्य को जानने की कोशिश करता रहा है। "डॉ0 राधाकृष्णन" ने लिखा है धर्म की धारणा के अर्न्तगत हिन्दू उन सब अनुष्ठानों और गतिविधियों को ले आता है जो मानवीय जीवन को गढ़ती और बनाये रखती है। व्यक्ति के पृथक–पृथक हित होते हैं, विभिन्न इच्छाएं होती है और विरोधी आवश्यकताएं होती हैं जो बढ़ती है और बढ़ाने की दिशा में ही परिवर्तित भी हो जाती है। उन सब को व्यवस्थित कर एक समूचे रूप में प्रस्तुत कर देना ही धर्म का प्रयोजन है। धर्म का सिद्धान्त हमें आध्यात्मिक वास्तविकताओं को मान्यता देने के प्रति सजग करता है, संसार से विरक्त होने के द्वारा नही अपितु इसके जीवन में इसके व्यवसाय (अर्थ) और इसके आनन्दों (काम) में आध्यात्मिक विश्वास की नियन्त्रण शक्ति का प्रवेश कराने के द्वारा । जीवन एक है और इसमें परालौकिक (पवित्र) ऐहिक (सांसारिक) का कोई भेद नही है। भक्ति और मुक्ति एक दूसरे के विरोधी नही है। धर्म, अर्थ और काम साथ ही रहते है। दैनिक जीवन के सामान्य व्यवसाय सच्चे अर्थों में भगवान की सेवा है सामान्य कृत्य उतने ही प्रभावी हैं जितना कि मुनियों की साधना है। "(राधाकृष्णन 1947:105–6)।

धर्म हिन्दुओं के जीवन को जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक रूपों में प्रभावित करता है। इस सम्बन्ध में "राधा कमल मुकर्जी" ने लिखा है कि भारतीय जीवन रचना का निर्माण आत्मा,

प्रकृति तथा परमात्मा और उनके पारस्परिक सम्बन्धों की विवेचना करने वाले सूक्ष्म आध्यात्मिक दर्शन के आधार पर हुआ है। इस प्रकार स्पष्ट है कि परम्परागत भारतीय सामाजिक व्यवस्था धर्म पर आधारित रही है।

भारतीय समाज में धर्म के अर्थ को रिलीजन शब्द के अनुवाद के रूप में नही समझा जा सकता। धर्म एक अत्यन्त व्यापक प्रत्यय है। धर्म उन मौलिक शक्ति के रूप में माना जाता है, जो भौतिक और अभौतिक व्यवस्था का आधार–भूत है और जो उन व्यवस्था को बनाये रखने के लिए आवश्यक है। ''गिलिन एवं गिलिन'' ने लिखा है एक सामाजिक समूह में व्याप्त उन संवेगात्मक विश्वासों को जो किसी अलौकिक शक्ति से सम्बन्धित है और साथ ही ऐसे विश्वासों से सम्बन्धित प्रकट व्यवहारों भौतिक वस्तुओ एवं प्रतीकों को धर्म के समाजशास्त्रीय क्षेत्र में सम्मिलित माना जा सकता है। (गिलिन एवं गिलिन 1948:459)। रिलीजन शब्द के अर्न्तगत अलौकिक विश्वास एवं अधिप्राकृतिक शक्तियां आती हैं, परन्तु हिन्दू समाज में धर्म का सम्बन्ध मुख्यतः मनुष्य के कर्तव्य बोध से है। हिन्दू धर्म एक ज्ञान है जो अलग–अलग परिस्थितियों में व्यक्तियों के विभिन्न कर्तव्यों को बतलाता है उन्हे कर्तव्य पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान करता है और उनमें मनोवांछित गुणों का विकास करता है। वेद, उपनिषद, गीता, स्मृतियां तथा पुराण हिन्दू धर्म के मूल स्त्रोत हैं। इन धर्म ग्रन्थों के माध्यम से भारतीय सामाजिक व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित किया गया है।

भारतीय समाज में धर्म की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसका विविध स्वरूप है। एक ओर धर्म वृहद परम्पराओं (Great Tradition) का संकलन है। जो वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृति रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थों, महान दार्शनिकों तथा धर्म प्रचारकों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। दूसरी ओर भारतीय समाज में धर्म का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष लघु परम्परा (Little Tradition) है। स्थानीय व क्षेत्रीय स्तर पर अनेक धार्मिक विश्वासों, धार्मिक अनुष्ठानों और देवी–देवताओं, साधु–सन्तों की महत्ता इस प्रवृत्ति का परिचायक है। इस दूसरी प्रवृत्ति का प्रमुख उदाहरण ग्रामीण धार्मिक विश्वास और कर्मकाण्ड है। भारतीय ग्रामीण समुदाय एक ओर वृहद हिन्दू परम्पराओं को स्वीकार करते हुए वृहद भारतीय समाज का एक अंग है तो दूसरी ओर इसमें अनेक स्थानीय विश्वास और धार्मिक मान्यताओं का अस्तित्व इसे एक पृथक अस्तित्व भी प्रदान करता है। *þefd;e efj;Vß* ने भारतीय ग्रामीण धार्मिक संरचना की इन प्रवृत्तियों का उल्लेख अपने किशनगढ़ी के अध्ययन में सार्वभौमिकीकरण (Universalization) और स्थानीयकरण (Parochaliration) की अवधारणाओं के माध्यम से किया है (मैकियम मैरियट 1969)। इसी प्रकार 'दूबे' ने समीरपेट गांव के अध्ययन द्वारा यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि ग्रामीण धर्म, वृहद हिन्दू परम्पराओं और स्थानीय धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों का मिश्रण है। (*,l0lh0nc0* 1967 –88)

आधुनिक काल में परिवर्तन की नवीन शक्तियों विशेषकर शिक्षा, धर्म निरपेक्षीकरण, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, मशीनीकरण,

यातायात एवं संचार के साधनों ने ग्रामीण समुदाय को जिन अनेक रूपों से प्रभावित किया है. उनमें से एक प्रमुख ग्रामीण सांस्कृतिक एवं धार्मिक संरचना भी है। यातायात और संचार के नवीन साधनों के विस्तार और शिक्षा के कारण एक ओर ग्रामीण समुदाय वृहद हिन्दू धार्मिक संस्कृति के अत्याधिक निकट आ गया है, तो दूसरी ओर धर्म निरपेक्षता और लौकिकीकरण के द्वारा नवीन मूल्यों का भी ग्रामीण समुदाय में प्रवेश हो रहा है।

वर्तमान अध्ययन में यह देखने का प्रयत्न किया गया है कि ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन की नवीन शक्तियां सांस्कृतिक मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं एवं धार्मिक विश्वासों और कर्मकाण्डों का परम्परागत स्वरूप क्या है और परिवर्तन की नवीन शक्तियां लौकिकीकरण से सम्बन्धित किन नवीन मूल्यों का विकास कर रही है। वर्तमान अध्ययन तीन खण्डों में विभाजित किया गया है।

[k.M v&/kkfed çfØ;k,&ogn vkj y?k ijEijkvk l vUr% fØ;kA
[k.M c&ykfdd hdj.k vkj /kkfed vfHkofUk;k d uohu çfrekuA
[k.M l& lkL—frd eY;k d çfrekuA
[k.M n& /kkfed çfØ;k, ogn ,o y?k ijEijkvk l vUr% fØ;kA

भारतीय ग्रामीण समुदाय के धार्मिक जीवन की एक महत्वपूर्ण विशेषता वृहद हिन्दू धार्मिक परम्पराओं और स्थानीय लघु परम्पराओं का समिश्रण है। एक ओर वृहद धार्मिक परम्पराओं के द्वारा ग्रामीण व्यक्ति सम्पूर्ण हिन्दू समाज से निकट रूप से सम्बन्धित है तो दूसरी ओर लघु परम्पराएं ग्रामीण संस्कृति को स्थानीय या क्षेत्रीय स्वरूप प्रदान करती हैं। अनेक देवी–देवता, प्रथाएं परम्पराएं हिन्दू धर्म ग्रन्थों और शास्त्रों में स्थान न रखते हुए भी स्थानीय स्तर पर ग्रामीण जीवन और व्यवहार के तरीकों को स्वीकार करती हैं। ''मैकिम मैरियट'' ने लघु औद्योगिक परम्पराओं की इस अन्तःक्रिया को सार्वभौमिकीकरण (Universalization) और स्थानीयकरण (Parochaliration) की प्रक्रिया के द्वारा अभिव्यक्त किया है। उन्होने किशनगढ़ी के अध्ययन के द्वारा यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि ग्रामीण स्तर पर वृहद हिन्दू संस्कृति परिवर्तित होकर स्थानीय और क्षेत्रीय स्वरूप प्राप्त करती है। जबकि स्थानीय परम्पराएं धीरे–धीरे विकसित होकर वृहद परम्पराओं का रूप धारण कर लेती है। (*efde efj;V* 1969–197–199)।

अतः वर्तमान खण्ड में यह देखने का प्रयत्न किया जा रहा है। कि अध्ययन में सम्मिलित (गदनपुर, कसमण्डी, करीमनगर, महीनकुण्ड) चारो ग्रामसभाओं के निवासी किस मात्रा में हिन्दू वृहद परम्पराओं से प्रभावित हैं, और उनकी स्थानीय मान्यताओं परम्पराओं का स्वरूप क्या है। आयु–शिक्षा एवं जाति (सामाजिक परिवर्त्य)का अन्तर उनके धार्मिक विश्वास और कर्मकाण्डों को किस मात्रा में प्रभावित कर रहे हैं।

8-1% bZ'oj vFkok Hkxoku ds vfLrRo esa fo'okl

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप ईश्वर की अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास करते हैं या नही ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है। 86.5 प्रतिशत उत्तरदाता ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास करते हैं तथा 13.5 प्रतिशत उत्तरदाता ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास नही करते है। अतः स्पष्ट है कि तीन चौथाई से भी अधिक उत्तरदाता ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 8-1 % bZ'oj vFkok Hkxoku ds vfLrRo esa fo'okl

fo'okl	vko`fRr	izfr'kr
हाँ	199	86.5
नही	31	13.5
योग	230	100.0

8-1-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa bZ'oj vFkok Hkxoku ds vfLrRo esa fo'okl

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं का ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास के प्रति सामाजिक परिवर्त्यों पर प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.1.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 82.9 प्रतिशत उत्तरदाता मध्यम आयु समूह के 86.5 प्रतिशत उत्तरदाता एवं वृद्ध आयु समूह के 94.5 प्रतिशत उत्तरदाता ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। जिन उत्तरदाताओं का ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास नही है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 17.1 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 13.5 प्रतिशत, एवं वृद्ध आयु समूह में 5.5 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि वृद्ध आयु समूह एवं मध्यम आयु समूह के उत्तरदाताओं की तुलना में युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं में ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास कम प्रतीत होता है। युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं में ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास की कमी का होना आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 75.6 प्रतिशत उत्तरदाता, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 93.2 प्रतिशत उत्तरदाता, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 88.1 प्रतिशत उत्तरदाता, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 74.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ईश्वर अथवा

भगवान के अस्तित्व में विश्वास व्यक्त किया है। तथा अशिक्षित वर्ग के 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 6.8 प्रतिशत उत्तरदाता हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 11.9 प्रतिशत उत्तरदाता, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 25.9 प्रतिशत उत्तरदाता ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास नही रखते हैं। अतः स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व के प्रति विश्वास की कमी प्रतीत होती है। जो कि समाज के आधुनिक परिवर्तन की नवीन प्रवृत्तियों के आत्मसातीकरण का परिणाम है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 95.2 प्रतिशत उत्तरदाता, पिछड़ीजाति के 86. 6 प्रतिशत उत्तरदाता, अनुसूचितजाति के 83.0 प्रतिशत उत्तरदाता ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास नही रखने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा उच्चजाति में, 4.8 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 13.4 प्रतिशत, अनुसूचितजाति में 17.0 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि उच्चजाति की तुलना में पिछड़ीजाति एवं अनुसूचितजाति वर्ग के उत्तरदाताओं में ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में विश्वास की कमी प्रतीत होती है। जो कि उदीयमान नवीन परिवर्तनों एवं तकनीकी का ग्रामीण समाज में वर्चस्व एवं नवीन विचारधाराओं के उद्भव का परिणाम है।

समस्त तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि आयु, शिक्षा एवं जाति का उत्तरदाताओं के ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व पर धनात्मक प्रभाव प्रतीत होता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.1. 1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

8-2 % nsoh&nsorkvksa dk iwtu

देवी देवताओ की स्तुति अनेकानेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाती है। ऐसे भी कुछ लोग है जो ईश्वर की पूजा अपनी जाति प्रथा एवं धार्मिक विश्वास के कारण करते है। वहीं ग्रामीण लोग सामान्य रूप से श्रीरामजी, शंकरजी, हनुमानजी, श्रीकृष्णजी, दुर्गा माँ, सांईबाबा, गणेशजी का पूजन करते हैं। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप किन–किन देवी देवताओं का पूजन करते हैं ? प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से विदित होता है कि 20.4 प्रतिशत उत्तरदाता श्रीरामजी, शंकरजी, श्रीकृष्णजी का पूजन करते है, 25.2 प्रतिशत उत्तरदाता श्रीरामजी, हनुमानजी, शंकरजी का पूजन करते है। 19.6 प्रतिशत उत्तरदाता श्रीरामजी हनुमानजी, दुर्गा का पूजन करते है। 14.8 प्रतिशत उत्तरदाता दुर्गा जी, श्रीकृष्ण जी, शंकरजी का पूजन करते है। केवल 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता श्रीकृष्ण, सांईबाबा, गणेश जी का पूजन करते हैं तथा 13.5 प्रतिशत उत्तरदाता पूजन नही करते हैं। अतः स्पष्ट है कि श्रीरामजी श्रीकृष्ण, शंकरजी का पूजन करने वाले अधिक मात्रा में उत्तरदाता के परिवार के सदस्य हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.2 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-1-1 % lkekftd ifjoR;l ,o bl'oj vFkok Hkxoku d vfLrRo e fo'okl

lkekftd ifjoR;l	gk	Ukgh	;kx
vk;q			
20–35	102 82.9	21 17.1	123 100.0
36–50	45 86.5	7 13.5	52 100.0
51 से ऊपर	52 94.5	3 5.5	55 100.0
f'k{kk			
अशिक्षित	31 75.6	10 24.4	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	96 93.2	7 6.8	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	52 88.1	7 11.9	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	20 74.1	7 25.9	27 100.0
Tkkfr			
उच्चजाति	40 95.2	2 4.8	42 100.0
पिछड़ीजाति	71 86.6	11 13.4	82 100.0
अनुसूचितजाति	88 83.0	18 17.0	106 100.0
योग	199 86.5	31 13.5	230 100.0

lkfj.kh 8-2 % nsoh nsorkvksa dk iwtu

nsoh&nsork	vkof`Ùk	çfr'kr
श्रीरामजी, श्रीकृष्णजी, शंकरजी	47	20.4
श्रीरामजी, हनुमानजी, शंकरजी	58	25.2
श्रीरामजी, हनुमानजी, दुर्गाजी	45	19.6
दुर्गाजी, कृष्णजी, शंकरजी	34	14.8
श्रीकृष्णजी, साईबाबा, गणेशजी	15	6.5
पूजन नही करते	31	13.5
योग	230	100.0

8-2-1 % lkekftd ifjorZu ,oa nsoh nsorkvksa dk iwtu

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के द्वारा देवी देवताओं का पूजन करने पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.2.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि श्रीरामजी, श्रीकृष्णजी, शंकरजी का पूजन करने वाले युवा आयु समूह में 18.7 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में, 19.2 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह में 25.5 प्रतिशत उत्तरदाता है। श्रीरामजी, हनुमानजी, शंकरजी की पूजा करने वाले युवा आयु समूह में 28.5 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में, 11.5 प्रतिशत और वृद्ध आयु समूह में 30.9 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। श्रीरामजी, हनुमानजी, दुर्गा माँ की पूजा करने वाले युवा आयु समूह में 16.2 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 23.1 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह के 23.6 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। दुर्गामाँ, शंकरजी, श्रीकृष्णजी की पूजा करने वाले युवा आयु समूह में 17.9 प्रतिशत मध्यम आयु समूह में 11.5 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह में 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। श्री कृष्णजी, सांईबाबा, गणेशजी की पूजा करने वाले युवा आयु समूह में 6.5 प्रतिशत मध्यम आयु समूह में 3.9 प्रतिशत, वृद्ध समूह में 9.1 प्रतिशत उत्तरादाता है। पूजन न करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा युवा आयु समूह में 12.2 प्रतिशत मध्यम आयु समूह में 30.8 प्रतिशत है। अतः यह स्पष्ट है कि युवा आयु समूह व वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाता देवी–देवताओं के पूजन के प्रति अधिक जिज्ञांशु है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सह सम्बन्ध यह स्पष्ट करता है। कि श्रीरामजी, श्रीकृष्णजी, शंकरजी की पूजा करने वाले

उत्तरदाताओं की मात्रा अशिक्षित वर्ग में 12.2 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 19.4 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षावर्ग में 23.7 प्रतिशत स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में 29.6 प्रतिशत है। श्रीरामजी, हनुमानजी, शंकरजी की पूजा करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा अशिक्षित वर्ग में 24.4 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 30.1 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग में 8.5 प्रतिशत, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में 44.5 प्रतिशत है। श्रीरामजी, हनुमानजी, दुर्गामाँ की पूजा करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा अशिक्षित वर्ग में 12.2 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 19.4 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग में 22.1 प्रतिशत, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में, 25.9 प्रतिशत है। दुर्गामाँ, शंकरजी, कृष्णजी की पूजा करने वाले उत्तरादाताओं की मात्रा अशिक्षित वर्ग में 12.2 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 17.8 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग में 18.6 प्रतिशत है। श्रीकृष्णजी, सांईबाबा, गणेशजी की पूजा करने वाले उत्तरदाताओं का मात्रा अशिक्षित वर्ग में 9.7 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 10.7 प्रतिशत है। पूजा न करने वाले अशिक्षित वर्ग में 29.3 प्रतिशत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 2.9 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 27.1 प्रतिशत उत्तरदाता है। अतः यह कहना उचित होगा की क्रमशः ज्यादा शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं में देवी–देवताओं के पूजन की प्रवृत्ति प्रतीत होती है।

t kfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि श्रीरामजी, श्रीकृष्णजी, शंकरजी की पूजा करने वाले उच्चजाति के 21.4 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 20.7 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति के 19.8 प्रतिशत उत्तरदाता है। श्रीरामजी, हनुमानजी, शंकरजी, की पूजा करने वाले उच्चजाति के 26.2 प्रतिशत पिछड़ीजाति के 25.6 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति के 24.5 प्रतिशत उत्तरदाता है। श्रीरामजी, हनुमानजी, दुर्गामाँ की पूजा करने वाले उच्चजाति के 28.6 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 15.9 प्रतिशत, अनुसूचितजाति के 18.9 प्रतिशत उत्तरदाता है। दुर्गामाँ, श्रीकृष्णजी, शंकरजी की पूजा करने वाले उच्चजाति के 16.7 प्रतिशत पिछड़ीजाति के 14.6 प्रतिशत, अनुसूचितजाति के 14.2 प्रतिशत उत्तरदाता है। श्रीकृष्णजी, साईबाबा, गणेश की पूजा करने वाले उच्चजाति के 7.1 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 6.1 प्रतिशत, अनुसूचितजाति के 6.6 प्रतिशत उत्तरदाता है। पूजा नही करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा पिछड़ीजाति में 17.1 प्रतिशत अनुसूचितजाति में 16.0 प्रतिशत है। अतः यह स्पष्ट होता है। देवी देवताओं की पूजा करने की प्रवृत्ति सर्वाधिक उच्चजाति के उत्तरदाताओं में है तथा अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति में देवी–देवताओं की पूजा करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.2.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-2-1 % lkekftd ifjoR;l ,o nsoh nsorkvks dk iwtu

lkekftd ifjoR;l	Jhjke th] Jh—".k th] 'kadj th	Jhjke th] guqeku th] 'kadj th	Jhjke th] guqeku th] nqxkl th	nqxkl th] —".k th] 'kadj th	Jh—".k th] lkbZckck] x.k'k th	iwtu ugh djrs	;ksx
vk;q							
20—35	23 18.7	35 28.5	20 16.2	22 17.9	8 6.5	15 12.2	123 100.0
36—50	10 19.2	6 11.5	12 23.1	6 11.5	2 3.9	16 30.8	52 100.0
51 से ऊपर	14 25.5	17 30.9	13 23.6	6 10.9	5 9.1	—	55 100.0
f'k{kk							
अशिक्षित	5 12.2	10 24.4	5 12.2	5 12.2	4 9.7	12 29.3	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	20 19.4	31 30.1	20 19.4	18 17.8	11 10.7	3 2.9	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	14 23.7	5 8.5	13 22.1	11 18.6	—	16 27.1	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	8 29.6	12 44.5	7 25.9	—	—	—	27 100.0
Tkkfr							
उच्चजाति	9 21.4	11 26.2	12 28.6	7 16.7	3 7.1	—	42 100.0
पिछड़ीजाति	17 20.7	21 25.6	13 15.9	12 14.6	5 6.1	14 17.1	82 100.0
अनुसूचितजाति	21 19.8	26 24.5	20 18.9	15 14.2	7 6.6	17 16.0	106 100.0
योग	47 20.4	58 25.2	45 19.6	34 14.8	15 6.5	31 13.5	230 100.0

8-3 % 'khryk ekrk rFkk dkyh ekrk dk iwtu

चेचक के प्रकोप से बचने के लिए शीतला माता एवं काली माता का पूजन और कथा का आयोजन ग्रामीण समुदाय के धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। वर्तमान अध्ययन में

सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया की स्वयं व गांव के लोग शीतला माता व काली माता का पूजन चेचक, खसरा व दैवीय प्रकोप से बचने के लिए सामान्य रूप से करते है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 70.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं की यह मान्यता है कि उत्तरदाता स्वंय व गांव के लोग स्थानीय शीतला माता की एवं काली माता की पूजा में अत्याधिक विश्वास रखते है। 29.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन में असहमति व्यक्त की है। अतः स्पष्ट है कि तीन चौथाई के लगभग उत्तरदाताओं का मत है कि स्वयं व गांव के लोग स्थानीय शीतला माता एवं काली माता की पूजा करते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.3 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-3 'khryk ekrk rFkk dkyh ekrk dk iwtu

Iktu	*vko`fRr*	*ifr'kr*
हाँ	162	70.4
नही	68	29.6
योग	230	100.0

8-3-1 % tkfr ,oa 'khryk ekrk rFkk dkyh ekrk dk iwtu

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर शीतला माता एवं काली माता की पूजन से सम्बन्धित प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि उच्चजाति के 73.8 प्रतिशत उत्तरदाता, पिछड़ीजाति के 70.7 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचितजाति के 68.9 प्रतिशत उत्तरदाता शीतला माता एवं काली माता की पूजन करते है। पूजा न करने वालो की मात्रा उच्चजाति में 26.2 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में, 29.3 प्रतिशत, अनुसूचितजाति में 31.1 प्रतिशत है अतः स्पष्ट है कि शीतला माता एवं काली माता पूजन उच्चजाति के उत्तरदाताओं द्वारा विशेषकर किया जाता है। पिछड़ीजाति व अनुसूचितजाति के उत्तरदाताओं में भी शीतला माता एवं काली माता के पूजन की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.3.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-3-1 tkfr ,oa 'khryk ekrk rFkk dkyh ekrk dk iwtu

Tkkfr	*gk¡*	*ugh*	*;ksx*
उच्चजाति	31 73.8	11 26.2	42 100.0
पिछड़ीजाति	58 70.7	24 29.3	82 100.0
अनुसूचितजाति	73 68.9	33 31.1	106 100.0
योग	162 70.4	68 29.6	230 100.0

8-4 % cfy çFkk dk çpyu

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आपके परिवार में बलि चढ़ाने की प्रथा का चलन है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 7.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में बलि चढ़ाने की प्रथा का प्रचलन है, तथा 93.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में बलि चढ़ाने की प्रथा का प्रचलन नही है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में से कुछ प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में बलि चढ़ाने की प्रथा का चलन है तथा जिन उत्तरदाताओं के परिवार में बलि चढ़ाने की प्रथा का प्रचलन है वे मुस्लिम धर्म (समुदाय) के सदस्य है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.4 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-4 % cfy çFkk dk çpyu

cfy iFkk dk ipyu	vko`fRr	ifr'kr
हाँ	16	7.0
नही	214	93.0
योग	230	100.0

8-5 % noh norkvk dh vkjk/kuk ,o i tk dju dk Øe

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि वे अपने आराध्य देवी–देवताओं की पूजा एवं आराधना मुख्य रूप से कब करते है। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 27.0 प्रतिशत उत्तरदाता अपने आराध्य देवी–देवताओं की पूजा एवं आराधना प्रतिदिन करते है, 31.3 प्रतिशत उत्तरदाता अपने आराध्य देवी–देवताओं की पूजा एवं आराधना सप्ताह के निश्चित दिनों में करते हैं, 41.7 प्रतिशत उत्तरदाता अपने आराध्य देवी देवताओं की पूजा एवं आराधना विशेष पर्वों पर करते है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता आराध्य देवी–देवताओं की पूजा एवं आराधना विशेष पर्वों पर करते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.5 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-5 % noh&norkvk dh vkjk/kuk ,o i tk dju dk Øe

vkjk/kuk ,o i tk	vko`fRr	ifr'kr
प्रतिदिन	62	27.0
सप्ताह में	72	31.3
विशेष पर्वों पर	96	41.7
योग	230	100.0

8-5-1 % lkekftd ifjoR;l ,o noh&norkvk dh vkjk/kuk ,o i tk dju dk Øe

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा करने के क्रम पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.5.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि प्रतिदिन देवी देवाताओ की आराधना एवं पूजा करने वाले युवा आयु समूह के 30.0 प्रतिशत उत्तरदाता, मध्यम आयु समूह के 25.0 प्रतिशत उत्तरदाता, वृद्ध आयु समूह के 21.8 प्रतिशत उत्तरदाता है तथा सप्ताह में देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा करने वाले युवा आयु समूह के 40.7 प्रतिशत उत्तरदाता, मध्यम आयु समूह के 28.8 प्रतिशत उत्तरदाता एवं वृद्ध आयु समूह के 12.7 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। विशेष पर्वो पर देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा करने वाले युवा आयु समूह के 29.3 प्रतिशत उत्तरदाता, मध्यम आयु समूह के 46.2 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्ध आयु समूह के 65.5 प्रतिशत उत्तरदाता है। तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि युवा आयु समूह के उत्तरदाता अधिकांशतः देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा करते हैं तथा वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाता अधिकांशतः विशेष पर्वों पर देवी देवताओं की पूजा करते है। मध्यम आयु समूह में देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा करने की सामान्य प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि प्रतिदिन देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा करने वाले अशिक्षित वर्ग के 24.4 प्रतिशत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 26.2 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 25.4 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नाकोत्तर शिक्षा वर्ग के 37.0 प्रतिशत उत्तरदाता है। सप्ताह में देवी–देवताओं की आराधना एवं पूजा करने वाले अशिक्षित वर्ग के 26.8 प्रतिशत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 28.2 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 33.9 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 44.5 प्रतिशत उत्तरदाता है। विशेष पर्वों पर देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा करने वाले अशिक्षित वर्ग के 48.8 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 45.6 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 40.7 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 18.5 प्रतिशत उत्तरदाता है। अतः स्पष्ट है कि देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा में अधिकांशतः शिक्षित वर्ग के सदस्य अत्याधिक रूचि रखते हैं एवं विशेष पर्वों पर देवी देवताओं का पूजन एवं आराधना में कम शिक्षित वर्ग के उत्तरदाता एवं अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाताओं की रूचि अधिक प्रतीत होती है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसन्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि प्रतिदिन देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा करने वाले उच्चजाति के 52.4 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 25.6 प्रतिशत एवं अनूसूचित जाति के 17.9 प्रतिशत उत्तरदाता है। सप्ताह में देवी देवताओ की आराधना एवं पूजा करने वाले उच्चजाति के 33.3 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 31.7 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति के 30.2 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। विशेष पर्वो पर देवी देवताओं की आराधना एवं पूजा करने वाले उच्चजाति के 14.3 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 42.7 प्रतिशत, एवं अनुसूचितजाति के 51.9 प्रतिशत उत्तरदाता है। अतः स्पष्ट है कि तुलनात्मक रूप से उच्चजाति में प्रतिदिन देवी देवताओं की आराधना करने की प्रवृत्ति पायी गयी जवकि अनुसूचितजाति में विशेष पर्वों पर देवी–देवाताओं की आराधना एवं पूजा करने की प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट होती है। अतः यह कहना उचित होगा की युवा और शिक्षित वर्ग के सदस्य आराधना एवं पूजा पाठ में अधिक रूचि रखते है। ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रामीण समुदाय के निवासी नवीन शिक्षा ग्रहण के द्वारा लघु परम्पराओं के स्थान पर वृहद हिन्दू धार्मिक परम्पराओं की ओर अधिक आकर्षिक हो रहे हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.5.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

8-6 % ifjokj e miyC/k nsoh&nsorkvk d fp= ;k efr

हिन्दू धर्म के परिवारों में देवी–देवताओं की मूर्ति या चित्र परिवार के धार्मिक विश्वास को प्रतिबिम्वित करता है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप के परिवार में किन–किन देवी देवताओं के चित्र व मूर्ति है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 70.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में श्रीरामजी, हनुमानजी, शंकरजी, की मूर्ति या चित्र है, 67.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में दुर्गामाँ, श्रीकृष्ण जी, गणेश की मूर्ति या चित्र हैं, 39.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में लक्ष्मीमाँ, गायत्री माँ, सन्तोषी माँ की मूर्ति या चित्र हैं, 23.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में विष्णु जी, वैष्णो माँ, सांईबाबा की मूर्ति या चित्र है, 25.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में अन्य देवी देवताओं के तथा अन्य धर्मों के आराध्यों की मूर्ति या चित्र विद्यमान है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरादाताओं के परिवारों में एक से अधिक देवी देवताओं की मूर्ति या चित्र विद्यमान है। श्रीरामजी, हनुमानजी, शंकरजी की मूर्ति या चित्र अधिकांश परिवारों में पाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीराम जी, हनुमानजी, शंकरजी की आराधना अधिकांश परिवारों में मुख्य रूप से की जाती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.6 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-5-1 % lkekftd ifjoR;l ,o noh norkvk dh vkjk/kuk ,o iwtk dk Øe

lkekftd ifjoR;l	ifrfnu	lIrkg e	fo'k"k iok ij	;kx
vk;q				
20–35	37 30.0	50 40.7	36 29.3	123 100.0
36–50	13 25.0	15 28.8	24 46.2	52 100.0
51 से ऊपर	12 21.8	7 12.7	36 65.5	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	10 24.4	11 26.8	20 48.8	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	27 26.2	29 28.2	47 45.6	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	15 25.4	20 33.9	24 40.7	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	10 37.0	12 44.5	5 18.5	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	22 52.4	14 33.3	6 14.3	42 100.0
पिछड़ीजाति	21 25.6	26 31.7	35 42.7	82 100.0
अनुसूचितजाति	19 17.9	32 30.2	55 51.9	106 100.0
योग	62 27.0	72 31.3	96 41.7	230 100.0

lkfj.kh 8-6 ifjokj e miyC/k noh norkvk d fp= ;k efr

noh&nork	gk¡		ugh		;kx
	vkofRr	ifr'kr	vkofRr	ifr'kr	
श्रीरामजी, हनुमानजी, शंकरजी	161	70.0	69	30.0	230
दुर्गाजी, कृष्णजी, शंकरजी	156	67.8	74	32.2	230
लक्ष्मीजी, गायत्रीमाँ, सन्तोषीमाँ	90	39.1	140	60.9	230
विष्णुजी, वैष्णोंमाँ, सांईबाबा	55	23.9	175	76.1	230
अन्य देवी–देवता/अन्य धार्मिक आराध्य	58	25.2	172	74.8	230

8-7 % ifjokj e miyC/k /kkfeZd xzUFk

मुख्यतः सभी धर्मों व सम्प्रदायों में धार्मिक ग्रन्थों का पठन–पाठन या श्रवण व्यक्ति के धार्मिक आस्था का एक प्रमुख परिचायक है। शिक्षित व्यक्तियों में धार्मिक ग्रन्थों के पठन की ओर अशिक्षित व्यक्तियों में धार्मिक ग्रन्थों के सुनने की प्रवृत्ति उनकी धार्मिक भावना की तीव्रता को अभिव्यक्त करती है। अतः अनेक परिवारों में धार्मिक ग्रन्थों को श्रद्धा और शुभ वस्तु मानकर रखा जाता है। वर्तमान अध्ययन में 42.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवारों में, श्रीरामचरितमानस, गीता, हनुमान चालीसा, कुरानशरीफ उपलब्ध है। 25.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में दुर्गा चालीसा, शिव चालीसा, सुखसागर, व्रत की कथाएं उपलब्ध है तथा 32.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में धार्मिक ग्रन्थ उपलब्ध नही है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश परिवारों में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस, हनुमान चालीसा, एवं गीता को मुख्य रूप से श्रद्धा की वस्तु माना जाता है तथा मुस्लिम परिवारों में भी कुरानशरीफ को विशेष एवं मुख्य श्रद्धा का ग्रन्थ माना जाता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.7 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-7 % ifjokj e miyC/k /kkfeZd xzUFk

/kkfeZd xzUFk	vkofÙk	çfr'kr
श्रीरामचरितमानस, हनुमान चालीसा, गीता, कुरानशरीफ	97	42.2
दुर्गा चालीसा, शिव चालीसा,सुखसागर, व्रत कथाए इत्यादि	58	25.2
ग्रन्थ नही है।	75	32.6
योग	230	100.0

8-8 % cEgno ckck e fo'okl

भारतीय ग्रामीण समुदाय में धार्मिक जीवन की एक महत्वपूर्ण विशेषता वृहद हिन्दू संस्कृति से भिन्न स्थानीय देवी देवताओं और कर्मकाण्डों में आस्था का पाया जाना है।वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित ग्रामसभाएं भी इन विशेषताओं से मुक्त नही है। ग्रामसभाओं के पूरब व

उत्तर दिशा में ब्रम्हदेव बाबा का स्थान है जिसे स्थानीय देवता के रूप में माना जाता है। ग्राम गदनपुर व करीमनगर में ब्रम्हदेव बाबा के स्थान पर वर्ष में वैशाखी व अगहानी पर्व पर मेला लगता है और दूरदराज के ग्रामवासी मेले में प्रतिभाग करते है। दूरदराज व स्थानीय ग्रामवासी वृम्हदेव बाबा के स्थान पर अपने बच्चों का मुण्डन संस्कार भी कराते हैं। ग्रामीण समुदाय के सदस्य स्थानीय ब्रम्हदेव बाबा को सुरक्षा और समृद्धि के देवता के रूप में स्वीकारते है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं का ध्यान ब्रम्हदेव बाबा की ओर आर्कषित करते हुए पूंछा गया कि ब्रम्हदेव बाबा में गांव के लोगो के विश्वास का स्वरूप क्या है। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 27.4 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि ग्रामवासी व क्षेत्रवासी ब्रम्हदेव बाबा में अत्याधिक विश्वास करते हैं, 53.0 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि ग्रामवासी व क्षेत्रवासी ब्रम्हदेव बाबा पर सामान्य विश्वास करते है तथा 19.6 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सन्दर्भ में कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.8 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-8 cEgnso ckck esa fo’okl

cEgnso ckck esa fo’okl	*vko`fÙk*	*izfr'kr*
अत्याधिक विश्वास	63	27.4
सामान्य विश्वास	122	53.0
कह नही सकते	45	19.6
योग	230	100.0

8-8-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa cEgnso ckck esa fo’okl

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में ब्रम्हदेव बाबा में विश्वास पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.8.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 15.4 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 40.4 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह के 41.8 प्रतिशत उत्तरदाता वृम्हदेव बाबा में अत्याधिक विश्वास करते है। जिन उत्तरदाताओं का ब्रम्हदेव बाबा में सामान्य विश्वास है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 61.8 प्रतिशत मध्यम आयु समूह में, 38.5 प्रतिशत और वृद्ध आयु समूह में 47.3 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं ने ब्रम्हदेव बाबा के विश्वास में किसी भी मत का उल्लेख नही किया है। उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 22.8 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 21.1 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 10.9 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि आयु के

बढ़ते हुए क्रम में वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाताओं का ब्रम्हदेव बाबा पर अत्याधिक विश्वास प्रतीत होता है तथा युवा आयु समूह के उत्तरदाता ब्रम्हदेव बाबा पर सामान्य विश्वासवान है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है अशिक्षित वर्ग के 36.6 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 23.3 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 30.5 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 22.2 प्रतिशत उत्तरदाता ब्रम्हदेव बाबा में अत्याधिक विश्वास रखते हैं। जिन उत्तरदाताओं का ब्रम्हदेव बाबा पर सामान्य विश्वास है उनकी मात्रा अशिक्षित वर्ग में 39.0 प्रतिशत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 51.5 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग में 59.3 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में 66.7 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं ने ब्रम्हदेव बाबा में विश्वास के प्रति संशय की स्थिति है उनकी मात्रा अशिक्षित वर्ग में 24.4 प्रतिशत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 25.2 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग में 10.2 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में 11.1 प्रतिशत पायी गयी है। अतः यह स्पष्ट है कि अशिक्षित वर्ग के उत्तरदाताओं में एवं कम शिक्षित उत्तरदाता ब्रम्हदेव बाबा में अत्याधिक विश्वासवान है जबकि शिक्षा के बढ़ते हुए क्रमानुसार अधिक शिक्षित व्यक्ति ब्रम्हदेव बाबा पर सामान्य विश्वासवान है एवं ब्रम्हदेव बाबा के विश्वास पर संशय की स्थिति वाले उत्तरदाता या तो ईश्वर में विश्वास नही रखते या दूसरे धर्म को मानने वाले है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 26.2 प्रतिशत पिछड़ीजाति के 18.3 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति के 34.9 प्रतिशत उत्तरदाता, ब्रम्हदेव बाबा में अत्याधिक विश्वासवान है। जिन उत्तरदाताओं की ब्रम्हदेव बाबा में सामान्य विश्वास की आस्था है उनकी मात्रा उच्चजाति में 61.9 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 48.8 प्रतिशत, अनुसूचितजाति में 52.8 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं में ब्रम्हदेव बाबा में विश्वास के प्रति संशय की स्थिति है उनकी मात्रा उच्चजाति में 11.9 प्रतिशत पिछडी जाति में, 32.9 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति में 12.3 प्रतिशत है। अतः तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि ब्रम्हदेव बाबा में अत्याधिक विश्वासवान अनुसूचितजाति के उत्तरदाता हैं एवं ब्रम्हदेव बाबा में सामान्य विश्वास रखने वाले उच्चजाति के उत्तरदाता हैं। तथ्यों के विश्लेषण (आयु, शिक्षा एवं जाति) के आधार पर ब्रम्हदेव बाबा में विश्वास में धनात्मक प्रभाव प्रतीत होता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.8.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-8-1 lkekftd ifjoR;l ,o cEgno ckck e fo'okl

lkekftd ifjoR;l	vR;kf/kd fo'okl	lkekU; fo'okl	dg ugh ldrs	;ksx
vk;q				
20–35	19 15.4	76 61.8	28 22.8	123 100.0
36–50	21 40.4	20 38.5	11 21.1	52 100.0
51 से ऊपर	23 41.8	26 47.3	6 10.9	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	15 36.6	16 39.0	10 24.4	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	24 23.3	53 51.5	26 25.2	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	18 30.5	35 59.3	6 10.2	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	6 22.2	18 66.7	3 11.1	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	11 26.2	26 61.9	5 11.9	42 100.0
पिछड़ीजाति	15 18.3	40 48.8	27 32.9	82 100.0
अनुसूचितजाति	37 34.9	56 52.8	13 12.3	106 100.0
योग	63 27.4	122 53.0	45 19.6	230 100.0

8-9 % lR;ukjk;.k Hkxoku dh dFkk

भारतीय ग्रामीण समुदाय में लोक संस्कृति का एक प्रमुख स्वरूप सत्यनारायण भगवान की कथा है। इस कथा का आयोजन किसी संकट के निवारण या इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है। कथा के लिए पण्डित या पुरोहित को बुलाया जाता है, कथा का अवसर

न केवल धार्मिक वल्कि एक सामाजिक अवसर भी होता है। जिसमें मित्र, पड़ोसी, सम्बन्धी आदि आमन्त्रित किये जाते हैं। वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि उनके परिवार में सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन किया जाता है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है। कि अध्ययन में सम्मिलित 23.9 प्रतिशत उत्तरदाता के परिवार में वर्ष में एकाध बार सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन किया जाता है। 14.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में वर्ष में दो बार या अधिक बार सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन किया जाता है। 41.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में विशेष पर्वों पर (पूर्णिमा, अमावस्या, पूर्णिमा या अन्य पर्वों पर) सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन किया जाता है। 20.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन नही किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि आधे से कम उत्तरदाताओं के परिवारों में सत्यनारायण की कथा का आयोजन विशेष पर्वों पर होता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.9 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-9 lR;ukjk;.k Hkxoku dh dFkk

dFkk	*vkofRr*	*izfr'kr*
वर्ष में एकाधबार	55	23.9
वर्ष में दो बार या अधिक	33	14.4
विशेष पर्वों पर एवं अवसरों पर	96	41.7
कथा का आयोजन नही होता	46	20.0
योग	230	100.0

8-9-1 % tkfr ,oa lR; ukjk;.k Hkxoku dh dFkk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर सत्यनारायण भगवान की कथा के आयोजन से सम्बन्धित तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि उच्चजाति के 40.5 प्रतिशत उत्तरदाता, पिछड़ीजाति के 30.5 प्रतिशत उत्तरादाता एवं अनुसूचितजाति के 12.3 प्रतिशत उत्तरदाता वर्ष में एकाध बार सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन किया जाता है। जिन उत्तरदाताओं के परिवार में वर्ष में दो बार या अधिक बार सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन किया जाता है उनकी मात्रा उच्चजाति में 35.7 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 14.6 प्रतिशत, अनुसूचितजाति में 5.7 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं के परिवार में विशेष अवसरों/पर्वों पर सत्यनारायण की कथा का आयोजन किया जाता है उनकी मात्रा उच्चजाति में 23.8 प्रतिशत, पिछड़ी जाति में 32.9 प्रतिशत व अनुसूचित जाति में 55.6 प्रतिशत है। जिन उत्तरदाताओं के परिवारों में सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन नही होता उनकी मात्रा पिछड़ीजाति में 22.0 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति में 26.4 प्रतिशत है।

अतः यह स्पष्ट है कि उच्चजाति के उत्तरदाताओं के परिवार में वर्ष में निरन्तर सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन किया जाता है। जबकि अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति में विशेष अवसरों व पर्वों पर कभी–कभी सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन किया जाता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.9.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-9-1 % tkfr ,oa lR;ukjk;.k Hkxoku dh dFkk

tkfr	*o"kZ esa ,dk/k ckj*	*o"kZ esa nks ckj ;k vf/kd*	*fo'ks"k ioZ ij ,oa volj ij*	*ugh*	*;ksx*
Tkkfr					
उच्चजाति	17 40.5	15 35.7	10 23.8	–	42 100.0
पिछड़ीजाति	25 30.5	12 14.6	27 32.9	18 22.0	82 100.0
अनुसूचितजाति	13 12.5	6 5.7	59 55.6	28 26.4	106 100.0
योग	55 23.9	33 14.4	96 41.7	46 20.0	230 100.0

8-10 % /kkfeZd xzUFkksa dk ikB ,oa Jo.k

ग्रामीण समुदाय के लोगो के धर्मगन्थों का पठन–पाठन या श्रवण धार्मिक आस्था का एक प्रमुख परिचायक है। शिक्षित व्यक्तियों में धार्मिक ग्रन्थों का पठन–पाठन की ओर अशिक्षित व्यक्तियों में धार्मिक ग्रन्थों को सुनने की प्रवृत्ति उनके धार्मिक भावना की तीव्रता को अभिव्यक्त करती है। अतः अनेक परिवारों में धार्मिक ग्रन्थों को श्रद्धा और शुभ वस्तु मानकर रखा जाता है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप धार्मिक ग्रन्थों का पाठ या श्रवण करते है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 26.1 प्रतिशत उत्तरदाता श्रीरामचरितमानस का पाठ या श्रवण करते हैं, 41.3 प्रतिशत उत्तरदाता हनुमान चालीसा, दुर्गा चालीसा, शिव चालीसा, सुखसागर, अन्य साप्ताहिक त्यौहारिक व्रत कथा का पाठ या श्रवण करते है, 32.6 प्रतिशत उत्तरदाता किसी ग्रन्थ का पाठ नही करते हैं। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता धार्मिक ग्रन्थों का पाठ या श्रवण करते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8. 10 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-10 % /kkfeZd xzUFkksa dk ikB ,oa Jo.k

ikB ,oa Jo.k	*vkofÙk*	*çfr'kr*
श्रीरामचरितमानस	60	26.1
हनुमान चालीसा, दुर्गा चालीसा, शिव चालीसा, सुखसागर, अन्य सप्ताहिक त्यौहारिक, व्रत कथाएं।	95	41.3
किसी ग्रन्थ का पाठ एवं श्रवण नही।	75	32.6
योग	230	100.0

8-11 % 'kk"k.k e /kkfed xUFkk dh Hkfedk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं का परम्परागत मान्यताओं के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए पूंछा गया की वे शोषण में धार्मिक ग्रन्थों की भूमिका मानते हैं ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है। कि 38.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है की धार्मिक ग्रन्थों की परिवार के शोषण में भूमिका है तथा 61.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है की धार्मिक ग्रन्थों की परिवार के शोषण में भूमिका नही है। अतः स्पष्ट है कि आधे से अधिक उत्तरदाता धार्मिक ग्रन्थों को परिवार के शोषण में भूमिका को नही मानते है तथा यह मानना है कि या धार्मिक ग्रन्थों से परिवार का शोषण नही होता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.11 में कमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-11 'kk"k.k e /kkfed xUFkk dh Hkfedk

Hkfedk	vkofRr	ifr'kr
हाँ	89	38.7
नही	141	61.3
योग	230	100.0

8-12 % /kkfed çFkkvk ,o ijEijkvk dk mRFkku e ck/kd gkuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि क्या धार्मिक प्रथाएं एवं परम्पराएं आपके एवं परिवार के उत्थान में बाधक है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 58.3 प्रतिशत उत्तरदाता धार्मिक प्रथाओं एवं परम्पराओं को उत्थान में बाधक मानते है, तथा 41.7 प्रतिशत उत्तरदाता धार्मिक प्रथाओं एवं परम्पराओं को उत्थान में बाधक नही मानते है। अतः स्पष्ट है कि आधे से अधिक उत्तरदाता धार्मिक प्रथाओं और परम्पराओं को अपने व परिवार के उत्थान में बाधक मानते हैं। धार्मिक प्रथाओं और परम्पराओं को उत्थान में बाधक मानना उदीयमान परिवर्तन की नवीन प्रक्रियाओं को आत्मसात् करना आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.12 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-12 /kkfed çFkkvk ,o ijEijkvk dk mRFkku e ck/kd gkuk

ck/kd	vkofRr	ifr'kr
हाँ	134	58.3
नही	96	41.7
योग	230	100.0

8-13 % Hkwr çr ,o vçk—frd 'kfä;k e fo'okl

अधिकाशतः देखा गया कि ग्रमीण व पिछड़े हुए समाजो में भूत—प्रेत और अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास का अत्याधिक प्रचलन रहा है। यह मान्यता प्रचलित रही है कि जो व्यक्ति

अप्राकृतिक कार्यों जैसे—दुर्घटना, बीमारी व अकाल मृत्यु के कारण या जिन व्यक्तियों की मृत्यु के बाद अन्त्येष्टि संस्कार व कर्मकाण्ड विधिविधान से नही होते हैं उन व्यक्तियों की आत्मा भटकती रहती है और भूत—प्रेत, चुड़ैल आदि का रूप धारण कर लेती है। ये प्रेत आत्माए गांव के निकटवर्ती निर्जन स्थानों पर जैसे—पीपल के पेड़, नीम के पेड़, इमली के पेड़ या दस बीस साल से बन्द पड़े गांव से दूर मकान या किला आदि में निवास करती है। ग्रामीण समुदाय के सदस्य इन प्रेत आत्माओं और अप्राकृतिक शक्तियों से भय खाते रहे हैं। कभी कभार ये अप्राकृतिक शक्तियां ग्रामीण समुदायों के लोगो को नुकसान पहुंचाती भी रही हैं, इस कारण उनकी संतुष्टि के लिए ग्रामीण लोग अनेक प्रकार के क्रिया—कलाप करते रहे हैं। आधुनिक काल में शिक्षा, तार्किकता, गतिशीलता एवं मनोवृत्तियों में क्रान्तिकारी नवीन परिवर्तन आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में संलग्नता एवं नवीन प्रतिमानों के आत्मसातीकरण ने अन्धविश्वासिता एवं भूतप्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास को निरन्तर कम किया है परन्तु पूर्णतया समाप्त अभी भी नही हो पाया है। ग्रामीण समुदायों में इनका अस्तित्व अभी भी बना हुआ है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया की आप के परिवार में भूत—प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास किया जाता है प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता अत्याधिक विश्वास करते है, 28.3 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य विश्वास करते है, एवं 60.8 प्रतिशत उत्तरदाता विश्वास नही करते है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता भूत प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास नही करते है। अतः स्पष्ट है कि अत्याधिक विश्वास करने वाले उत्तरदाताओं की मात्रा बहुत कम है उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.13 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-13 Hkwrçsr ,oa vçk—frd 'kfä;ksa esa fo’okl

fo'okl	vko`fRr	izfr'kr
अत्याधिक विश्वास	25	10.9
सामान्य विश्वास	65	28.3
विश्वास नही करते	140	60.8
योग	230	100.0

8-13-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa Hkwr&çsr ,oa vçk—frd 'kfä;ksa esa fo’okl

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में भूत—प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 813.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सह सम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 5.7 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 15.4

प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह के 18.2 प्रतिशत उत्तरदाता भूत–प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में अत्याधिक विश्वास रखते हैं तथा वे उत्तरदाता जोकि भूतप्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में सामान्य विश्वास रखते हैं उन उत्तरदाताओं की मात्रा युवा आयु समूह में 24.4 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 28.8 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह 36.4 प्रतिशत है।

जो उत्तरदाता भूत प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास नही करते उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 69.5 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 55.8 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 45.4 प्रतिशत है। अतः यह स्पष्ट है कि वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाता एवं आयु के बढ़ते हुए क्रम में अधिक आयु वाले सदस्य भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वासवान है युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं में भूत–प्रेत के प्रति कम विश्वास आधुनिक विचारधारा का द्योतक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 24.4 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 14.6 प्रतिशत उत्तरदाता भूत–प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में अत्याधिक विश्वासवान है वे उत्तरदाता जो कि भूत–प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में सामान्य विश्वास करते है। उनकी मात्रा अशिक्षित वर्ग में 53.7 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 35.9 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग में 30.5 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में 11.1 प्रतिशत है वे उत्तरदाता जो कि भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वासवान नही है। उनकी मात्रा अशिक्षित वर्ग में 21.9 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग में 49.5 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग में 69.5 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नाकोत्तर शिक्षा वर्ग में 88. 9 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि भूत–प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में अत्याधिक विश्वासवान था तो अशिक्षित है या कम शिक्षित वर्ग के सदस्य है। अधिक शिक्षित सदस्य भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास नही करते है। शिक्षा के बढ़ते क्रम में अधिक शिक्षित व्यक्ति का भूत–प्रेत में विश्वास न रखना नवीन परिवर्तन का द्योतक है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि भूत प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में अत्याधिक विश्वासवान उच्चजाति के 7.1 प्रतिशत उत्तरदाता, पिछड़ीजाति के 11.0 प्रतिशत उत्तरदाता, अनुसूचितजाति के 12.3 प्रतिशत उत्तरदाता है। भूत प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में सामान्य विश्वासवान उत्तरदाता उच्चजाति के 28.6 प्रतिशत पिछड़ीजाति के 25.6 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति के 30.2 प्रतिशत उत्तरदाता है। वे उत्तरदाता जो कि भूत प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास नही करते उनकी मात्रा उच्चजाति में 64.3 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 63.4 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति में 57.5 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि उच्चजाति की तुलना में अनुसूचितजाति के उत्तरदाता भूत–प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में अत्याधिक विश्वासवान है। एव उच्चजाति

का भूत–प्रेत एवं अप्राकृतिक शक्तियों में कम विश्वास उदीयमान नवीन परम्पराओं के आत्मसातीकरण का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.13.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-13-1 % lkekftd ifjoR;l ,o Hkr çr ,o vçk—frd 'kfDr;k e fo'okl

lkekftd ifjoR;l	*vR;kf/kd fo'okl*	*lkekU; fo'okl*	*fo'okl ugh djr*	*;kx*
vk;q				
20–35	7 5.7	30 24.4	86 69.9	123 100.0
36–50	8 15.4	15 28.8	29 55.8	52 100.0
51 से ऊपर	10 18.2	20 36.4	25 45.4	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	10 24.4	22 53.7	9 21.9	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	15 14.6	37 35.9	51 49.5	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	–	18 30.5	41 69.5	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	–	3 11.1	24 88.9	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	3 7.1	12 28.6	27 64.3	42 100.0
पिछड़ीजाति	9 11.0	21 25.6	52 63.4	82 100.0
अनुसूचितजाति	13 12.3	32 30.2	61 57.5	106 100.0
योग	25 10.9	65 28.3	140 60.8	230 100.0

8-14 % Hkr&çr dk çdki

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया की आप के परिवार में भूत–प्रेत का प्रकोप हुआ है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 8.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में भूत–प्रेत का प्रकोप हुआ है। 91.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में भूत–प्रेत का प्रकोप नही हुआ है।

अतः स्पष्ट है कि भूत–प्रेत का प्रकोप अध्ययन में सम्मिलित बहुत ही कम उत्तरदाताओं के परिवारों में हुआ है जिन उत्तरदाताओं के परिवारों में भूत–प्रेत का प्रकोप हुआ है वे उत्तरदाता क्रमशः मुस्लिम व अनुसूचितजाति के सदस्य है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.14 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-14 Hkr&çr dk çdki

Ikdki	vkofRr	ifr'kr
हाँ	20	8.7
नही	210	91.3
योग	230	100.0

8-15 % tknw Vkuk e fo'okl

ग्रामीण समुदाय में जन साधारण के विश्वास का एक प्रमुख स्वरूप ओझा अथवा तांत्रिक इत्यादि की सहायता से भूत–प्रेत और अप्राकृतिक शक्तियों के प्रभाव या बीमारी एवं आपदा से मुक्ति प्राप्त करना है। ग्रामीण समुदायों में यह विश्वास प्रचलित है कि रोग और संकट अप्राकृतिक शक्तियों की उपज है। उनका निवारण औषधि या अन्य तरीकों से न होकर ओझा या तांत्रिक की तन्त्र क्रिया के द्वारा अप्राकृतिक शक्तियों के प्रभाव को कम करना सम्भव है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरादाताओं का दृष्टिकोण इस समस्या की ओर आकर्षित करते हुए उनसे पूंछा गया की आप बीमारी और संकट के निवारण के लिए ओझा या तान्त्रिक शक्ति में विश्वास रखते है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 39.6 प्रतिशत उत्तरदाता जादू–टोना में विश्वास रखते है, 60.4 प्रतिशत उत्तरदाता जादू–टोना में विश्वास नही रखते है जादू–टोना में विश्वास की कम प्रतिशतता ग्रामीण समुदायिक जीवन में उदीयमान नवीन परिवर्तन का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.15 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-15 tknw Vkuk e fo'okl

fo'okl	vkofRr	ifr'kr
हाँ	91	39.6
नही	139	60.4
योग	230	100.0

8-15-1 % tkn&Vkuk ¼djkok&/kjkb½ dk lgkjk yuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण इस समस्या की ओर आकर्षित करते हुए पूंछा गया कि आप बीमारी और संकट के निवारण के लिए ओझा अथवा तान्त्रिक के द्वारा जादू–टोना (करावा धराई) में आस्था रखते है। ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता जादू टोना (करावा धराई) में आस्थावान है, 89.2 प्रतिशत उत्तरदाता जादू टोना (करावा धराई) में आस्थावान नही हैं। अतः स्पष्ट है कि बहुत कम ही उत्तरदाता जादू–टोना (करावा धराई) को बीमारी एवं संकट के निवारण के लिए उपर्युक्त समझते हैं। यह तथ्य आधुनिक परिवर्तन को दर्शाता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.15.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-15-1 % tkn Vkuk ¼djkok /kjkb½ dk lgkjk yuk

lgkjk	*vkofRr*	*ifr'kr*
हाँ	25	10.9
नही	205	89.1
योग	230	100.0

8-16 % mnn'; ftl d fy, tkn Vkuk dk lgkjk yuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण इस समस्या की ओर आकर्षित करते हुए पूंछा गया कि आप बीमारी और संकट के निवारण के लिए जादू–टोना (करावा–धराई) में विश्वासवान हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन में विदित होता है कि 76.0 प्रतिशत उत्तरदाता रोग उन्मूलन के लिए जादू टोना (करावा धराई) का सहारा लेते है। 8.0 प्रतिशत उत्तरदाता दूसरों से बदला लेने के लिए जादू टोना (करावा धराई) का सहारा लेते है। 16.0 प्रतिशत उत्तरदाता दैवी शक्ति को प्रसन्न करने के लिए जादू टोना (करावा धराई) का सहारा लेते है। अतः स्पष्ट है कि दो तिहाई से अधिक उत्तरदाता रोग उन्मूलन के लिए जादू–टोना (करावा धराई) का सहारा लेते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.16 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-16 % mís'; ftl d fy, tkn Vkuk dk lgkjk yuk

mnn';	*vkofRr*	*ifr'kr*
रोग उन्मूलन के लिए	19	76.0
दूसरों से बदला लेने के लिए	2	8.0
दैवी–शक्ति को प्रसन्न करने के लिए	4	16.0
योग	25	100.0

8-17 % orr vFkok miokl j[kuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप के परिवार में व ग्रामसभा के निवासी वर्ष में प्रमुख त्यौहारों व अन्य विशेष दिनों व तिथियों पर व्रत अथवा उपवास रखते है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है। कि 47.8 प्रतिशत उत्तरदाता एवं परिवारीजन व्रत एव उपवास रखते हैं तथा 52.2 प्रतिशत उत्तरदाता एवं परिवारीजन व्रत अथवा उपवास नही रखते हैं। अतः स्पष्ट है कि लगभग आधे उत्तरदाताओं के परिवारीजन एवं ग्राम निवासी व्रत अथवा उपवास रखते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.17 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 8-17 % orr vFkok miokl j[kuk

orr vFkok miokl	vkofRr	ifr'kr
हाँ	110	47.8
नही	120	52.2
योग	230	100.0

8-18 % fo'k"k frfFk;ksa ij orr vFkok miokl j[kuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूछा गया कि आप के परिवार में व ग्रामसभा के निवासी वर्ष में किन तिथियों व त्यौहारों पर व्रत अथवा उपवास रखते हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 25.5 प्रतिशत उत्तरदाता एवं परिवारीजन साप्ताहिक व्रत अथवा उपवास (सोमवार व्रत मंगलवार व्रत, वृहस्पतिवार व्रत, रविवार व्रत, प्रदोष व्रत इत्यादि) रखते है, 9.1 प्रतिशत उत्तरदाता व परिवारीजन एकादशी एवं पूर्णिमा तेरस इत्यादि व्रत अथवा उपवास रखते हैं। 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता व परिवारीजन संकटा माता तथा सांईबाबा का व्रत अथवा उपवास रखते है। 22.7 प्रतिशत उत्तरदाता व परिवारीजन नवरात्रि व्रत अथवा उपवास रखते है, 31.8 प्रतिशत उत्तरदाता व परिवारीजन अन्य वार्षिक व्रत एवं त्यौहारिक व्रत अथवा उपवास रखते हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं एवं उनके परिवारीजन व ग्रामसभा के निवासियों की प्रतिशतता व्रत अथवा उपवास के प्रति प्रतीत होती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.18 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-18 % fo'k"k frfFk;ksa ij orr vFkok miokl j[kuk

orr vFkok miokl	vkofRr	ifr'kr
साप्ताहिक व्रत, प्रदोष व्रत	28	25.5
एकादशी व्रत, पूर्णिमा व्रत	10	9.1
संकटा माता व्रत, सांई बाबा	12	10.9
नवरात्र	25	22.7
अन्य वार्षिक व्रत एवं त्यौहारिक व्रत	35	31.8
योग	110	100.0

8-19 % çe[k rhFk LFkyk ij tkuk

ग्रामीण या नगरीय समुदाय के लोगों के द्वारा महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों की यात्रा करना न केवल धार्मिक दृष्टिकोण का परिचायक है, बल्कि वह भारत की विशालता, विभिन्नता, धार्मिकता, अनेकता में एकता एवं भारतीय संस्कृति की विशालता का परिचय व दर्शन कराता है। तीर्थ यात्रा से लौटने वाला ग्रामीण व्यक्ति विभिन्न प्रथाओं और विभिन्न समूह के लोगों को किसी उद्देश्य के लिए कार्य करते हुए देखकर उसे धार्मिक और सामाजिक एकता का बोध होता है। (मेण्डल बाम–1972–402–3) डॉ. एम.एन. श्रीनिवास ने अपने अध्ययन द्वारा यह दिखलाया है कि जब एक तीर्थयात्री सुदूर दक्षिण में रामेश्वरम् में स्नान करके समुद्र का जल लाकर गंगा नदी में प्रवाहित करता है तो वह वस्तुतः इस संस्कार के द्वारा सम्पूर्ण भारत की सामाजिक एकता पर बल देने का कार्य कर रहा है (श्रीनिवास –1962–105–6, 1966–22–23,100–32) दूसरी ओर श्रवण मास में शिवभक्त कांवड़िया गंगा नदी में स्नान करके व जल भर कर गंगा नदी के तट से सुदूर शिवालयों तक दो दिन चार दिन पैदल चलकर एक साथ सौकड़ों की संख्या में शिवधाम पहुँच कर और एक साथ शिव जी का जलाभिषेक कर धार्मिक एकता को दर्शाते है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के परिवार में धार्मिक विश्वास एवं कर्मकाण्डों का विश्लेषण करते हुए पूंछा गया कि आप या परिवार के वयोवृद्ध सदस्य तीर्थ स्थलों की यात्रा पर जा चुके है या नही ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 86.5 प्रतिशत उत्तरदाता या परिवारीजन तीर्थ स्थलों की यात्रा कर चुके है तथा 13.5 प्रतिशत उत्तरदाता या परिवारीजनों ने तीर्थ स्थलों की यात्रा नही की है। अतः स्पष्ट है कि कुछ उत्तरदाताओं को छोड़कर लगभग सभी उत्तरदाता या परिवारीजन तीर्थ स्थलों की यात्रा कर चुके है। शतप्रतिशत उत्तरदाताओं व परिवारीजनों का नवीन यातायात के साधनों के द्वारा सुदूर तीर्थ स्थानों की सरलता से यात्रा करना आधुनिक यातायात के साधनों की उपलब्धता का परिचायक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.19 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-19 % çe[k rhFk LFkyk ij tkuk

rhFk LFkkuk ij tkuk	vkofRr	ifr'kr
हाँ	199	86.5
नही	31	13.5
योग	230	100.0

8-20 % çe[k rhFkLFky

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया की आप या आपके परिवारीजन किन–किन तीर्थस्थल पर गये है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 86.5 प्रतिशत उत्तरदाता नैमिषारण्य तीर्थ गये है, 13.5 प्रतिशत उत्तरदाता नैमिषारण्य तीर्थ

नही गये है, 52.2 प्रतिशत उत्तरदाता हरिद्वार गये है, 47.8 प्रतिशत उत्तरदाता हरिद्वार नही गये है। 65.2 प्रतिशत उत्तरदाता प्रयागराज गये है, 34.8 प्रतिशत उत्तरदाता प्रयागराज नही गये है, 13.0 प्रतिशत उत्तरदाता वद्रीनाथ/केदारनाथ गये हैं तथा 87.0 प्रतिशत उत्तरदाता वद्रीनाथ/केदारनाथ नही गये हैं। 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता गंगासागर गये है, 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता गंगा सागर नही गये है, 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता जगन्नाथपुरी गये है 93.5 प्रतिशत उत्तरदाता जगन्नाथपुरी नही गये है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता या परिवारीजन नैमिषारण्य तीर्थ गये हैं तथा अन्य तीर्थ स्थलों में प्रयागराज व हरिद्वार जाने वालों की संख्या अधिक है। अन्य तीर्थ स्थलों पर दूरी के कारण कम उत्तरदाता या ग्रामीण लोग पहुंच पाये हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.20 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-20 % çeq[k rhFkZ LFky

izeq[k rhFkZ LFky	*gk¡*		*Ukgh*		*;ksx*
	vko`fRr	*izfr'kr*	*vko`fRr*	*izfr'kr*	
नैमिषारण्य	199	86.5	31	13.5	230
हरिद्वार	120	52.2	110	47.8	230
प्रयागराज	150	65.2	80	34.8	230
बद्रीनाथ/केदारनाथ	30	13.0	200	87.0	230
गंगासागर	20	8.7	210	91.3	230
जगन्नाथपुरी	15	6.5	215	93.5	230

8-21 % çeq[k rhFkZ LFkyksa ij tkus dk mís';

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता से पूछा गया कि आप या आपके परिवारीजनों का प्रमुख तीर्थ स्थलों पर जाने का क्या उद्देश्य है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 52.8 प्रतिशत उत्तरदाता स्नान करने के लिए तीर्थ स्थलों पर जाते है, 15.0 प्रतिशत उत्तरदाता त्यौहारों के कारण तीर्थ स्थलों पर जाते हैं, तथा 32.2 प्रतिशत उत्तरदाता संस्कारों की पूर्ति के लिए मनौतियां माननें व अन्य धार्मिक कार्यों के लिए यात्रा करते या तीर्थ स्थलों पर जाते है। अतः स्पष्ट है कि आधे उत्तरदाता स्नान करने के लिए तीर्थ स्थलों पर जाते है या यात्रा करते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.21 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-21 çeq[k rhFkZ LFkyksa ij tkus dk mís';

mís';	*vko`fRr*	*izfr'kr*
स्नान करने के लिए	105	52.8
त्यौहार के कारण	30	15.0
संस्कार की पूर्ति एवं मनौतियां, धार्मिक कार्य इत्यादि	64	32.2
योग	199	100.0

8-22 % çe[k rhFkk d çfr /kkj.kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया की आप या आपके परिवार के जो लोग तीर्थ स्थलों की यात्रा कर चुके है उनकी तीर्थ के प्रति क्या धारणा है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 20.1 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि वहां देवी देवता निवास करते हैं, 51.8 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि वहां जाने पर आत्मा को शान्ति मिलती है। 28.1 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि वहां जाने पर रोग दोष व दुखों से मुक्ति मिलती है। अतः यह स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की धारणा अलग–अलग है परन्तु अधिकांश उत्तरदाता यह मानते है कि वहां जाने से आत्मा को शान्ति मिलती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.22 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-22 % çe[k rhFkk d çfr /kkj.kk

/kkj.kk	vkofRr	ifr'kr
वहां देवी देवता निवास करते हैं।	40	20.1
वहां जाने से आत्मा को शान्ति मिलती है।	103	51.8
वहां जाने से रोग, दोष व दुःखों से मुक्ति मिलती है।	56	28.1
योग	199	100.0

8-23 % efUnj e vkuk&tkuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप के व आपके परिवारीजन के मन्दिर जाने का क्रम किस प्रकार है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है। 22.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्रायः मन्दिरों में आते जाते हैं, 63.9 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी मन्दिरों में आते जाते है, 13.5 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी हैं जो मन्दिरों में नही जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि तीन चौथाई से ज्यादा उत्तरदाता मन्दिरों में जाते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.23 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-23 % efUnj e vkuk tkuk

Øe	vkofRr	ifr'kr
प्रायः	52	22.6
कभी–कभी	147	63.9
कभी नही	31	13.5
योग	230	100.0

8-24 % –f'k lEcU/kh iwtk ikB

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूछा गया की आप कृषि सम्बन्धी पूजा पाठ करते हैं ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता

फसल बोने से पहले कृषि सम्बन्धी पूजा–पाठ करते हैं, 28.2 प्रतिशत उत्तरदाता फसल काटने के बाद कृषि सम्बन्धी पूजा–पाठ करते है, 60.9 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे भी हैं जो कृषि सम्बन्धी कोई पूजा–पाठ नही करते है अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता कृषि सम्बन्धी पूजा पाठ नही करते हैं। जो उत्तरदाता कृषि सम्बन्धी पूजा पाठ करते हैं वे अधिकांशतः फसल काटने के बाद ही पूजा–पाठ करते है। स्पष्टतः अधिकांश उत्तरदाताओं का कृषि सम्बन्धी पूजा–पाठ न करना आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.24 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-24 –f"k lEcU/kh iwtk&ikB

iwtk&ikB	*vko`fRr*	*izfr'kr*
फसल बोने से पहले	25	10.9
फसल काटने के बाद	65	28.2
पूजा–पाठ नही	140	60.9
योग	230	100.0

8-25 %R;kgkjk dk egRo

सम्पूर्ण भारत वर्ष में हिन्दी–हिन्दू–हिन्दुस्तान का नारा एकता और सामाजिक समरसता की अक्षुणता को बनाये हुए है वही दूसरी ओर अनेकों धर्मों को मानने वाले देश में निवास करते है, तथा सभी मिलजुल कर एक साथ सभी धर्मों के त्यौहारों को मनाते हैं। त्यौहार धार्मिक, सामाजिक और सामुदायिक दृष्टि से अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन अवसरों पर न केवल धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है बल्कि ये सामाजिक सुदृढ़ता और सामंजस्य को भी प्रतिविम्बित करते हैं। ग्रामीण जीवन में त्यौहारों का महत्व और भी अधिक है। क्योंकि इसका सम्बन्ध किसी न किसी प्रकार से कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था से अत्यन्त निकट है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया की आपके परिवार में किन त्योहारों को विशेष महत्व प्रदान किया जाता है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता विजय दशमी को 70.4 प्रतिशत उत्तरदाता विशेष रूप से, 22.6 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य रूप से केवल 7.0 प्रतिशत उत्तरदाता विजय दशमी के त्यौहार को नही मानते है। दीपावली के त्यौहार को 80.4 प्रतिशत उत्तरदाता विशेष रूप से, 12.6 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य रूप से, केवल 7.0 प्रतिशत उत्तरदाता दीपावली के त्यौहार को नही मानते हैं। होली के त्यौहार को 85.2 प्रतिशत उत्तरादाता विशेष रूप से, 7.8 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य रूप से केवल 7.0 प्रतिशत उत्तरदाता दीपावली के त्योहार को नही मानते हैं। होली के त्यौहार को 85.2 प्रतिशत उत्तरदाता विशेष रूप से, 7.8 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य रूप से, केवल 7.0 प्रतिशत उत्तरदाता होली के त्यौहार को नही मनाते हैं। नवरात्र

को 34.8 प्रतिशत उत्तरदाता विशेष रूप से, 58.2 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य रूप से केवल 7.0 प्रतिशत उत्तरदाता नवरात्र के पर्व को नही मानते है तथा ईद के त्यौहार को 4.3 प्रतिशत विशेष रूप से, 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य रूप से 87.0 प्रतिशत उत्तरदाता ईद का त्यौहार नही मनाते हैं। अतः स्पष्ट है कि होली, दीपावली व विजयदशमी को उत्तरदाता विशेष रूप से मनाते है। यह कहना उचित है कि ग्रामीण समुदाय के लोग महत्वपूर्ण धार्मिक त्यौहारों में अत्याधिक रूचिपूर्वक भाग लेते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.25 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-25 R;kgkjk dk egRo

R;kgkjk d uke	fo'k"k :i l		lkekU; :i l		ugh euk;k tkrk		;kx	
	vkofRr	ifr'kr	vkofRr	ifr'kr	vkofRr	ifr'kr	vkofRr	ifr'kr
विजयदशमी	162	70.4	52	22.6	16	7.0	230	100.0
दीपावली	185	80.4	29	12.6	16	7.0	230	100.0
होली	196	85.2	18	7.8	16	7.0	230	100.0
नवरात्र	80	34.8	134	58.2	16	7.0	230	100.0
ईद	10	4.3	20	8.7	200	87.0	230	100.0

[k.M c& ykfdddhdj.k vkj /kkfed vfHkofÙk;k d uohu çfreku

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की परिवर्तनशील, धार्मिक मनोवृत्ति और लौकिकीकरण से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। आधुनिकीकरण का एक आवश्यक तथ्य लौकिकीकरण है। लौकिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप किसी समाज में धर्म के आधार पर सामाजिक व्यवहार में भेदभाव समाप्त किया जाता है। लौकिकीकरण का प्रत्यक्ष सम्बन्ध तार्किक दृष्टिकोण से है। लौकिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा परम्परागत विश्वासों तथा धारणाओं के स्थान पर तार्किक ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है (श्रीनिवास–1967–126)। परम्परागत ग्रामीण समुदाय में जातिगत भेदभाव धार्मिक अन्धविश्वास कुरीतियों का प्रचलन रहा है। परन्तु आधुनिक काल में नगरीय सम्पर्क और शिक्षा के प्रसार के कारण तार्किकता और व्यवहारिकता का जो विकास हो रहा है। उसने इस परम्परागत रूढ़िवादी व्यवस्था को प्रभावित किया है। वर्तमान खण्ड में यह देखने का प्रयत्न किया जा रहा है की किस मात्रा में ग्रामीण समुदाय के सदस्य धर्म निरपेक्षीकरण की ओर अग्रसर रहे हैं।

8-26 % vk/kfud oL=k dk ç;kx

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया की आपके परिवार के सदस्य आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग करते हैं या नही ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है।

कि 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक वस्त्र (जीन्स–पैन्ट, टी–शर्ट, शर्ट–पैन्ट कोट–पैन्ट, लैगी, जीन्स–टॉप, चुस्त आधुनिक वस्त्र इत्यादि) का प्रयोग करते हैं।

केवल 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग न करके धोती, कुर्ता, खादी, सदरी, धोती, कमीज, टेरी खादी, सूती वस्त्रों का प्रयोग करते है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता शत्प्रतिशत (लगभग सभी) आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.26 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-26 vk/kfud oL=k dk ç;kx

vk/kfud oL=k dk i;kx	vkofÙkr	ifr'kr
हाँ	210	91.3
न्ही	20	8.7
योग	230	100.0

8-26-1 % lkekftd ifjoR;l ,o vk/kfud oL=k dk ç;kx

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के आधुनिक वस्त्रों के प्रयोग करने पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.26.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 100.0 प्रतिशत उत्तरदाता, मध्यम आयु समूह के 90.4 प्रतिशत उत्तरदाता, एवं वृद्ध आयु समूह के 72.7 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग न करने वालों में मध्यम आयु समूह के 9.6 प्रतिशत उत्तरदाता व वृद्ध आयु समूह के 27.3 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है युवा आयु समूह के सभी उत्तरदाता एवं मध्यम व वृद्ध आयु समूह के कुछ ही उत्तरदाताओं को छोड़कर सभी उत्तरदाता आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग करते है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित समूह के 78.0 प्रतिशत उत्तरदाता, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 89.3 प्रतिशत उत्तरदाता, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के 100.0 प्रतिशत उत्तरदाता तथा स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के 100.0 उत्तरदाता आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग करते हैं । आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग न करने वालें अशिक्षित समूह के 22.0 प्रतिशत उत्तरदाता, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 10.7 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि अशिक्षित समूह के व प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के कुछ उत्तरदाताओं को छोड़कर सभी उत्तरदाता आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग करते है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 97.6 प्रतिशत उत्तरदाता, पिछड़ीजाति के 93.9 प्रतिशत, अनुसूचितजाति के 86.8 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग न करने वाले उच्चजाति के 2.4 प्रतिशत उत्तरदाता, पिछड़ीजाति के 6.1 प्रतिशत उत्तरदाता एवं अनुसूचितजाति के 13.2 प्रतिशत उत्तरदाता पाये गये हैं। अतः स्पष्ट है कि सर्वाधिक आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग उच्चजाति के उत्तरदाताओं में किया जाता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.26.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-26-1 % lkekftd ifjoR;l ,o vk/kfud oL=k dk ç;kx

lkekftd ifjoR;l	gk	Ukgh	;kx
vk;q			
20–35	123 100.0	–	123 100.0
36–50	47 90.4	5 9.6	52 100.0
51 से ऊपर	40 72.7	15 27.3	55 100.0
f'k{kk			
अशिक्षित	32 78.0	9 22.0	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	92 89.3	11 10.7	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	59 100.0	–	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	27 100.0	–	27 100.0
Tkkfr			
उच्चजाति	41 97.6	1 2.4	42 100.0
पिछड़ीजाति	77 93.9	5 6.1	82 100.0
अनुसूचितजाति	92 86.8	14 13.2	106 100.0
योग	210 91.3	20 8.7	230 100.0

8-27 % VDlh dk ç;kx

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप शादी/विवाह के अवसर पर टैक्सी का प्रयोग करते हैं ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 96.1 प्रतिशत उत्तरदाता शादी/विवाह के अवसर पर टैक्सी का प्रयोग करते हैं। टैक्सी का प्रयोग न करने वालो में 3.9 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि शादी/विवाह के अवसरों पर लगभग सभी उत्तरदाता टैक्सी का प्रयोग करते है। शत्प्रतिशत टैक्सी का प्रयोग आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.27 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-27 % VDlh dk ç;kx

VDlh dk i;kx	vkofRr	ifr'kr
हाँ	221	96.1
नही	9	3.9
योग	230	100.0

8-27-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa VDlh dk ç;kx

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के यहां शादी/विवाह के अवसर पर टैक्सी के प्रयोग पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर आगे सारिणी 8.27.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 100.0 प्रतिशत उत्तरदाता, मध्यम आयु समूह के 96.3 प्रतिशत उत्तरदाता, एवं वृद्ध आयु समूह के 87.3 प्रतिशत उत्तरदाता शादी/विवाह के अवसरों पर टैक्सी का प्रयोग करते हैं। शादी/विवाह के अवसर पर टैक्सी का प्रयोग न करने वाले मध्यम आयु समूह में 3.8 प्रतिशत एव वृद्ध आयु समूह में 12.7 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु समूह के सभी एवं मध्यम व वृद्ध आयु समूह के कुछ उत्तरदाताओं को छोड़कर सभी उत्तरदाता शादी/विवाह के अवसर पर टैक्सी का प्रयोग करते हैं।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित समूह के 85.4 प्रतिशत उत्तरदाता,

प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 97.1 प्रतिशत उत्तरदाता, हाईस्कूल/इण्टमीडिएट शिक्षा समूह के 100.0 प्रतिशत उत्तरदाता एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के 100.0 प्रतिशत उत्तरदाता शादी/विवाह के अवसरों पर टैक्सी का प्रयोग करते हैं। शादी/विवाह के अवसर पर टैक्सी का प्रयोग न करने वाले अशिक्षित समूह के 14.6 प्रतिशत उत्तरदाता एवं प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 2.9 प्रतिशत उत्तरदाता है। अतः स्पष्ट है कि अशिक्षित एवं प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के कुछ उत्तरदाताओं को छोड़कर सभी उत्तरदाता शादी/विवाह के अवसर पर टैक्सी का प्रयोग करते हैं।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 100.0 प्रतिशत उत्तरदाता पिछड़ीजाति के 95.1 प्रतिशत उत्तरदाता एवं अनुसूचितजाति 95.3 प्रतिशत उत्तरदाता शादी/विवाह के अवसर पर टैक्सी का प्रयोग करते है। शादी/विवाह के अवसर पर टैक्सी का प्रयोग न करने वाले पिछड़ीजाति के 4.9 प्रतिशत उत्तरदाता एवं अनुसूचितजाति के 4.7 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि पिछड़ीजाति एवं अनुसूचितजाति के कुछ उत्तरदाताओं को छोड़कर शतप्रतिशत उत्तरदाता टैक्सी का प्रयोग करते हैं। तथ्यों से प्रतीत होता है कि आयु, शिक्षा एवं जाति के आधार पर शादी/विवाह के अवसरों पर लगभग सभी उत्तरदाताओं द्वारा टैक्सी का प्रयोग आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के तीव्र क्रियान्वयन का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 9.50 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

8-28 ½ lLdkjk e nljh tkfr;k dk Hkkx yuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि क्या आपके परिवार में सम्पन्न होने वाले संस्कारों पर दूसरी जातियों के लोग भाग लेते है ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 89.1 प्रतिशत उत्तरदाता के यहां सम्पन्न होने वाले संस्कारों में दूसरी जातियों के लोग भाग लेते हैं तथा 10.9 प्रतिशत उत्तरदाता के यहां सम्पन्न होने वाले संस्कार में दूसरी जातियों के लोग भाग नही लेते हैं। अतः स्पष्ट है कि कुछ उत्तरदाताओं को छोड़कर लगभग सभी उत्तरदाताओं के यहां सम्पन्न होने वाले संस्कारों के अवसर पर दूसरी जातियों के लोग भाग लेते है। लगभग सभी जातियों का एक दूसरे के यहां सम्पन्न होने वाले संस्कारों में भाग लेना आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.28 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-27-1 % lkekftd ifjoR;l ,o VDlh dk ç;kx

lkekftd ifjoR;l	gk¡	Ukgh	;kx
vk;q			
20–35	123 100.0	–	123 100.0
36–50	50 96.3	2 3.8	52 100.0
51 से ऊपर	48 87.3	7 12.7	55 100.0
f'k{kk			
अशिक्षित	35 85.4	6 14.6	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	100 97.1	3 2.9	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	59 100.0	–	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	27 10.0	–	27 100.0
Tkkfr			
उच्चजाति	42 100.0	–	42 100.0
पिछड़ीजाति	78 95.1	4 4.9	82 100.0
अनुसूचितजाति	101 95.3	5 4.7	106 100.0
योग	221 96.1	9 3.9	230 100.0

lkfj.kh 8-28 lLdkjk e n ljh tkfr;k dk Hkkx yuk

Hkkx yuk	vkofRr	ifr'kr
हाँ	205	89.1
नही	25	10.9
योग	230	100.0

8-28-1 % lkekftd ifjoR;l ,o lLdkjk e nljh tkfr;k dk Hkkx yuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के यहां संस्कार में दूसरी जातियों के लोगों के भाग लेने पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.28.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;|

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 93.5 प्रतिशत उत्तरदाता मध्यम आयु समूह के 86.5 प्रतिशत उत्तरदाता एवं वृद्ध आयु समूह के 81.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सम्पन्न होने वाले संस्कारों पर दूसरी जातियों के लोग भाग लेते हैं। परिवार में सम्पन्न होने वाले संस्कारों में भाग न लेने वालों में युवा आयु समूह के 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता, मध्यम आयु समूह के 13.5 प्रतिशत उत्तरदाता एवं वृद्ध आयु समूह के 18.2 प्रतिशत उत्तरदाता पाये गये हैं। अतः स्पष्ट है कि लगभग सभी आयु समूह के उत्तरदाताओं के परिवार में सम्पन्न होने वाले संस्कारों में दूसरी जातियों के लोग भाग लेते हैं।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित समूह के 80.5 प्रतिशत उत्तरदाता, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 89.3 प्रतिशत उत्तरदाता, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के 91.5 प्रतिशत उत्तरदाता, एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के 96.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सम्पन्न होने वाले संस्कारों पर दूसरी जातियों के लोग भाग लेते हैं तथा अशिक्षित समूह के 19.5 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 10.7 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के 8.5 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के 3.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सम्पन्न होने वाले संस्कारों में दूसरी जातियों के लोग भाग नही लेते हैं। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा के बढ़ते क्रमानुसार अधिक शिक्षित उत्तरदाता जातियों के बंधन से मुक्त होते प्रतीत होते हैं।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 73.8 प्रतिशत पिछड़ीजाति के 87.8 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति के 96.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में सम्पन्न होने वाले संस्कारों में दूसरी जातियों के लोग भाग लेते हैं एवं जिन उत्तरदाताओं के परिवार में सम्पन्न होने वाले संस्कारों में दूसरी जाति के लोग भाग नही लेते उनकी मात्रा उच्चजाति के 26.2 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 12.2 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति में 3.8 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि अनुसूचितजाति के उत्तरदाताओं के परिवारों में सम्पन्न होने वाले संस्कारों में सर्वाधिक दूसरी जातियों (उच्चजातियों) के लोग भाग लेते हैं। अनुसूचितजाति के लोगों के परिवारों में

सम्पन्न होने वाले संस्कारों में उच्चजातियों का भाग लेना आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.28.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-28-1 % lkekftd ifjoR;l ,o lLdkj e nlj h tkfr;k dk Hkkx yuk

lkekftd ifjoR;l	gk	ugh	;kx
vk;q			
20–35	115 93.5	8 6.5	123 100.0
36–50	45 86.5	7 13.5	52 100.0
51 से ऊपर	45 81.8	10 18.2	55 100.0
f'k{kk			
अशिक्षित	33 80.5	8 19.5	41 100.0
प्राइमरी/ जूनियर	92 89.3	11 10.7	103 100.0
हाईस्कूल/ इण्टरमीडिएट	54 91.5	5 8.5	59 100.0
स्नातक/ स्नातकोत्तर	26 96.3	1 3.7	27 100.0
Tkkfr			
उच्चजाति	31 73.8	11 26.2	42 100.0
पिछड़ीजाति	72 87.8	10 12.2	82 100.0
अनुसूचितजाति	102 96.2	4 3.8	106 100.0
योग	205 89.1	25 10.9	230 100.0

8-29 % [kku&iku lEcU/kh çfrcU/k

परम्परागत भारतीय समाज में विभिन्न जातियों के मध्य खान–पान और सामाजिक सहवास सम्बन्धी प्रतिबन्ध अत्यन्त जटिल और कठोर रहे है। निम्न जाति के व्यक्ति, उच्चजाति के साथ बैठकर भोजन ग्रहण नही कर सकते थे, परन्तु इस आधुनिक काल में नगरों और

औद्योगिक केन्द्रों में शिक्षा के प्रसार, जनसंख्या की बहुलता, आवासीय परिस्थितियां, होटल, जलपान ग्रह आदि के विकास ने खान–पान सम्बन्धी इन प्रतिबन्धों को शिथिल कर दिया है और विभिन्न जाति समूह तथा सामाजिक स्तर के व्यक्ति एक साथ बैठकर भोजन करने में संकोच नही करते। ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन की इस दिशा का अध्ययन करते हुए पूंछा गया कि क्या जात–पात का भेद–भाव खान–पान में समाप्त किया जाना चाहिए। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन के विदित होता है कि 75.2 प्रतिशत उत्तरदाता खान–पान के भेदभाव को समाप्त करने के समर्थक है, 16.1 प्रतिशत उत्तरदाता इस भेदभाव को समाप्त करना नही चाहते, और 8.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में किसी स्पष्ट मत का उल्लेख नही किया है। अतः दो तिहाई से अधिक उत्तरदाता खान–पान सम्बन्धी भेदभाव को समाप्त करने के पक्षपाती है। तथापि अत्यन्त सीमित मात्रा में परम्परागत रूढ़िवादिता का पाया जाना आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.29 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-29 [kku&iku lEcU/kh çfrcU/k

ifrcU/k	*vkofRr*	*ifr'kr*
हाँ	173	75.2
नही	37	16.1
कह नही सकते	20	8.7
योग	230	100.0

8-29-1 % lkekftd ifjoR;u ,oa [kku&iku lEcU/kh çfrcU/k

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के खान–पान सम्बन्धी प्रतिबन्ध पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.29.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;u

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 81.3 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 73. 1 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह के 63.6 प्रतिशत उत्तरदाता खान–पान सम्बन्धी प्रतिबन्ध को समाप्त करने के पक्ष में हैं। जो उत्तरदाता इस प्रतिबन्ध को बनाए रखने के समर्थक हैं उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 10.6 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 17.3 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 27.3 प्रतिशत पायी गई है। जिन उत्तरदाताओं में खान–पान सम्बन्धी प्रतिबन्ध के विषय में संशय की स्थिति है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 8.1 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 9.6 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 9.1 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु समूह के उत्तरदाता खान–पान के प्रति अत्याधिक उदार दृष्टिकोण रखते हैं।

f'kf{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित समूह के 53.7 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 72.8 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के 86.4 प्रतिशत, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के 92.6 प्रतिशत उत्तरदाता खान–पान सम्बन्धी प्रतिबन्ध समाप्त करने के पक्षधर हैं। जो उत्तरदाता इस प्रतिबन्ध को बनाये रखना चाहते हैं उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 29.3 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 17.5 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट में 10.2 प्रतिशत, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 3.7 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं ने कथन के सन्दर्भ में कोई मत व्यक्त नही किये हैं उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 17.0 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 9.7 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 3.4 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 3.7 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा के बढ़ते हुए क्रमानुसार शिक्षित उत्तरदाताओं में खान–पान सम्बन्धी प्रतिबन्ध को समाप्त करने की अत्याधिक जिज्ञासा एवं उदार मनोवृत्ति प्रतीत होते है।

Tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 50.0 प्रतिशत पिछड़ीजाति के 75.6 प्रतिशत, एवं अनुसूचितजाति के 84.9 प्रतिशत उत्तरदाता खान–पान सम्बन्धी प्रतिबन्ध को समाप्त करने के पक्षधर हैं। कुछ उत्तरदाता ऐसे भी हैं जो यह मानते हैं कि खान–पान सम्बन्धी प्रतिबन्ध रहना चाहिए उनमें उच्चजाति के 21.4 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 17.1 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति के 13.2 प्रतिशत उत्तरदाता पाये गये हैं जो उत्तरदाता जाति पर आधारित खान–पान के प्रतिबन्ध पर संशय की स्थिति में हैं उनमें उच्चजाति के 28.6 प्रतिशत पिछड़ीजाति के 7.3 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति के 1.9 प्रतिशत उत्तरदाता पाये गये हैं। अतः यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि अनुसूचितजाति के उत्तरदाताओं ने अपेक्षाकृत (उच्चजाति) अधिक मात्रा में खान–पान के भेदभाव को समाप्त करने के पक्ष में मत व्यक्त किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस जाति के लोग परम्परागत उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए तथा सामाजिक समता को प्राप्त करने के लिए यह मानते है कि खान–पान सम्बन्धी प्रतिबन्ध समाप्त किया जाना चाहिए। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.29.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-29-1 lkekftd ifjoR;l ,o [kku&iku lEcU/kh çfrcU/k

lkekftd ifjoR;l	gk¡	Ukgh	dg ugh ldrs	;ksx
vk;q				
20–35	100 81.3	13 10.6	10 8.1	123 100.0
35–50	38 73.1	9 17.3	5 9.6	52 100.0
51 से ऊपर	35 63.6	15 27.3	5 9.1	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	22 53.7	12 29.3	7 17.0	41 100.0
प्राइमरी/ जूनियर	75 72.8	18 17.5	10 9.7	103 100.0
हाईस्कूल/ इण्टरमीडिएट	51 86.4	6 10.2	2 3.4	59 100.0
स्नातक/ स्नातकोत्तर	25 92.6	1 3.7	1 3.7	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	21 50.0	9 21.4	12 28.6	42 100.0
पिछड़ीजाति	62 75.6	14 17.1	6 7.3	82 100.0
अनुसूचितजाति	90 84.9	14 13.2	2 1.9	106 100.0
योग	173 75.2	37 16.1	20 8.7	230 100.0

8-30 % uxjh; fuokl ,o tkfrxr HksnHkko esa deh

आधुनिक नगरीय एवं औद्योगिक समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता जाति–पाति के बन्धन का शिथिल होना है। नगरों में जनसंख्या की अधिकता जनसंख्या का स्थानान्तरण, आवासीय कठिनाई, रोजगार केन्द्रों और नगरीय संस्थाओं जैसे होटल, सिनेमा, क्लब, शिक्षण

संस्था इत्यादि में विभिन्न जाति धर्म और समूह के व्यक्तियों की एक साथ उपस्थिति के कारण जातिगत भेदभाव की भावना नगर में निरन्तर शिथिल होती जा रही है। ग्रामीण समुदाय के सदस्य भी नौकरी और रोजगार की तलाश में नगरों में स्थापित औद्योगिक केन्द्रों में जा रहे है। अतः जातिगत भेद–भाव की शिथिलता से परिचित होना उनके लिए स्वाभाविक है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करते हुए उनसे पूंछा गया कि क्या नगर में रोजगार और आवास के कारण जातिगत भेदभाव शिथिल होते जा रहे हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 70.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन का समर्थन किया है कि रोजगार और निवास एवं आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण के कारण नगरों में जाति–पाति का भेदभाव कम होता जा रहा है। 18.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कथन का अनुमोदन नही किया है एवं 10.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.30 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh % 8-30 % uxjh; fuokl ,o tkfrxr HkknHkko e deh

dFku	*vkofRr*	*ifr'kr*
हाँ	162	70.4
नही	43	18.7
कह नही सकते	25	10.9
योग	230	100.0

8-30-1 % lkekftd ifjoR;l ,o uxjh; fuokl ,o tkfrxr HkknHkko e deh

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के जातिगत भेदभाव में कमी पर उनके सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए सम्बन्धित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.30. 1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 78.9 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 65. 4 प्रतिशत और वृद्ध आयु समूह के 56.4 प्रतिशत उत्तरदाता यह महसूस करते है कि नगरों में रोजगार और निवास के कारण जाति–पाति का भेदभाव कम हो गया है जो उत्तरदाता इस कथन का समर्थन नही करते हैं उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 16.3 प्रतिशत एवं मध्यम आयु समूह में 19.2 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 23.6 प्रतिशत पायी गयी है। जो उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में संशय की स्थिति वाले है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 4.8 प्रतिशत मध्यम आयु समूह में 15.4 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 20.0 प्रतिशत पायी गयी है अतः स्पष्ट है कि वृद्ध आयु समूह एवं मध्यम आयु समूह के उत्तरदाताओं की तुलना में युवा आयु

समूह के उत्तरदाता अपेक्षाकृत नगरीयकरण से उत्पन्न परिवर्तनों के प्रति विशेष रूप से परिचित हैं।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित समूह के 53.7 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 63.1 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के 84.7 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के 92.6 प्रतिशत उत्तरदाता यह अनुभव करते हैं कि नगरों में रोजगार और निवास के कारण जाति–पाति (जातिगत) भेदभाव कम हो गया है। जो उत्तरदाता इस कथन का समर्थन नही करते है उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 36.6 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 24.3 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 5.1 प्रतिशत पायी गयी है। कथन के सम्बन्ध में जिन उत्तरदाताओं ने कोई मत व्यक्त नही किया है उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 9.7 प्रतिशत प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 12.6 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 10.2 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 7.4 प्रतिशत पायी गयी है। अतःस्पष्ट है कि शिक्षा के बढ़ते क्रमानुसार शिक्षित समूह के उत्तरदाता नगरों में जातिगत भेदभाव की शिथिलता के अनुमोदक हैं। शिक्षित समूह के लोगों का नगरों में जातिगत भेदभाव की शिथिलता का अनुमोदन करना आधुनिक परम्पराओं को आत्मसातीकरण का द्योतक है।

Tkkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 83.3 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 75.6 प्रतिशत, अनुसूचितजाति के 61.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह मत व्यक्त किया है कि नगर में रोजगार और निवास के कारण (जातिगत) जाति–पाति के भेदभाव कम होता जा रहा है। जो उत्तरदाता इस विचार का समर्थन नही करते उनकी मात्रा उच्चजाति में 11.9 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 15.9 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति में 23.6 प्रतिशत पायी गयी है। जो उत्तरदाता इस कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये है उनकी मात्रा उच्चजाति में 4.8 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 8.5 प्रतिशत, एवं अनुसूचितजाति में 15.1 प्रतिशत पायी गयी है।

अतः स्पष्ट है कि उच्चजाति के उत्तरदाता अपेक्षाकृत (पिछड़ीजाति व अनुसूचितजाति के) अधिक मात्रा में इस तथ्य से सहमत हैं नगरीय आवास एवं रोजगार की प्रक्रिया ने जाति–पाति के बन्धन को शिथिल करने में विशेष योगदान दिया है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.30.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-30-1 % lkekftd ifjoR;l ,o uxjh; fuokl ,o tkfrxr HkknHkko e deh

lkekftd ifjoR;l	gk	Ukgh	dg ugh ldrs	;ksx
vk;q				
20–35	97 78.9	20 16.3	6 4.8	123 100.0
36–50	34 65.4	10 19.2	8 15.4	52 100.0
51 से ऊपर	31 56.4	13 23.6	11 20.0	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	22 53.7	15 36.6	4 9.7	41 100.0
प्राइमरी/ जूनियर	65 63.1	25 24.3	13 12.6	103 100.0
हाईस्कूल/ इण्टरमीडिएट	50 84.7	3 5.1	6 10.2	59 100.0
स्नातक/ स्नातकोत्तर	25 92.6	–	2 7.4	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	35 83.3	5 11.9	2 4.8	42 100.0
पिछड़ीजाति	62 75.6	13 15.9	7 8.5	82 100.0
अनुसूचितजाति	65 61.3	25 23.6	16 15.1	106 100.0
योग	162 70.4	43 18.7	25 10.9	230 100.0

8-31 % f’k{kk vkSj vU/kfo’okl dk fuokj.k

इस आधुनिक काल की औपचारिक शिक्षा की एक महत्वपूर्ण विशेषता, तार्किकता और व्यवहारिकता को प्रोत्साहन देना है। अतः यह शिक्षा व्यवस्था अन्धविश्वास और संकीर्णता की

विरोधी है तथा इसको दूर करने में सहायक है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि क्या शिक्षा के प्रसार के कारण अन्धविश्वास और संकीर्णता में कमी आ रही है ? तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 80.4 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि शिक्षा के प्रसार के कारण अन्धविश्वास और सकीर्णता कम हो रही है 11.8 प्रतिशत उत्तरदाता इस मत के समर्थक नही है तथा 7.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में किसी स्पष्ट मत को व्यक्त नही किया है। अतः यह स्पष्ट है कि तीन चौथाई से अधिक उत्तरदाता यह मानते हैं कि शिक्षा के प्रसार के कारण अन्धविश्वास और संकीर्णता कम रही है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.31 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-31 % f'k{kk vkj vU/kfo'okl dk fuokj.k

dFku	*vkofRr*	*ifr'kr*
हाँ	185	80.4
नही	27	11.8
कह नही सकते	18	7.8
योग	230	100.0

8-31-1 % lkekftd ifjoR;u ,oa f'k{kk vkj vU/kfo'okl dk fuokj.k

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा द्वारा अन्धविश्वास का निवारण पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.31.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;u

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 89.4 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 80. 8 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह के 60.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस मत का समर्थन किया है कि शिक्षा के प्रसार के कारण अन्धविश्वास और संकीर्णता में कमी आयी है। जो उत्तरदाता इस कथन का समर्थन नही करते है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 5.7 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 11.5 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह में 25.5 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं ने कथन के सम्बन्ध ने कोई मत व्यक्त नही किया है। उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 4.9 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 7.7 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 14.5 प्रतिशत है अतः स्पष्ट है कि वृद्ध आयु समूह की तुलना में युवा आयु समूह एवं मध्यम आयु समूह के उत्तरदाता इस कथन से अपेक्षाकृत अधिक समर्थक है। जो कि उदीयमान नवीन परिवर्तन का द्योतक है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित समूह के 65.9 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 78.6 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के 88.1 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के 92.6 प्रतिशत, उत्तरदाता इस कथन में विश्वासवान है कि शिक्षा के प्रसार से अन्धविश्वास और संकीर्णता में कमी आयी है। जो उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में विश्वास नही करते उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 24.4 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 14.6 प्रतिशत एवं हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 3.4 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं ने कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 9.7 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 6.8 प्रतिशत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 8.5 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 7.4 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पषट है कि शिक्षा के बढ़ते क्रमानुसार शिक्षित उत्तरदाताओं ने अशिक्षित उत्तरदाताओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में अन्धविश्वास और संकीर्णता का निवारण शिक्षा के योगदान का समर्थन किया है जो कि आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण का द्योतक है।

Tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 90.4 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 82.9 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति के 74.5 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि शिक्षा के प्रसार के कारण अन्धविश्वास और संकीर्णता में कमी आयी है। जो उत्तरदाता यह नही मानते हैं कि शिक्षा के प्रसार के कारण अन्धविश्वास और संकीर्णता में कमी आयी है। उनकी मात्रा उच्चजाति के उत्तरदाताओं में 4.8 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 11.0 प्रतिशत ने एवं अनुसूचितजाति में 15.1 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं ने कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है उनकी मात्रा उच्चजाति में 4.8 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 6.1 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति में 10. 4 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है की उच्चजाति के उत्तरदाता अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में इस कथन के समर्थक हैं लेकिन यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति के उत्तरदाता भी इस कथन के अनुमोदक हैं तथा लगभग तीनो जाति वर्गो का कथन के सम्बन्ध में समर्थन आधुनिक परम्पराओं का आत्मसातीकरण है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.31.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-31-1 % f'k{kk vkj vU; fo'okl dk fuokj.k

lkekftd ifjoR;	*lger*	*vlger*	*dg ugh ldr*	*;kx*
vk;				
20–35	110 89.4	7 5.7	6 4.9	123 100.0
36–50	42 80.8	6 11.5	4 7.7	52 100.0
51 से ऊपर	33 60.0	14 25.5	8 14.5	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	27 65.9	10 24.4	4 9.7	41 100.0
प्राइमरी/ जूनियर	81 78.6	15 14.6	7 6.8	103 100.0
हाईस्कूल/ इण्टरमीडिएट	52 88.1	2 3.4	5 8.5	59 100.0
स्नातक/ स्नातकोत्तर	25 92.6	—	2 7.4	27 100.0
Tkfr				
उच्चजाति	38 90.4	2 4.8	2 4.8	42 100.0
पिछड़ीजाति	68 82.9	9 11.0	5 6.1	82 100.0
अनुसूचितजाति	79 74.5	16 15.1	11 10.4	106 100.0
योग	185 80.4	27 11.8	18 7.8	230 100.0

[k.M l& lkL—frd eY;k dk çfreku

परम्परागत भारतीय समाजों द्वारा अपनी आने वाली पीढ़ी को अपनी संस्कृति अर्थात रहन–सहन और खान–पान की विधियों, व्यवहार, प्रतिमानों, रीति–रिवाजों, कला–कौशल एवं संगीत–नृत्य में प्रशिक्षित करके और उन्हे अपने भाषा साहित्य तथा धर्मदर्शन का ज्ञान कराके तद्नुकूल आचरण करने की ओर प्रोत्साहित किया जाता रहा है। परन्तु यह कार्य तब तक पूरा नही होगा जब तक आने वाली पीढ़ी को इसके पीछे छिपे आदर्श, विश्वास और सिद्धान्तों से परिचित नही काराया जाता। लोकतन्त्रीय भारत में तो अपने समाज की संस्कृति को ग्रहण करने के साथ–साथ दूसरे समाजों की संस्कृतियों के सामान्य तत्वों की जानकारी और उनके

प्रति आदर भाव के विकास पर भी बल दिया जाता रहा है। परन्तु आज उदीयमान नवीन परिवर्तन के इस युग में सामाजिक परिवर्तन के कारकों (पश्चिमीकरण, नगरीकरण, संस्कृतिकरण, औद्योगिकीकरण, आधुनिकीकरण ने परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिमानों के स्वरूप को परिवर्तित किया है अव तकनीकी के इस युग में परम्परागत जीवन पद्धति, संस्कृतियों के पीढी दर पीढ़ी हस्तान्तरण को प्रभावित किया है तथा अब नवीन पीढ़ी परम्परागत रीति–रिवाजों कर्मकाण्डों व परम्परागत जीवन शैली का आत्मसातीकरण न करने पाश्चात्य आधुनिक नवीन रीति–रिवाजों कर्मकाण्डों व नवीन पाश्चात्य शैली का आत्मसातीकरण कर रहे हैं। वर्तमान खण्ड में यह देखने का प्रयास किया गया है कि ग्रामीण समुदायों के सदस्यों में सांस्कृतिक प्रतिमानों के क्या मूल्य हैं तथा सांस्कृतिक मूल्य किस मात्रा में परिवर्तन हुए है।

8-32 % xko e vk;kftr ukVd@ukVdh dk n[kuk

मुख्यतः ग्रामीण समुदायों में वर्ष में दो बार (रबी व खरीफ) फसलों के कटने के बाद ही उत्सवों के आयोजन होते है। गांवों में ग्रामीण देवी देवताओं के स्थलों पर वर्ष में एक या दो बार तथा विशेष पर्वों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों नाटक, नौटंकी तथा स्थानीय मेलों का आयोजन होता है तथा ग्रामीण लोग वैवाहिक कार्यक्रम व मुण्डन संस्कार, देवाई इत्यादि कार्यक्रमों के आयोजनों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम नाटक/नौटंकी इत्यादि का आयोजन करवाते हैं। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप गांवों में आयोजित नाटक/नौटंकी को देखने जाते है। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 60.9 प्रतिशत उत्तरदाता गांव में आयोजित नाटक, नौटंकी देखने जाते हैं तथा 30.0 प्रतिशत उत्तरदाता गांव में आयोजित नाटक नौटंकी नही देखते है। केवल 9.1 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सन्दर्भ में कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। अतः उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि आधे से अधिक उत्तरदाता सांस्कृतिक कार्यक्रमों (नाटक/नौटंकी) को देखने में रूचि रखते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.32 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-32 xko e vk;kftr ukVd@ukVdh dk n[kuk

dFku	vkofRr	ifr'kr
हाँ	140	60.9
नही	69	30.0
कह नही सकते	21	9.1
योग	230	100.0

8-32-1 % lkekftd ifjoR; ,o xko e vk;kftr ukVd@ukVdh dk n[kuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के गांवों में आयोजित नाटक/नौटंकी को देखे जाने पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.32.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 71.6 प्रतिशत उत्तरदाता, मध्यम आयु समूह के 57.7 प्रतिशत उत्तरदाता एंव वृद्ध आयु समूह के 40.0 प्रतिशत उत्तरदाता गांव में आयोजित नाटक, नौटंकी को देखते है जिन उत्तरदाताओं के द्वारा गांवों में आयोजित नाटक/नौटंकी को नही देखा जाता है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 20.3 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 30.8 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 50.9 प्रतिशत है। जिन उत्तरदाताओं ने कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया है उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 8.1 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 11.5 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 9.1 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि वृद्ध आयु समूह को तुलना में युवा आयु समूह एवं मध्यम आयु समूह के उत्तरदाताओं के द्वारा गांवों में आयोजित नाटक/नौटंकी को विशेषकर देखा जाना एवं ग्रामीण समुदाय के लोगो के द्वारा नाटक, नौटंकी का देखा जाना सांस्कृतिक मूल्यों को प्रदर्शित करता है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित समूह के 75.6 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह के 69.9 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह के 47.5 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के 33.3 प्रतिशत उत्तरदाता गावों में आयोजित नाटक/नौटंकी को देखने में रूचि रखते हैं। जो उत्तरदाता गांवों में आयोजित नाटक/नौटंकी को नही देखते हैं उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 17.1 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 18.4 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 42.4 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 66.7 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं ने कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये है उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 7.3 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 11.7 प्रतिशत एवं हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 10.1 प्रतिशत पायी है। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा के बढ़ते हुए क्रम में अधिक शिक्षित व्यक्ति गांव में आयोजित नाटक/नौटंकी देखने में कम शिक्षित व्यक्ति या अशिक्षित समूह की तुलना में बहुत कम रूचि रखते हैं जो कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है।

Tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 42.9 प्रतिशत, पिछड़ीजाति के 54.9 प्रतिशत, अनुसूचितजाति के 72.6 प्रतिशत उत्तरादाता गांवों में आयोजित नाटक/नौटंकी को देखने में रूचि रखते हैं जो उत्तरदाता गांवों में आयोजित नाटंक/नौटंकी को नही देखते, उनकी मात्रा उच्चजाति में 52.3 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 29.2 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति में 21.7 प्रतिशत

पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं के कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किया उनकी मात्रा उच्चजाति में 4.8 प्रतिशत पिछड़ीजाति में 15.9 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति में 5.7 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि उच्चजाति की तुलना में क्रमशः अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति के उत्तरदाता अधिकांशतः गांवों में आयोजित नाटक, नौटंकी को देखते है। उच्चजाति के नाटक/नौटंकी देखनें में कम रूचि आधुनिक परिवर्तन को प्रदर्शित करती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.32.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-32-1 % lkekftd ifjoR;l ,o xkok e vk;kftr ukVd@ukVdh dk n[kuk

lkekftd ifjoR;l	gk	Ukgh	dg ugh ldr	;kx
vk;q				
20–35	88 71.6	25 20.3	10 8.1	123 100.0
36–50	30 57.7	16 30.8	6 11.5	52 100.0
51 से ऊपर	22 40.0	28 50.9	5 9.1	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	31 75.6	7 17.1	3 7.3	41 100.0
प्राइमरी/ जूनियर	72 69.9	19 18.4	12 11.7	103 100.0
हाईस्कूल/ इण्टरमीडिएट	28 47.5	25 42.4	6 10.1	59 100.0
स्नातक/ स्नातकोत्तर	9 33.3	18 66.7	–	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	18 42.9	22 52.3	2 4.8	42 100.0
पिछड़ीजाति	45 54.9	24 29.2	13 15.9	82 100.0
अनुसूचितजाति	77 72.6	23 21.7	6 5.7	106 100.0
योग	140 60.9	69 30.0	21 9.1	230 100.0

8-33 % jkeyhyk n[kus esa :fp

हिन्दूस्तान के लगभग प्रत्येक हिन्दू नागरिक के हृदय में एक विचारधारा विद्यमान होती है। हिन्दू–हिन्दी–हिन्दुस्तान जहां के निवासी उस अलौकिक दिव्य शक्ति में विश्वास करते है तथा यह मानते है की इस धरती पर जब जब धर्म पर अधर्म, अच्छाई पर बुराई हावी हुई तब–तब उस तीसरी अलौकिक शक्ति के स्वामी ने राम, कृष्ण इत्यादि के रूप में इस धरा पर अवतार लेकर अधर्म व बुराई का अन्त किया और मानव को सद्भाव व जीवन की एक दिशा दिखाकर अपने धाम बैकुण्ठ चले गये। इन अवतारों की लीला हर वर्ष इन अवतारों के जन्मोत्सव पर या राष्ट्रीय पर्वों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के रूप में रामलीला, कृष्णलीला इत्यादि का आयोजन होता है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया की आप रामलीला देखनें में रूचि रखते हैं ? प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 65.2 प्रतिशत उत्तरदाता रामलीला देखने में रूचि रखते हैं तथा 34.8 प्रतिशत उत्तरदाता रामलीला देखनें में रूचि नही रखते हैं। अतः स्पष्ट है कि आधे से अधिक उत्तरदाता रामलीला देखनें में रूचि रखते है। अत्याधिक रामलीला देखने में रूचि, धार्मिक एकरूपता को प्रदर्शित करता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.33 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-33 jkeyhyk n[kus esa :fp

dFku	*vko`fRr*	*izfr'kr*
हाँ	150	65.2
नही	80	34.8
योग	230	100.0

8-34 % yksd uR; n[kuk ¼fojgk] dtjh o vU; uR;½

ग्रामीण समुदायों में नृत्य देखने का प्रचलन प्राचीन काल से चला आ रहा है बड़े–बड़े जमींदार, पट्टीदार, विशेष पर्वों पर व वैवाहिक या अन्य कार्यक्रमों पर वैश्याओं व नृतिकियों से (नाचने वाली पेशेवर औरते) नृत्य कराया करते थे जिससे उनका समय–समय पर मनोरंजन हुआ करता था लेकिन आज के इस आधुनिक युग में नृत्य के पुराने तरीकों में अत्याधिक परिवर्तन हुआ है, नृत्य का स्वरूप ही बदल गया है। अब हर समूह का व्यक्ति नृत्य करता है न कोई छोटा न कोई बड़ा। लोक नृत्य द्वारा नृत्य करने वाला किसी घटना व सीख का संदेश बिना बोले अपनी शारीरिक अभिवृत्ति से प्रकट करता है। जिससे ग्रामीण व नगरीय लोगो का मनोरंजन भी होता है और मूक अभिवृत्ति से घटना व विशेष सीख को व्यक्ति आसानी से समझ लेता है। लोक नृत्य विरहा, कजरी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के विशेष अंग है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया की आप लोक नृत्य देखना पसन्द करते है। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 72.2 प्रतिशत उत्तरदाता लोक नृत्य

(विरहा, कजरी, अन्य) टेलीविजन पर व अन्य किसी माध्यम से देखना पसन्द करते है। 21.3 प्रतिशत लोक नृत्य (विरहा, कजरी, अन्य नृत्य) नही देखते हैं। केवल 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता कथन के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही कर सके हैं। अतः स्पष्ट है आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने लोक नृत्य को प्रोत्साहित किया जिसके कारण टेलीविजन व किसी अन्य माध्यम से दो तिहाई से अधिक उत्तरदाता लोक नृत्य (विरहा, कजरी, अन्य नृत्य) देखते हैं। टेलीविजन के माध्यम से लोकनृत्य देखना सांस्कृतिक परम्परा का जीवान्त होना व नवीन परिवर्तन का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.34 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-34 yksdu`R; n[kuk ¼fojgk] dtjh] vU; u`R;½

dFku	*vkofRr*	*ifr'kr*
हाँ	166	72.2
नही	49	21.3
कह नही सकते	15	6.5
योग	230	100.0

8-35 % R;kgkjksa o iokZ ij LFkkuh; nsoLFkkuksa ij vk;ksftr esyksa esa tkuk

हमारे देश के लगभग सभी ग्रामीण क्षेत्रों व दस बीस गांवों के बीच किसी न किसी देवी–देवता, पीर, फकीर, (दरगाह) बरमबाबा सतीमाता व अन्य देवी–देवताओं की प्राचीन कथा रही है जिसके तहत वह देवी–देवता उस क्षेत्र की समृद्धि के लिए प्रसिद्ध थे। उस प्रसिद्धि के तहत समय–समय पर वर्ष में कई बार उन के स्थानों पर उत्सव सांस्कृतिक कार्यक्रम व मेलों का आयोजन हुआ करता आया है। मेलों के लगने से मेलों में खेल, तमाशा, कुश्ती, कलावाजी व अन्य कार्यक्रमों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों से ग्रामीण लोगों का मनोरंजन व ज्ञानार्जन भी हुआ करता था। दूसरी तरफ लोग विशेष त्यौहारों व पर्वो पर देवी–देवताओं के दर्शन करके अपनी समृद्धि के लिए आराधना भी कर लेते थे। मेलें में दैनिक उपयोग व खाद्य सामग्री की दुकानें होने से बच्चे, बूढ़े व हर उम्र के लोग आनन्दित हुआ करते थे। स्थानीय देवी–देवताओं के पर्वों व त्यौहारों पर मेलों के आयोजनों से सामुदायिक एकरूपता तथा सामाजिक सुदृढ़ता और सामंजस्य को भी बल मिलता था। परन्तु आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने इस युग में नवीन परिवर्तन उत्पन्न कर दिया है, स्थानीय देवी–देवताओं के स्थानों पर मेलों की महत्ता को कम कर दिया, मनोरंजन व ज्ञानार्जन के नवीन साधनों (टेलीविजन, मोबाइल, इन्टरनेट, कम्प्यूटर इत्यादि) ने मेलों में आयोजित खेल तमाशा व अन्य कार्यक्रमों की महत्ता को कम कर दिया है। गांव व शहर के बीच की दूरी यातायात के नवीन साधनों व आधुनिक तकनीकी से युक्त सम्पर्क मार्गों के निर्मित हो जाने से दूरी बहुत कम हो गयी है। व्यक्तियों के मस्तिष्क में परिवर्तन की प्रक्रिया का एक कण नवीनता समाहित हो जाने से हर व्यक्ति सामान्य वस्तु की ओर देखना पसन्द नही करता हर व्यक्ति ब्रान्डेड वस्तु का उपयोग करना चाहता है।

नवीन परिवर्तन से जुड़ना चाहता है इन सब तथ्यों ने स्थानीय मेलों की महत्ता को कम कर दिया है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि त्यौहारों व पर्वों पर स्थानीय देवस्थानों पर आयोजित मेलों में जाते हैं। 47.4 प्रतिशत उत्तरदाता त्यौहारों व पर्वों पर स्थानीय देवस्थानों पर आयोजित मेलों में प्रायः जाते हैं। 34.8 प्रतिशत उत्तरदाता त्यौहारों व पर्वों पर स्थानीय देवस्थानों पर आयोजित मेलों में कभी–कभी जाते हैं केवल 17.8 प्रतिशत उत्तरदाता त्यौहारों व पर्वों पर स्थानीय देवस्थानों पर आयोजित मेलों में दो चार वर्ष में एकाध बार जाते है। अतः स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से उत्पन्न संचार क्रान्ति (मोबाइल, इन्टरनेट, कम्प्यूटर केविल नेटवर्क, टेलीविजन इत्यादि) तथा परिवर्तन ने नवीन पथ ने मेला मदारों में खेल, तमाशा व अन्य कार्यक्रमों में रूचि को कम कर दिया है मेलों में जाने के प्रति कम रूचि आधुनिक परम्परा के आत्मसातीकरण का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.35 क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-35 % R;kgkjksa o iokZ ij LFkkuh; nsoLFkkuksa ij vk;kftr esyksa esa tkuk

dFku	*vkofRr*	*ifr'kr*
प्रायः	109	47.4
कभी–कभी	80	34.8
दो चार साल में एकाधबार	41	17.8
योग	230	100.0

8-36 % yksdxhr ¼vkYgk] <ksyk bR;kfn½ jfM;ks ;k ekckby dh ek/;e ls lquuk

परम्परागत भारतीय ग्रामीण समाजों के सभी वर्गों के लोग महापुरूषों की तथा वीर पुरूषों की व अन्य गाथाएं, किस्से, कहानियां पढ़कर या सुनकर के ज्ञानार्जित होते थे और मनोरंजित भी होते थे। धीरे–धीरे परिवर्तन हुआ रेडियों (श्रव्य सामग्री) प्रचलन में आया। रेडियो के प्रचलन में आने से लोकगीत, कृषि सम्बन्धी कार्यक्रम व सांस्कृतिक कार्यक्रम ढ़ोला आल्हा का प्रसारण होने लगा तथा ग्रामीण लोग रेडियो के माध्यम से समस्त कार्यक्रमों को समय के अनुसार सुनते थे और आनन्दित हुआ करते थे। लेकिन आज परिवर्तन के इस नवीन युग में पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, मशीनीकरण, यन्त्रीकरण सूचना प्रौद्योगिकी एवं सूचना व संचार की वृहद व्यवस्थाओं ने लोक–गीत, आल्हा, ढ़ोला व अन्य प्रसारित कार्यक्रमों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के स्वरूप को बदल दिया है। अब ग्रामीण लोग मोबाइल फोन पर, टेलीविजन पर, डिश–टीवी के माध्यम से, कम्प्यूटर के माध्यम से फिल्म व फिल्मी गीत और रीमेक्स गीत, आधुनिक तकनीकी से युक्त लोकगीत व आल्हा ढ़ोला को आधुनिक यन्त्रों के माध्यम से सुनते व देखते हैं।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया की आप लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से सुनते हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित

होता है कि 38.3 प्रतिशत उत्तरदाता प्रायः 17.8 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला, इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से सुनते हैं तथा 43.9 प्रतिशत उत्तरदाता लोकगीत (आल्हा ढ़ोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से नही सुनते हैं। अतः स्पष्ट है कि लोकगीत (आल्हा ढ़ोला) सुनने की कम प्रवृत्ति आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण को प्रकट करती है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.36 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-36 % yksdxhr ¼vkYgk] <ksyk bR;kfn½ jsfM;ks ;k eksckby ds ek/;e ls lquuk

dFku	*vko`fRr*	*izfr'kr*
प्रायः	88	38.3
कभी–कभी	41	17.8
कभी नही सुनते	101	43.9
योग	230	100.0

8-36-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa yksdxhr ¼vkYgk] <ksyk bR;kfn½ jsfM;ks ;k eksckby ds ek/;e ls lquuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के द्वारा लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से सुनने पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 8.36.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता मध्यम आयु समूह के 67.3 प्रतिशत उत्तरदाता एवं वृद्ध आयु समूह के 80.0 प्रतिशत उत्तरदाता लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से प्रायः सुनते हैं। वे उत्तरदाता जो लोक गीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से कभी–कभी सुनते हैं उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 20.3 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 21.2 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 9.1 प्रतिशत पायी गयी है। जिन उत्तरदाताओं में लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला, इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से सुनने की प्रवृत्ति नही पायी गयी उनकी मात्रा युवा आयु समूह में 72.4 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह में 11.5 प्रतिशत एवं वृद्ध आयु समूह में 10.9 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं की तुलना में वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाता सर्वाधिक लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) सुनते है। युवा समूह के उत्तरदाताओं की लोकगीत सुनने में बहुत कम रूचि उदीयमान नवीन परिवर्तन को दर्शाती है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि प्रायः लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से सुनने वाले उत्तरदाता अशिक्षित समूह में 68.3 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 51.5 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 11.9 प्रतिशत है। वे उत्तरदाता जोकि कभी–कभी लोकगीत (आल्हा, ढोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से सुनते हैं उनकी मात्रा अशिक्षित समूह में 31.7 प्रतिशत, प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 14.6 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 16.9 प्रतिशत, एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 11.1 प्रतिशत पायी गयी है तथा वे उत्तरदाता जो कि लोकगीत (आल्हा ढोला इत्यादि) रेडियो, मोबाइल के माध्यम से नही सुनते हैं उनकी मात्रा प्राइमरी/जूनियर शिक्षा समूह में 33. 9 प्रतिशत, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा समूह में 71.2 प्रतिशत एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह में 88.9 प्रतिशत पायी गयी है। उपर्युक्त विश्लेषित तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि शिक्षा के बढ़ते क्रम में अधिक शिक्षित व्यक्ति लोकगीत व (आल्हा, ढोला इत्यादि) सुनने में रूचि नही रखते हैं। अशिक्षित समूह के उत्तरदाताओं द्वारा प्रायः आल्हा ढोला सुना जाता है। जबकि स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के उत्तरदाता प्रायः लोकगीत नही सुनते हैं। अशिक्षितों द्वारा लोकगीत प्रायः सुनाना व स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के उत्तरदाताओं के द्वारा प्रायः लोकगीत नही सुनना आधुनिक परिवर्तन को प्रकट करता है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि वे उत्तरदाता जो प्रायः लोकगीत (आल्हा, ढोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से सुनते हैं उनकी मात्रा पिछड़ीजाति में 34.1 प्रतिशत, व अनुसूचितजाति में 56.6 प्रतिशत पायी गयी है। जो उत्तरदाता कभी–कभी लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) रोडियों या मोबाइल के माध्यम से सुनते है उनकी मात्रा उच्चजाति में 4.8 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 11.0 प्रतिशत तथा अनुसूचितजाति में 28.3 प्रतिशत पायी गयी है। वे उत्तरदाता जो कि लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से नही सुनते है। उनकी मात्रा उच्चजाति में 95.2 प्रतिशत, पिछड़ीजाति में 54.9 प्रतिशत एवं अनुसूचितजाति में 15.1 प्रतिशत पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि उच्चजाति के उत्तरदाताओं का लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला आदि) न सुनना यह दर्शाता है कि ग्रामीण समुदायों में भी आधुनिक परिवर्तनों का प्रभाव पड़ रहा है और परिवर्तन की नवीन प्रक्रियाओं का लोग आत्मसातीकरण कर रहे हैं। उपर्युक्त तथ्यों को क्रमबद्ध सारिणी 8.36.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-36-1 % lkekftd ifjoR;l ,o ykdxhr ¼vkYgk] <kyk bR;kfn½ jfM;k ;k ekckby d ek/;e l lquuk

lkekftd ifjoR;l	gk	ugh	dg ugh ldr	;kx
vk;q				
20—35	9 7.3	25 20.3	89 72.4	123 100.0
36—50	35 67.3	11 21.2	6 11.5	52 100.0
51 से ऊपर	44 80.0	5 9.1	6 10.9	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	28 68.3	13 31.7	—	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	53 51.5	15 14.6	35 33.9	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	7 11.9	10 16.9	42 71.2	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	—	3 11.1	24 88.9	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	—	2 4.8	40 95.2	42 100.0
पिछड़ीजाति	28 34.1	9 11.0	45 54.9	82 100.0
अनुसूचितजाति	60 56.6	30 28.3	16 15.1	106 100.0
योग	88 38.3	41 17.8	101 43.9	230 100.0

8-37 % jkl yhyk n[ku e: fp

परम्परागत भारतीय हिन्दू समाज धार्मिक एकरूपता के लिए प्रसिद्ध रहा है। तथा धर्म को प्रत्येक क्षेत्र में महत्ता प्राप्त रही है। वही दूसरी ओर ग्रामीण व नगरीय समुदायों के लोग धार्मिक प्रवृत्ति से युक्त भक्ति कर्म के द्वारा ईश्वर के स्वरूप को समझने का प्रयास करते रहे हैं। गांव व नगरों में वार्षिकोत्सव पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के रूप में आयोजित ईश्वर की लीला, रामलीला, कृष्ण जी की रासलीला को देखकर ईश्वर के गुणों को अपने अन्दर अवतरित कर अपने जीवन को आनन्दित करने का प्रयत्न करते रहे हैं। परन्तु आज के इस परिवर्तन के इस युग ने इन सभी मान्यताओं के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है।

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप रासलीला देखते हैं। प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से विदित होता है कि 40.4 प्रतिशत उत्तरदाता प्रायः रासलीला देखते हैं, 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी रासलीला देखते हैं तथा 44.4 प्रतिशत उत्तरदाता रासलीला नही देखते हैं। अतः स्पष्ट है कि आधे से कम उत्तरदाता रासलीला देखने में रूचि रखते हैं। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि रासलीला प्रायः देखने वाले उत्तरदाता अपेक्षाकृत रासलीला नही देखने वाले उत्तरदाताओं से कम हैं। कम लोगों के द्वारा रासलीला का देखा जाना आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण का द्योतक है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 8.37 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 8-37 jkl yhyk n[ku e: fp

dFku	vkofRr	ifr'kr
प्रायः	93	40.4
कभी–कभी	35	15.2
कभी नही देखते	102	44.4
योग	230	100.0

Lkkjk'k

वर्तमान अध्ययन में परम्परागत ग्रामीण जीवन के सांस्कृतिक मूल्यों एवं धार्मिक क्रियाओं की सामान्य विशेषताओं और उनमें होने वाले परिवर्तन की वृहद विवेचना की गई है। प्रथम खण्ड में धार्मिक प्रक्रियाओं की वृहद और लघु परम्पराओं में अन्तःक्रिया के पारस्परिक सम्बन्धों की विवेचना की गई है। वृहद हिन्दू संस्कृति और हिन्दू जीवन दर्शन की सामान्य विशेषताएं ग्रामीण जीवन में भलीभांति देखने को मिलती है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता ईश्वर और भगवान के अस्तित्व में (लगभग कुछ प्रतिशत उत्तरदाताओं को छोड़कर 13.5) विश्वास करते हैं। जिसमें युवा आयु समूह की तुलना में अपेक्षाकृत वृद्ध आयु समूह के (94.5 प्रतिशत) उत्तरदाता भगवान के अस्तित्व में अधिक विश्वासवान है। शिक्षा और जातिगत तथ्यों के तहत हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट प्राप्त उत्तरदाता (88.1 प्रतिशत) एवं उच्चजाति के (95.2 प्रतिशत)

उत्तरदाता अधिक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वासवान हैं। देवी देवताओं के पूजन सम्बन्धी दृष्टिकोण से श्रीराम जी, हनुमान जी व शंकर जी का पूजन अधिकांश उत्तरदाता करते हैं जिसमें वृद्ध आयु समूह के (30.9 प्रतिशत) उत्तरदाता एवं स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा समूह के (44.5 प्रतिशत) उत्तरदाता व उच्चजाति के (26.2 प्रतिशत) उत्तरदाता विशेषतया पूजन करते हैं तथा 13.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का समूह देवी–देवताओं का पूजन नही करता है। ग्रामीण लोग शीतला माँ तथा काली माँ का पूजन (70.4 प्रतिशत) विशेष तौर पर करते हैं। जबकि जातियता के आधार पर उच्चजाति के (73.8 प्रतिशत) उत्तरदाता त्यौहारों पर व सप्ताह में कई बार शीतला माँ तथा काली माँ की पूजा करते हैं तथा 29.6 प्रतिशत उत्तरदाता पूजन नही करते हैं। ग्रामीण समुदाय के लोगों के यहां केवल (7.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के परिवार में बलि प्रथा का प्रचलन है। जिन उत्तरदाताओं के परिवार में बलि प्रथा का प्रचलन है वे सभी मुस्लिम धर्म को मानने वाले उत्तरदाता हैं।

देवी देवताओं की पूजा व आराधना करने के क्रम में ग्रामीण समुदाय के लोग, विशेष पर्वों पर 41.7 प्रतिशत उत्तरदाता व 27.0 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन पूजा व आराधना करते हैं जिसमें युवा आयु समूह के (30.0 प्रतिशत) उत्तरदाता प्रतिदिन व वृद्ध आयु समूह के 65.5 प्रतिशत उत्तरदाता विशेष पर्वों पर तथा शिक्षा के बढ़ते क्रम में स्नातक/स्नातकोत्तर 37.0 प्रतिशत प्रतिदिन तथा शिक्षा के घटते क्रम में अशिक्षित (48.8 प्रतिशत) उत्तरदाता विशेष पर्वों पर, तथा उच्चजाति के (52.4 प्रतिशत) उत्तरदाता प्रतिदिन व अनुसूचितजाति के (51.9 प्रतिशत) उत्तरदाता विशेष पर्वों पर ही देवी देवताओं की आराधना करते हैं। ग्रामीण लोगों के परिवार में अधिकांशतः श्रीराम जी, हनुमान जी एवं शंकर जी (70.0 प्रतिशत) चित्र व मूर्ति विद्यमान हैं तथा श्री रामचरितमानस ग्रन्थ हनुमान चालीसा व कुरान शरीफ व पुराण इत्यादि (42.2 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के परिवार में विद्यमान हैं तथा 32.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में कोई ग्रन्थ नही है। अतः स्पष्ट है कि वृहद हिन्दू धार्मिक विश्वास, कर्मकान्ड और नवीन जीवनशैली ने ग्रामीण जीवन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

ग्रामीण धार्मिक जीवन की महत्वपूर्ण विशेषता क्षेत्रीय या लोक संस्कृति में आस्था है। ग्रामीण समुदाय के लोग ब्रम्हदेव बाबा जो कि स्थानीय ग्रामीण देवता के रूप में पूजे जाते रहे हैं तथा जिन्हे गांव का रक्षक माना जाता रहा है, उनके सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की यह मान्यता है कि गांव के लोग ब्रम्हदेव बाबा में (27.4 प्रतिशत) अत्याधिक विश्वास, (53.0 प्रतिशत) सामान्य विश्वास रखते हैं। सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन (80.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के परिवार में किया जाता है यह कथा पारिवारिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है तथा उच्चजाति के लोग वर्ष में एकाधबार तथा अनुसूचितजाति के लोग विशेष पर्वों पर ही सत्य नारायण की कथा का आयोजन करवाते हैं। अनुसूचितजाति की अपेक्षा उच्चजाति की सत्यनारायण की कथा के प्रति विशेष रूचि होती है।

धार्मिक ग्रन्थों का पाठ एवं श्रवण व्यक्ति की धार्मिक आस्था का प्रमुख परिचायक है। अध्ययन में सम्मिलित आधे से कुछ ज्यादा उत्तरदाता धार्मिक ग्रन्थों का पाठ एवं श्रवण करते हैं। 38.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह मानना है कि शोषण में धार्मिक ग्रन्थों की भूमिका है जोकि ग्रामीण समुदाय में आधुनिक परिवर्तन को प्रदर्शित करता है। 58.3 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि धार्मिक प्रथाएं व परम्पराएं उनके उत्थान में बाधक हैं यह मनोवृत्ति आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है।

भूत–प्रेत और अप्राकृतिक शक्तियों में आस्था ग्रामीण धार्मिक विश्वास का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। अध्ययन से यह विदित होता है कि 10.9 प्रतिशत परिवार भूत–प्रेत में अत्याधिक विश्वास रखते हैं, 28.3 प्रतिशत परिवार सामान्य विश्वास रखते हैं और 60.8 प्रतिशत उत्तरदाता भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास नही रखते हैं। भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास की कमी उन परिवारों में अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप में देखने को मिलती है जो कि युवा उच्च शिक्षित व उच्चजाति के उत्तरदाता हैं। इसी प्रकार 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता भूत–प्रेत के प्रकोप को नही मानते और न ही उनके परिवारों में कभी हुआ है तथा जादू–टोना में विश्वास 60.4 प्रतिशत उत्तरदाता नही करते हैं और न ही 89.1 प्रतिशत उत्तरदाता के परिवार में देवी–देवताओं को प्रसन्न करने तथा अन्य परेशानियों के निवारण के लिए जादू–टोना (करावा–धराई) का सहारा लिया जाता है। दर्शित परिवर्तित मनोवृत्तियाँ आधुनिक परिवर्तन को प्रदर्शित करता है। ग्रामीण धार्मिक जीवन में ग्रामीण समुदाय के लोग व्रत व उपवास भी रखते हैं। व्रत व उपवास करने वाले 47.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार विद्यमान हैं। जिनमें 25.5 प्रतिशत उत्तरदाता साप्ताहिक व्रत इत्यादि तथा 31.8 प्रतिशत वार्षिक व्रत एवं त्यौहारों पर ही व्रत करते हैं। व्रत रखने में उपर्युक्त तथ्यों की कम प्रतिशतता आधुनिक परिवर्तन को प्रदर्शित करती हैं।

अधिकतर उत्तरदाताओं के परिवारिजन व स्वयं (86.5 प्रतिशत) उत्तरदाता तीर्थ स्थलों पर जा चुके हैं जिसमें नैमिषारण्य (86.5 प्रतिशत), हरिद्वार (52.2 प्रतिशत), प्रयागराज (65.2 प्रतिशत), बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगासागर व जगन्नाथपुरी के भी दर्शन कर आये हैं। प्रमुख तीर्थ स्थलों पर जाने का मुख्य उद्देश्य (52.8 प्रतिशत) स्नान करना है तथा (51.8 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का यह मानना है कि वहां जाने से आत्मा को शान्ति मिलती है। उपर्युक्त तथ्यों द्वारा वर्णित सत प्रदर्शित उत्तरदाताओं का तीर्थस्थल पर जाना व प्रेरित होना आधुनिक व उच्च तकनीकी के नवीन यातायात के साधन जोकि कम खर्च में व कम समय में दूरस्थ तीर्थ स्थलों का दर्शन करने में यातायात के साधनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वह इस आधुनिकीकरण की ही देन है तथा उत्तरदाताओं का तीव्रगति से तकनीकी साधनों की ओर प्रेरित होना आधुनिक परम्परा के आत्मसातीकरण को दर्शाता है। मनोवृत्तियों में परिवर्तन के फलस्वरूप तीन चौथाई से अधिक उत्तरदाता व उनके परिवारीजन मन्दिरों में आते जाते हैं जिसमें 22.6 प्रतिशत प्रायः मन्दिर में जाते हैं व 63.9 प्रतिशत उत्तरदाता व उनके परिवारीजन

कभी–कभी मन्दिरों में जाते हैं, 28.2 प्रतिशत उत्तरदाता फसल काटने के बाद कृषि सम्बन्धी पूजापाठ करते हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण परिवार के सदस्य अब बहुत ही उत्साह के साथ होली, दीपावली, विजयदशमी व नवरात्र के पर्व को अधिकतर उत्तरदाताओं के परिवारीजन व स्वयं तकनीकीकरण के संसाधनों व तरीकों को अपनाकर पर्वों व त्यौहारों को नवीन पद्धति के तहत हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

द्वितीय खण्ड में लौकिकीकरण और धार्मिक अभिवृत्तियों के नवीन प्रतिमानों से सम्बन्धित तथ्यों की विवेचना की गई है। अध्ययन से यह विदित होता है कि धार्मिक रूढ़िवादिता की मनोवृत्ति निरन्तर शिथिल होती जा रही है और धर्म की निरपेक्षीकरण की प्रक्रिया का विस्तार हो रहा है। 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग कर रहे हैं। जिसमें युवा आयु समूह के शिक्षा के बढ़ते क्रम में स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त उच्चजाति के उत्तरदाता लगभग सभी आधुनिक परिधानों को बेहद पसन्द करते हैं। यह मनोवृत्ति जोकि आधुनिक परम्परा का एक अंग साबित हो रही है। शादी विवाह के अवसरों पर (96.1 प्रतिशत) उत्तरदाता जो कि अधिकांशतः युवा आयु समूह में शिक्षा के बढ़ते क्रमानुसार अधिक शिक्षित उच्चजाति व अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति के उत्तरदाता टैक्सी का प्रयोग करते हैं जो उपर्युक्त मनोवृत्ति परिवर्तन की तीव्र गति को प्रदर्शित करती है। 89.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में दूसरी जातियों के लोग भी संस्कारों में भाग लेते हैं तथा खानपान के सम्बन्ध में निम्न और उच्चजाति के भेद–भाव की समाप्ति का अधिकांश (75.2 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने अनुमोदन किया है जोकि उच्च शिक्षित युवा आयु समूह एवं अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति के उत्तरदाता इस भेद–भाव समाप्ति के अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में समर्थक हैं।

नगरीय आवास और जातिगत भेदभाव की कमी से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि अधिकतर (70.4 प्रतिशत) उत्तरदाता यह अनुभव करते हैं कि नगरों में जनसंख्या की अधिकता, आवासीय समस्या, व्यावसायिक विभेदीकरण और गतिशीलता तथा द्वितीयक संस्थानों की महत्ता में वृद्धि इत्यादि के कारण जातिगत भेदभाव निरन्तर कम होता जा रहा है। अधिकांश उत्तरदाता (80.4 प्रतिशत) यह मानते हैं कि शिक्षा के प्रसार के साथ–साथ अन्धविश्वास और संकीर्णता में कमी आई है। जोकि नवीन परिवर्तनों के तहत नवीन मनोवृत्तियों का उदय आधुनिक परिवर्तनों के आत्मसातीकरण का द्योतक है।

तृतीय खण्ड में सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिमानों की नवीन अभिवृत्तियों से सम्बन्धित तथ्यों की विवेचना की गई है। अध्ययन से यह विदित होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं में (60.9 प्रतिशत) नाटक/नौटंकी को देखने की प्रवृत्ति है जोकि युवा आयु समूह के कम शिक्षित व अनुसूचितजाति के अधिकांशत उत्तरदाताओं में है। यद्यपि ग्रामीण जीवन में धार्मिक क्रियाओं को विशेष महत्ता प्राप्त रही है तथा इस आधुनिक परिवर्तन के युग में भी धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों को लोग विशेष रूप से पसन्द करते हैं। उत्तरदाताओं व उनके

परिवारीजनों द्वारा (65.2 प्रतिशत) रामलीला को देखने में रूचि प्रतीत होती है तथा त्यौहारों व पर्वों पर स्थानीय देवी–देवताओं के स्थानों पर मेलों में प्रायः (47.4 प्रतिशत) कभी–कभी (34.8 प्रतिशत) दो–चार साल में एकाधबार (17.8 प्रतिशत) उत्तरदाता जाते हैं। आधुनिक परिवर्तन के फलस्वरूप सांस्कृतिक कार्यक्रमों का परम्परागत स्वरूप लगभग खत्म सा हो गया है। नवीन तकनीकी व पद्धति से युक्त नाटक/नौटंकी व धार्मिक रामलीला व स्थानीय मेलों के आयोजनों पर ग्रामीण समुदाय के लोग जाने में रूचि रखते हैं।

परम्परागत ग्रामीण समाजों में प्राचीन काल से लोकनृत्य व नृत्य (विरहा, कजरी व अन्य नृत्य) देखने के शौकीन लोग विद्यमान रहते हैं तथा परिवर्तन के इस युग में लोकनृत्य व नृत्य का परम्परागत स्वरूप बदलकर नवीन पद्धति से युक्त नवीन नृत्य व नवीन लोकनृत्य का (विरहा, कजरी व अन्य नृत्य) उद्‌भव हुआ है तथा अधिकांश (72.2 प्रतिशत) उत्तरदाता लोकनृत्य व नृत्यों के नवीन स्वरूप को देखने में रूचिवान हैं तथा ग्रामीण समुदाय के लोग लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) रेडियो या मोबाइल के माध्यम से 38.3 प्रतिशत उत्तरदाता ही सुनने में रूचि रखते हैं। मोबाइल व रेडियो के माध्यम से लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) सुनने की कम प्रतिशतता आधुनिक परिवर्तन को दर्शाती है जो ग्रामीण लोग लोकगीत (आल्हा, ढ़ोला इत्यादि) सुनते भी हैं वे क्रमशः वृद्ध आयु समूह के अशिक्षित व अनुसूचितजाति के उत्तरदाता हैं। इसके अतिरिक्त आधे से भी कम (40.4 प्रतिशत) उत्तरदाता रासलीला देखने में रूचि रखते हैं। जबकि 44.7 प्रतिशत उत्तरदाता रासलीला देखने में रूचि नही रखते हैं। उपर्युक्त विश्लेषण से यह प्रतीत होता है कि परिवर्तन के नवीन कारकों (आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, मशीनीकरण, औद्योगिकीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी व संचार क्रान्ति इत्यादि) ने सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिमानों में वृहद हिन्दू धार्मिक क्रियाओं में तथा व्यक्ति की परम्परागत मनोवृत्तियों के स्थान पर नवीन तकनीकी मनोवृत्तियों का उद्‌भव किया है जिसके फलस्वरूप अब हर व्यक्ति समस्त कार्यों व व्यवहारों से क्रियाकलापों में नई पद्धति व तकनीकी के अनुसार सम्मिलित होना चाहता है व सम्मिलित होता भी है। यह सभी प्रक्रियाएं आधुनिकीकरण की परम्परा को समाज में स्थापित करने पर विशेष बल देती हैं।

lkj lxg

प्रस्तुत अध्ययन का मूल उद्देश्य ग्रामीण समुदाय में रहने वाले लोगों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना था। इसका एक प्रमुख उद्देश्य सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अनुसंधान विधियों द्वारा वैज्ञानिक स्तर पर ग्रामीण समुदाय के लोगों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में अन्वेषण करना है। अध्ययन में मुख्य रूप से जिन प्रश्नों को खोजने की चेष्टा की गयी है वे निम्न हैं :–

ग्रामीण समुदाय के लोगों की सामाजिक संरचना का स्वरूप क्या है ? ग्रामीण समुदाय के लोगों की आर्थिक संरचना किस प्रकार की है ? एवं ग्रामीण लोगों की भूमि स्वामित्व तथा उनकी कृषि के आधुनिकीकरण सम्बन्धी प्रतिमान क्या है ? ग्रामीण समुदाय के लोगों की राजनैतिक सहभागिता एवं संचार सम्प्रेषण के साधनों एवं नगरीय सम्पर्कता में अन्तःक्रिया किस प्रकार की है। ग्रामीण समुदाय के लोगों में सांस्कृतिक मूल्य एवं धार्मिक प्रक्रियाओं के क्या प्रतिमान है।

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के हरदोई जनपद की सदर तहसील के अन्तर्गत अहिरोरी विकासखण्ड के चार ग्रामसभाओं पर किया गया है। चुने गए ग्रामसभाओं में से 50 भूमिहीन, 103 सीमान्त कृषक, 38 लघु कृषक, 39 बड़े कृषक को निदर्श के रूप में चुना गया है।

अध्ययन से प्राप्त विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित निष्कर्ष विस्तृत रूप में प्रत्येक अध्याय के अन्त में संलग्न है, परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में उन निष्कर्षों का पुर्ननिरीक्षण तथा सामान्यीकरण करने की चेष्टा की गई है। यद्यपि यह सत्य है कि इस सीमित अध्ययन द्वारा ग्रामीण समुदाय पर आधुनिकीकरण के प्रभाव सम्बन्धी वृहद विवेचनाएं नही की जा सकती परन्तु प्राप्त निष्कर्षों को ग्रामीण समुदाय में आधुनिकीकरण के प्रभाव से सम्बन्धी वृहद संकेत अवश्य माने जा सकते हैं। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् हैं :–

vk/k l vf/kd mRrjnkrk ;ok vk; leg d g

आयु सम्बन्धी तथ्यों का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि आधे से अधिक (53.5 प्रतिशत) उत्तरदाता युवा आयु समूह के, एक चौथाई (23.9 प्रतिशत) उत्तरदाता वृद्ध आयु समूह के तथा 22.6 प्रतिशत उत्तरदाता मध्यम आयु समूह के पाये गए हैं। युवा पीढ़ी का ग्रामीण परिवार के मुखिया के रूप में आना निश्चित रूप से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा ग्रामीण परिवारों की संरचनात्मक विशेषताओं में उदीयमान नवीन परिवर्तन को प्रतिविम्बित करता है।

v/;;u {k= e vulfpr tkfr ,o fiNMh tkfr;k dh cgyrk g

जातिगत स्थिति का विश्लेषण ग्रामीण समुदाय की सामाजिक संरचना को स्पष्ट करता है। लगभग एक चौथाई से कुछ कम (18.3 प्रतिशत) उच्चजाति के उत्तरदाता (35.7 प्रतिशत) पिछड़ीजाति के एवं सर्वाधिक (46.0 प्रतिशत) उत्तरदाता अनुसूचितजाति के पाये गए हैं। अतः अनुसूचितजाति के उत्तरदाताओं की अध्ययन व अन्य कार्यों में सर्वाधिक संलग्नता नवीन आधुनिकीकरण की परम्पराओं के आत्मसातीकरण को दर्शाती है।

xkeh.k lenk; e ,d pkFkkbZ l T;knk mRrjnkrk d"kd rFkk vU; d"kd etnjh o xj df"k dk;k e layXu g

उत्तरदाताओं की व्यवसायिक स्थिति के अन्तर्गत (32.2 प्रतिशत) उत्तरदाता कृषक एवं 15.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि मजदूर हैं। शेष (52.4 प्रतिशत) उत्तरदाता जीविकोपार्जन हेतु दैनिक मजदूरी, कुटीर उद्योग, परम्परागत व्यवसाय, दैनिक व्यापार, दुकानदारी, शिक्षण कार्य, परिवहन चालक व सरकारी नौकरी करते हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय में लोगों की कृषि कार्यों को करने के प्रति रूचि कम व उपरोक्त अन्य कार्यों को करने में अत्याधिक रूचि आधुनिक परिवर्तन को दर्शाती है।

xkeh.k lenk; e vk/k l de mRrjnkrk fuEu ekfld vk; d g

उत्तरदाताओं की मासिक आय की स्थिति के अन्तर्गत (39.6 प्रतिशत) आधे से कम उत्तरदाताओं की मासिक आय (4000 या कम) निम्न है, (23.4 प्रतिशत) एक चौथाई उत्तरदाताओं की मासिक आय (4001–6000) है तथा एक चौथाई से कुछ ज्यादा (31.7 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की मासिक आय (6001–10,000) के लगभग है तथा (5.3 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की मासिक आय 10001 से अधिक है। अतः यह कहना उचित है कि अध्ययन में सम्मिलित आधे से कम उत्तरदाता निम्न मासिक आय वाले हैं। ग्रामीण समुदाय में निम्न मासिक आय वाले उत्तरदाताओं की कम प्रतिशतता आधुनिक परिवर्तन को दर्शाती है।

xkeh.k lenk; e vf/kdk'k mRrjnkrk fookfgr g

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति के अन्तर्गत तीन चौथाई से अधिक (80.4 प्रतिशत) उत्तरदाता विवाहित हैं, (6.6 प्रतिशत) उत्तरदाता विधुर/विधवा हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाता आयु और अनुभव की दृष्टि से परिपक्व है तथा व अपने परिवार के उत्तरदायी सदस्य भी हैं तथा उदीयमान नवीन परिवर्तनों की प्रक्रियाओं से (आधुनिकीकरण) को भी यह उत्तरदाता आत्मसात कर रहे हैं।

v/;;u {k= e vf/kdrj mRrjnkrk f'kf{kr g

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति के अन्तर्गत (17.9 प्रतिशत) उत्तरदाता अशिक्षित (44.8 प्रतिशत) उत्तरदाता निम्न शिक्षित प्राइमरी/जूनियर शिक्षा प्राप्त (25.6 प्रतिशत) उत्तरदाता, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा प्राप्त एवं (11.7 प्रतिशत) उत्तरदाता उच्च शिक्षित, स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त हैं। अतः यह कहना उचित होगा कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश उत्तरदाता (82.1 प्रतिशत) शिक्षित हैं तथा उच्चजाति के उत्तरदाता उच्च शैक्षणिक स्थिति को प्रकट करते हैं जबकि अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति के उत्तरदाता क्रमशः अशिक्षित व शिक्षा के बढ़ते क्रम में स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग में सम्मिलित हो रहे हैं। अनुसूचितजाति में शिक्षा का बढ़ता हुआ प्रतिशत आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के आत्मसातीकरण को दर्शाता है।

v/;;u {k= e mRrjnkrkvk d fuokl dju dk edku dPpk g

उत्तरदाताओं के निवास करने के मकान (54.8 प्रतिशत) आधे से अधिक कच्चे हैं, (25.2 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के निवास करने के मकान अर्द्ध कच्चे एवं (17.4 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का निवास करने का मकान पक्का है, केवल 2.6 प्रतिशत उत्तरदाता झोपड़ी में निवास करते हैं। कच्चे मकानों में सर्वाधिक युवा, अशिक्षित व अनुसूचितजाति के उत्तरदाता निवास करते हैं तथा पक्के मकानों में सर्वाधिक मध्यम आयु, उच्च शिक्षित व उच्चजातीय उत्तरदाता निवास करते हैं। पक्के मकानों में रहने की सर्वाधिक मध्यम आयु, उच्च शिक्षित व उच्च जातीय लोगों की प्रवृत्ति आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण को दर्शाती है।

vf/kdk'k mRrjnkrk ,dkdh ifjokj ls lEcf/U/kr g

ग्रामीण समुदाय में 38.2 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार एवं 61.8 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार से सम्बन्धित हैं। एकाकी परिवार में दो तिहाई (69.8 प्रतिशत) उत्तरदाता अनुसूचितजाति व दो तिहाई (68.3 प्रतिशत) उत्तरदाता युवा आयु समूह के एवं (77.7 प्रतिशत) उत्तरदाता (प्राइमरी/जूनियर) निम्न शिक्षित उत्तरदाता सम्मिलित हैं। निम्न आय वर्ग के परिवार मुख्यतः एकाकी एवं उच्च आय वर्ग के परिवार मुख्यतः संयुक्त प्रकृति के हैं। उच्चजाति के परिवार अपनी परम्परागत संयुक्त परिवार की प्रकृति को बनाए हुए हैं जबकि अनुसूचित व पिछड़ीजाति में एकाकी परिवार की बहुलता प्रतीत होती है अधिकांश एकाकी परिवार दो पीढ़ी के परिवार हैं जबकि संयुक्त परिवार में तीन या चार पीढ़ी के सदस्य पाये जाते हैं जबकि संयुक्त परिवारों में अधिकांश (24.3 प्रतिशत) लीनियल संयुक्त प्रकृति के हैं। अतः यह कहना उचित है कि अनुसूचितजाति के परिवारों में एकाकी परिवार की अधिकता उदीयमान नवीन परिवर्तन की प्रक्रियाओं (आधुनिकीकरण) का परिणाम है।

xkeh.k lenk; e lUrku d 'k{kf.kd] ookfgd o 0;olkf;d fu.k; yu dk dk; vf/kdk'kr% firk }kjk gh fd;k tkrk g

निकट रक्त सम्बन्धी के रूप में जो स्थान पिता व माता को प्रदान किया जाता है वह अन्य किसी को नही उत्तरदाओं के परिवार के परिवार में सन्तान की शिक्षा से सम्बन्धी निर्णय (47.9 प्रतिशत) पिता द्वारा एवं सन्तान के विवाह सम्बन्धी निर्णय भी (40.4 प्रतिशत) अधिकांशतः पिता द्वारा व व्यवसायिक भविष्य का निर्धारण भी (60.8 प्रतिशत) सन्तान के पिता द्वारा ही किया जाता है। अतः यह स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय के परिवारों में जिस प्रकार वयोवृद्ध सदस्य की महत्ता निरन्तर कम हो रही है। यह स्थिति आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के क्रियान्वयन को दर्शाती है।

xkeh.k lenk; d ifjokjk d lnL;k d e/; lEcU/kk dh idfr lkekU; g

ग्रामीण समुदाय के परिवारों में सदस्यों के मध्य 30.9 प्रतिशत घनिष्ठ सम्बन्ध तथा 33.9 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि परिवार के सदस्यों के मध्य सामान्य सम्बन्ध हैं तथा परिवार में कलह का प्रमुख कारण आय का सीमित होना तथा 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि कलह का प्रमुख कारण व्यय की अधिकता एवं युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति एवं 10.0 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि कलह का मुख्य कारण सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद है। अतः स्पष्ट है कि नवीन परिवर्तन के फलस्वरूप मनोवृत्तीय परिवर्तन जिसने व्यक्तिवादी विचारधारा को जन्म दिया है जिसके कारण सम्बन्धों की सामान्य प्रकृति, कलह का पाया जाना एवं युवा सदस्यों में स्वतन्त्र मनोवृत्ति व सम्पत्ति सम्बन्धी विचार उत्पन्न हुए हैं जो आधुनिक परम्परा को दर्शाते हैं।

xkeh.k lenk; e fudV ukrnkj d :i e ekrk dk lokRre LFkku inku fd;k tkrk g

निकट नातेदार के रूप में जो स्थान माता को प्रदान किया जाता है वह अन्य किसी को नही। उत्तरदाताओं की सहभागिता की दृष्टि से एकता पायी जाती है, विवाह, मृत्यु के अवसर पर उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्य सदैव सम्मिलित होते हैं, धार्मिक उत्सव तथा प्रमुख त्यौहारों के अवसर पर तुलनात्मक रूप से सदस्यों की सहभागिता कम पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि नातेदार के रूप में माता को सर्वोच्च स्थान प्रदान होना व्यक्तिवादी विचारधारा को दर्शाता है जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का एक अंग है।

xkeh.k lenk; e l;Dr ifjokj dk lkekftd lj{kk inku dju dh mRre 0;oLFkk o HkkoukRed ,d:irk inku dju dk ,d ie[k lk/ku ekuk x;k g

ग्रामीण समुदाय के 43.5 प्रतिशत लोग इस कथन से सहमत हैं कि संयुक्त परिवार सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की उत्तम व्यवस्था है इसी प्रकार संयुक्त परिवार के द्वारा भावनात्मक एकरूपता प्रदान करने का अनुमोदन 44.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने किया है। संयुक्त परिवार बालकों के पालन पोषण की भूमिका का अनुमोदन 45.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने किया है। संयुक्त परिवार को सामुदायिक प्रतिष्ठा व सम्मान सम्बन्धी भूमिका का अनुमोदन 53.9 प्रतिशत लोगों ने किया है। इसी प्रकार कृषि कार्य में संयुक्त परिवार की भूमिका का अनुमोदन 42.2 प्रतिशत आधे से कुछ कम उत्तरदाताओं ने किया है। अतः स्पष्ट है कि भावनात्मक एकरूपता और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के सम्बन्ध में संयुक्त परिवार की भूमिका के प्रति उत्तरदाताओं का एक महत्वपूर्ण अंश आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी रखता है यह मनोवृत्ति युवा पीढ़ी और शिक्षित उत्तरदाताओं में अपेक्षाकृत अधिक पायी गयी है। उपर्युक्त तथ्यों से उत्तरदाताओं में नवीन परिवर्तन के प्रति उन्मुखता प्रतीत होती है।

xkeh.k lenk; d ykx ;g ekudj pyr g fd ,dkdh ifjokj 0;fDrxr LorU=rk dk ikRlkfgr djrk g rFkk dyg ,o l?k"k dk de djrk g

ग्रामीण समुदाय के 48.3 प्रतिशत उत्तरदाता इस कथन से सहमत हैं कि एकाकी परिवार व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को प्रोत्साहित करता है। 58.3 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि एकाकी परिवार कलह और संघर्ष को कम करता है इसके साथ ही साथ 73.9 प्रतिशत लोग यह भी मानते हैं कि एकाकी परिवार अधिक उत्तरदायित्वों को सीमित करता है। अतः स्पष्ट है कि एकाकी परिवार के आर्थिक उत्तरदायित्वों की सीमितता, कलह की न्यूनता और व्यक्तिवादिता की वृद्धि का अनुमोदन उत्तरदाताओं के एक महत्वपूर्ण भाग ने किया है। आर्थिक उत्तरदायित्वों की सीमितता कलह की न्यूवता तथा व्यक्तिवादिता आधुनिक परम्परा के महत्वपूर्ण अंग हैं।

xkeh.k lenk; d vf/kdrj ifjokjk e deku oky lnL;k dh l[;k 1&2 g

उत्तरदाताओं के परिवार में कृषि के अलावा 58.7 प्रतिशत परिवारों में 1–2 सदस्य कमाते हैं तथा परिवार की मासिक आय रूपया 4001 से 6000 के मध्य है। 30.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवारों का वार्षिक व्यय 72000 से 120,000 के मध्य है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण जीवन शैली में नगरीय जीवन ने परिवर्तन की प्रक्रिया (आधुनिकीकरण) के तहत अपना स्थान बनाया है। अपने लिए दैनिक उपभोग की वस्तुओं के क्रय/विक्रय करने के लिए मुख्यतः हरदोई (मुख्यालय) बाजार या निकटवर्ती अहिरोरी, बघौली या प्रताप नगर बाजारों में जाते हैं। अतः यह कहना उचित है कि उदीयमान नवीन परिवर्तन के फलस्वरूप ग्रामीण

समुदाय के लोग नगरीय प्रभाव से प्रभावित हो रहे हैं। ग्रामीण समुदाय के लोगों की आय का स्त्रोत मुख्यतः कृषि है परन्तु आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने कृषि के नये तरीकों व आयामों को जन्म दिया इसके फलस्वरूप युवा पीढ़ी के उत्तरदाता नवीन तकनीकी कृषि की ओर उन्मुख हो रहे हैं तथा गैर कृषि कार्यों जैसे कुटीर उद्योग, परम्परागत व्यवसाय, दुकानदारी, सरकारी नौकरी, प्राइवेट नौकरी, परिवहन चालक इत्यादि में संलग्न हैं। ग्रामीणों में यह संलग्नता आधुनिक परिवर्तन को दर्शाती है।

xkeh.k ifjokjk e ijEijkxr tkrh; 0;olk; df"k o df"k etnjh ,o vU; tkrh; dk;l g

ग्रामीण लोगों के परिवार का परम्परागत जातीय व्यवसाय कृषि एवं कृषि मजदूरी व अन्य जातीय कार्य भी हैं। इनमें संलग्न 47.4 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि एवं कृषि मजदूरी एवं शेष 52.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की संलग्नता परम्परागत जातीय व्यवसाय (कार्य) लघु व्यापार, पुरोहिती/कर्मकाण्डीय कार्य, नगरों में विभिन्न तकनीकी मजदूरी करते हैं तथा युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं (20–35) की रूचि परम्परागत जातीय कार्यों में कम दिखाई देती है जबकि वृद्ध आयु समूह में परम्परागत जातीय कार्यों के प्रति रूचि प्रदर्शित होती है। युवा आयु समूह के उत्तरदाता तकनीकी आधुनिक पद्धति कृषि व गैर कृषि कार्यों की ओर विशेषकर उन्मुख हो रहे हैं जोकि परिवर्तन की प्रक्रिया के पथ को प्रगति प्रदान कर रही है।

इसके अतिरिक्त जो उत्तरदाता कृषि मजदूरी करते है उनकी कृषि मजदूरी करने की 75.9 प्रतिशत प्रकृति स्थायी है तथा वे दैनिक रूपया लेकर कृषि मजदूरी करते हैं तथा उनके प्रति (48.2 प्रतिशत) शीरदारों का व्यवहार सहयोगपूर्ण है। 25.2 प्रतिशत स्त्रियां जीविकोपार्जन के लिए कार्य कर रही हैं। वर्तमान समय में उनकी संख्या 34.3 प्रतिशत है। स्त्रियों के कार्य की आर्थिक क्रियाओं में संलग्नता आधे से कुछ कम (45.6 प्रतिशत) घरेलू गृह कार्य (10.1 प्रतिशत) कृषि मजदूरी (18.9 प्रतिशत) नगरों में जाकर नौकरी, (25.4 प्रतिशत) जातीय कार्य करना है। इनका कार्य करने का आधार रूपया लेकर कार्य करना है। वर्तमान समय में स्त्रियों द्वारा आर्थिक क्रियाओं का यह स्वरूप आधुनिक परिवर्तन को दर्शाता है।

जजमानी व्यवस्था से 16.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं की संतुष्टता ही प्रकट होती है जबकि 60.0 प्रतिशत उत्तरदाता जजमानी प्रथा से असंतुष्ट हैं जो उत्तरदाता जजमानी प्रथा से संतुष्ट हैं वे शीरदार या उच्च जातीय बड़े कृषक हैं। अतः यह स्पष्ट है कि जजमानी प्रथा के प्रति आधे से अधिक लोगों की असंतुष्टता आधुनिक नवीन परिवर्तन के प्रभाव को प्रकट करती है।

vf/kdrj xkeh.k ykx Hkfo"; e viuh lUrku dk ukdjh vFkok df"k e lyXu djkuk pkgr g

ग्रामीण समुदाय के उत्तरदाता अपने व्यवसाय की तुलना में अपने पिता के व्यवसाय को (58.7 प्रतिशत) सामान्य महत्व देते हैं। सन्तान के भावी भविष्य के रूप में 41.7 प्रतिशत उत्तरदाता नौकरी पसन्द करते हैं तथा 26.1 प्रतिशत उत्तरदाता जो कृषक हैं वे अपनी सन्तान के लिए उच्च कोटि के व्यापार को भी पसन्द करते हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदायों में आधुनिक परिवर्तन के कारण ग्रामीण उत्तरदाता अपनी सन्तान के भविष्य के लिए विशेषतः नौकरी या व्यापार पसन्द करते हैं।

vk/k l vf/kd ykx cd ;k dk&vkijfVo lklkbVh l _.k ikIr djr g

ग्रामीण समुदाय के उत्तरदाता अपने कृषि एवं व्यवसायिक कार्यों के लिए ऋण भी लेना चाहते हैं तथा 63.5 प्रतिशत उत्तरदाता बैंक या को–आपरेटिव सोसाइटी से ऋण प्राप्त किया है। इनके ऋण प्राप्त करने का कारण कृषि (43.3 प्रतिशत) है। 39.1 प्रतिशत उत्तरदाता समाज में परिवर्तन लाने की कल्पना के बारे में सोंचते हैं कि किस तरह ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन की प्रक्रिया और तेज हो सके तथा भारतीय समाज में अभिषाप के मुख्य घटक दहेज प्रथा, अशिक्षा, बेरोजगारी, चरित्रहीनता इत्यादि का उन्मूलन हो सके।

v/;;u {k= e rhu pkFkkbZ mRrjnkrkvk d ikl Hkfe dh dN u dN ek=k vo'; ik;h x;h

ग्रामसभाओं में लगभग 21.7 प्रतिशत परिवारों के पास कृषि के लिए अपनी निजी (पारिवारिक) भूमि नही है जबकि 78.3 प्रतिशत परिवार के पास कृषि के लिए भूमि है। जिन लोगों के पास भूमि है उनमें से एक चौथाई से अधिक उत्तरदाताओं के पास 0.01–1.0 हेक्टेयर के लगभग भूमि है तथा ग्रामसभाओं के लोगों की निजी भूमि में से लगभग 84.7 प्रतिशत कृषि योग्य एवं (92.2 प्रतिशत) पूर्ण सिंचित भूमि है। अतः स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की कृषिगत स्थिति व कृषि योग्य भूमि की अधिकता या पूर्ण सिंचित होना परिवर्तन को दर्शाता है।

xkeh.k lenk; d vk/k l dN de Hkfeghu o lhekUr d"kd mRrjnkrk df"k d fy, fdjk, dh Hkfe ij fuHkj g

भूमि के सिंचित रहने की वजह से ही हमारे अध्ययन के भूमिहीन तथा सीमान्त कृषक उत्तरदाता कृषि के लिए किराए की भूमि लेते हैं तथा जिनकी संख्या 40.0 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं के किराए पर भूमि लेने का क्रम औसतन 0.1–1.0 हेक्टेयर तक 67.4 प्रतिशत उत्तरदाता लगभग किराए की भूमि लेने वाले हैं तथा उत्तरदाता किराए की भूमि 3–4 वर्ष

तक के लिए बटाई या ठेका पर बआई की भूमि लेते हैं। किराए के रूप में भूमि मालिकों को फसल की उपज का आधा हिस्सा या 12001–18000 प्रति हेक्टेयर वार्षिक रूपया भी अदा करते हैं। अतः स्पष्ट है कि भूमिहीन या सीमान्त कृषक उत्तरदाता किराए पर भूमि लेकर अपनी आर्थिक स्थिति को उच्चता प्रदान करने के लिए प्रयासरत हैं तथा यह तथ्य परिवर्तन की प्रक्रिया को दर्शाते हैं।

fiNy nl o"kk e yk xk u dN u dN Hkfe dk vo'; Ø;&foØ; fd;k g

जहां तक पिछले 10 वर्षों में भूमि के क्रय करने का प्रश्न है भूमि खरीदने वालों की संख्या 8.7 प्रतिशत के लगभग है। भूमि खरीदने वाले उत्तरदाताओं ने अधिकांश 0.1–1.0 हेक्टेयर के लगभग भूमि खरीदी है। भूमि खरीदने वाले ज्यादातर उत्तरदाता पिछड़ीजाति के हैं। भूमि खरीदने वाले उत्तरदाताओं ने अपनी ही ग्रामसभा में भूमि खरीदी है तथा एक चौथाई (25.0 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने अपनी ही ग्रामसभा से जुड़ी दूसरी ग्रामसभा में जमीन खरीदी है। इनके भूमि खरीदने का स्त्रोत अधिकांशतः चल/अचल सम्पत्ति का विक्रय करके या पुस्तैनी धन गिरवीं या अन्य साधनों के तहत भूमि की खरीददारी की है। जहां तक पिछले 10 वर्षों में भूमि विक्रय का प्रश्न है भूमि बेंचने वाले कुछ (5.6 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने लगभग 4230 एयर भूमि का विक्रय किया है। इनकी भूमि को खरीदने वाले उत्तरदाताओं में से पिछड़ीजाति के आधे से ज्यादा उत्तरदाता सम्मिलित हैं। ये लोग शादी विवाह के लिए, कृषि सम्बन्धी साधनों, मकान निर्माण, कर्ज की अदायगी, बीमारी, मुकदमा, नशाखोरी इत्यादि की वजह से भूमि का विक्रय किए हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण लोग नगरीय सम्पर्क एवं नवीन परिवर्तन की प्रक्रिया के कारण भूमि का क्रय–विक्रय किए हैं जोकि परिवर्तन की प्रक्रिया को दर्शाता है।

xkeh.k lenk; e df"k d {k= e vk/kfud oLrvk dk i;kx fnu ifrfnu c<rk tk jgk g

कृषि प्रधान विकासशील देश की आर्थिक प्रगति कृषि के आधुनिकीकरण पर निर्भर है। कृषि साधनों की उपलब्धता में बैल (10.9 प्रतिशत), देशी हल (8.7 प्रतिशत), आधुनिक हल (17.4 प्रतिशत), चारा काटने की मशीन (79.6 प्रतिशत), गन्ना पेरने की मशीन (4.3 प्रतिशत), थ्रेसर (15.2 प्रतिशत), रीपर (1.7 प्रतिशत), रोटावेटर आधुनिक जुताई मशीन (2.2 प्रतिशत), ट्यूबवेल (6.5 प्रतिशत), पम्पिंग सेट (86.1 प्रतिशत), ट्रैक्टर (17.4 प्रतिशत), स्प्रे मशीन (93.9 प्रतिशत), बुआई मशीन (9.6 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के पास है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय में परम्परागत कृषि यन्त्रों व साधनों की अपेक्षा आधुनिक कृषि यन्त्र व साधन अधिक मात्रा में उपलब्ध है व दिन–प्रतिदिन उन साधनों व यन्त्रों की उपलब्धता बढ़ रही है। कृषि के क्षेत्र में नवीन वस्तुओं क्रमशः उन्नत बीजों का प्रयोग (84.3 प्रतिशत), आधुनिक

उर्वरक (98.3 प्रतिशत), बीज बोने की आधुनिक विधियों का प्रयोग (91.3 प्रतिशत) कीटनाशक दवा का (100.0 प्रतिशत) प्रयोग हो रहा है। अतः स्पष्ट है कि कृषि के क्षेत्र में नवीन वस्तुओं का प्रयोग आधुनिकता लाने के लिए किया जा रहा है।

rduhdh d'f"k dk lh[ku d fy, vf/kdrj mRrjnkrk njn'ku }kjk ilkfjr d'f"k dk;Øek dk n[kr g

ग्रामीण समुदाय में तकनीकी कृषि के प्रोत्साहन में दूरदर्शन का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि के आधुनिकीकरण तथा नवीन यन्त्रीकरण की प्रक्रिया के प्रगति के मार्ग को दूरदर्शन द्वारा अग्रसारित किया गया है। (60.9 प्रतिशत) उत्तरदाता नियमित रूप से तकनीकी कृषि जागरूकता कार्यक्रमों को देखते हैं। ग्रामीण समुदाय में (69.9 प्रतिशत) उत्तरदाता दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव से विशेष प्रभावित हुए हैं तथा (80.4 प्रतिशत) उत्तरदाता दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विज्ञापनों से पूर्णतः प्रेरित हैं तथा लगभग वही उत्पाद खरीद का प्रयोग करते हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदायों में लोगों को तकनीकी कृषि के गुर सीखने तथा कृषि के आधुनिकीकरण में दूरदर्शन की विशेष उपयोगिता है तथा दूरदर्शन के द्वारा ही कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है।

xkeh.k lenk; d vf/kdk'k mRrjnkrk ykdrU=kRed ¼jktufrd½ fopkj/kkjk e vkLFkk j[kr g

आधुनिक काल में ग्रामीण समुदाय को जिन परिवर्तन की नवीन शक्तियों ने प्रभावित किया है उनमें से एक प्रमुख शक्ति नवीन राजनैतिक संस्था और मूल्य है। ग्रामीण समुदाय में बढ़ती हुई शिक्षा, उद्योग धन्धों का विभेदीकरण बढ़ती हुई नगरीय सम्पर्कता इत्यादि ने ग्रामीण समुदाय के सदस्यों की राजनैतिक जागरूकता व सहभागिता को प्रभावित किया है। ग्रामीण समुदाय के अधिकांश उत्तरदाता (65.2 प्रतिशत) लोकतन्त्रात्मक विचारधारा के प्रति आस्थावान हैं तथा जिन उत्तरदाताओं की लोकतन्त्रात्मक विचारधारा में सर्वाधिक आस्था है वे युवा आयु समूह के (71.6 प्रतिशत) उच्च शिक्षित, (100.0 प्रतिशत) उच्चजाति (80.9 प्रतिशत) के उत्तरदाता हैं तथा वे राज्य व राष्ट्रीय स्तर की पार्टियों में सर्वाधिक (40.4 प्रतिशत) समाजवादी पार्टी व (34.4 प्रतिशत) भारतीय जनता पार्टी के समर्थक हैं। अतः यह स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की उच्च राजनैतिक विचारधारा नवीन उदीयमान परिवर्तन की प्रक्रिया (आधुनिकीकरण) को दर्शाती है।

xkeh.k lenk; d ykx vf/kdk'k jktufrd ikfV;k dh jyh e fo'k"k lgHkkfxrk djr g rFkk rhu pkFkkb l vf/kd mRrjnkrk ernku dju tkr g

परिवर्तन प्रकृति का शास्वत् नियम है ग्रामीण लोग राजनैतिक पार्टियों की रैलियों में सर्वाधिक (70.0 प्रतिशत) सहभागिता करते हैं। सर्वाधिक राजनैतिक पार्टियों में सहभागिता करने वाले (72.6 प्रतिशत) अनुसूचितजाति के सामान्य शिक्षित युवा आयु समूह के उत्तरदाता सम्मिलित हैं तथा (65.2 प्रतिशत) लगभग ग्रामीण लोग मतदान करने अपने–अपने बूथों पर जाते हैं। जिसमे सर्वाधिक अनुसूचितजाति के युवा उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि राजनैतिक रैलियों में अत्याधिक सहभागिता व मतदान का बढ़ता प्रतिशत आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के तहत नवीन राजनैतिक विचारधारा का परिचायक है।

xkeh.k lenk; d vk/k l vf/kd ykx Lo; tuifrfuf/k cuu ;k lUrku dk tuifrfuf/k cuku d ifr vkLFkkoku g

परिवर्तन के इस युग में जहां मानव की जीवन पद्धति के समस्त आयामों में परिवर्तन उत्पन्न हो रहा है वहीं अब ग्रामीण समुदाय भी इससे अछूता नही रह गया है। परिवर्तित मनोवृत्तियों के फलस्वरूप ग्रामीण लोगों की यह विचारधारा है कि राजनैतिक विचारधारा के तहत अल्प समय में जनप्रतिनिधित्व करके वे अपनी आर्थिक, सामाजिक, व्यवसायिक स्थिति को ठीक करने का सबसे सरलतम मार्ग मानते हैं तथा आधे से अधिक (65.5 प्रतिशत) उत्तरदाता स्वयं या सन्तान को जनप्रतिनिधि बनाने के प्रति आस्थावान हैं। जो उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति सर्वाधिक आस्था के स्वामी हैं वे क्रमशः अनुसूचितजाति के उच्च शिक्षित तथा युवा आयु समूह के उत्तरदाता हैं तथा ग्रामीण लोग (65.2 प्रतिशत) वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से अत्याधिक संतुष्ट अनुसूचितजाति के कम शिक्षित व युवा आयु समूह के उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि राजनैतिक जनप्रतिनिधित्व करने व सरकार के कार्य व नीतियों की जानकारी रखना व समझना ग्रामीण लोगों की मनोवृत्तियों में आधुनिक परिवर्तन का द्योतक है।

xkeh.k lenk; e lpuk lEi"k.k d uohu lk/kuk dk iHkko fujUrj c< jgk g

ग्रामीण समुदाय के सभी उत्तरदाता हिन्दी बोल लेते हैं तथा एक चौथाई से अधिक (32.6 प्रतिशत) उत्तरदाता अंग्रेजी भी बोल लेते हैं तथा पढ़ने लिखने वालों की संख्या क्रमशः हिन्दी (82.2 प्रतिशत), अंग्रेजी (32.6 प्रतिशत) तथा कुछ उत्तरदाता संस्कृत व उर्दू भी पढ़ लिख तथा बोल लेते हैं। समाचार पत्र पढ़ने में (43.5 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की नियमित प्रवृत्ति है तथा सर्वाधिक दैनिक जागरण व अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र पढ़ने में ज्यादा रूचिवान हैं तथा समाचार पत्रों में राजनीति से सम्बन्धित (38.3 प्रतिशत) तथा ग्रामीण विकास, अपराध सम्बन्धी, रोजगार सम्बन्धी व मनोरंजन सम्बन्धी खबरों व समाचारों को विशेष

तौर पर पढ़ते हैं। ग्रामीण समुदाय के लोगों में रेडियो (41.7 प्रतिशत) सुनने की नियमित प्रवृत्ति प्रतीत होती है। यद्यपि अधिकतर उत्तरदाताओं के पास अपना रेडियो है और अधिकांश उत्तरदाता रेडियो घर पर ही सुनते हैं। रेडियो पर क्रमशः फिल्मी गीत, कृषि कार्यक्रमों को सुनने में विशेष रूचि व समाचार व लोकगीत सुनने में सामान्य रूचि रखते हैं। पत्रिकाओं को पढ़ने वालों में (34.3 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की रूचि प्रतीत होती है, तथापि टेलीविजन (60.9 प्रतिशत) उत्तरदाता नियमित तौर पर देखते हैं तथा टेलीविजन देखने में सर्वाधिक युवा (70.7 प्रतिशत) उच्च शिक्षित (70.7 प्रतिशत) अनुसूचित, पिछड़ी व उच्चजाति के उत्तरदाता हैं। सिनेमा देखने की प्रवृत्ति अधिकतर (32.6 प्रतिशत) दो चार महीने में नई फिल्म लगने पर देखने जाते हैं तथा भ्रमणशीलता के सन्दर्भ में अधिकांशतः नगरों के सम्पर्क में हैं तथा नगरीय प्रक्रियाओं से प्रभावित हैं अतः स्पष्ट है कि सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधन जो नगर में केन्द्रित हैं उनका प्रभाव ग्रामीण व्यक्ति पर निरन्तर पड़ता जा रहा है जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को दर्शाता है।

xkeh.k lenk; d dN mRrjnkrk dEI;Vj lk{kj g rFkk lgt tulok dUnk o ?kj ij bUVjuV dk i;kx djr g

आधुनिक तकनीकीकरण के इस युग में तकनीकी का मुख्य रूप ग्रामीण समुदायों में भी दिखाई देने लगा है। 14.3 प्रतिशत उत्तरदाता कम्प्यूटर का ज्ञान रखते हैं तथा 7.8 प्रतिशत उत्तरदाता मित्रों के यहां जाकर व साइबर कैफे पर जाकर कम्प्यूटर का प्रयोग कर रहे हैं तथा 4.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास स्वयं का पी.सी. है। यद्यपि ग्रामीण समुदाय के लोग 91.3 प्रतिशत कम्प्यूटर को विशेष उपयोगी समझते हैं तथा उत्तरदाता सहज जनसेवा केन्द्रों पर जाकर इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं तथा कम्प्यूटर व इन्टरनेट को विभागीय कार्यों के सम्पादन के लिए विशेष उपयोगी मानते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि कम्प्यूटर व इन्टरनेट के प्रति अत्याधिक साकारात्मक विचारधारा, संतुष्टता व संलग्नता आधुनिकीकरण के प्रभाव को प्रकट करती है।

xkeh.k lenk; d dN mRrjnkrkvk dk NkMdj lHkh mRrjnkrk ekckby Qku dk i;kx djr g

तकनीकी के इस युग में जहां यातायात के साधन तो केवल दूरी पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं वहीं संचार माध्यम ने समय व दूरी दोनों पर विजय प्राप्त की है। ग्रामीण समुदाय के लगभग सभी (91.3 प्रतिशत) उत्तरदाता मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं तथा (58.7 प्रतिशत) उत्तरदाता मोबाइल फोन को बहुत ज्यादा उपयोगी समझते हैं। उपयोगिता की दृष्टि से मोबाइल फोन ने ग्रामीण समुदाय के लोगों के जीवन के आर्थिक पक्ष, पारिवारिक पक्ष, व्यापारिक पक्ष, शैक्षणिक पक्ष, चारित्रिक पक्ष को प्रभावित किया तथा मनोवृत्तियों में क्रान्तिकारी

परिवर्तन का संचयन भी किया तथा (51.7 प्रतिशत) उत्तरदाता यह मानते हैं कि मोबाइल फोन का व्यक्ति और समाज पर नाकारात्मक व साकारात्मक दोनों ही प्रकार का प्रभाव देखने को मिलता है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण लोगों के जीवन में अब मोबाइल फोन का अत्याधिक महत्व प्रतीत होता है जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को दर्शाता है।

xkeh.k lenk; d mRrjnkrk b'oj vFkok Hkxoku d vfLrRo e vR;kf/kd fo'okl j[kr g

ग्रामीण उत्तरदाता ईश्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में (कुछ उत्तरदाताओं को छोड़कर, 13.5 प्रतिशत) अत्याधिक विश्वास रखते हैं। जबकि वृद्ध शिक्षित उच्चजातीय उत्तरदाता ईश्वर अथवा भगवान में अत्याधिक विश्वासवान हैं। यद्यपि श्रीराम जी, हनुमान जी व शंकर जी का पूजन (25.2 प्रतिशत) अधिकतर उत्तरदाता करते हैं जिसमें वृद्ध उच्च शिक्षित उच्चजातीय उत्तरदाता अत्याधिक हैं तथा 13.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का एक समूह देवी–देवताओं की पूजा नही करता। ग्रामसभाओं में शीतला माँ तथा काली माँ का पूजन (70.4 प्रतिशत) विशेष तौर पर किया जाता है तथा जातीयता के आधार पर उच्चजाति के (73.8 प्रतिशत) उत्तरदाता त्यौहारों पर व सप्ताह में कई बार शीतला माँ तथा काली माँ का पूजन अवश्य करते हैं। ग्राम सभाओं में बलि प्रथा का (7.0 प्रतिशत) प्रचलन बहुत कम पाया गया है। यद्यपि जिन उत्तरदाताओं के यहां बलि प्रथा का प्रचलन है वे सभी उत्तरदाता मुस्लिम धर्म को मानने वाले हैं तथा विशेषतया मुस्लिम व अन्य धर्म को मानने वाले उत्तरदाता ही ईश्वर अथवा भगवान की मूर्ति पूजा नही करते हैं तथा ग्रामीण समुदाय में लोग देवी देवताओं की पूजा व आराधना (41.0 प्रतिशत) विशेष पर्वों पर तथा (31.0 प्रतिशत) सप्ताह में तथा सामान्य तौर पर एक चौथाई उत्तरदाता प्रतिदिन पूजा व आराधना करते हैं एवं लगभग उत्तरदाताओं के परिवार में देवी–देवताओं की मूर्ति व चित्र विद्यमान हैं। जिसमें अधिकांश श्रीरामजी, हनुमान जी व शंकर जी की मूर्ति व चित्र मुख्य रूप से विद्यमान है। अधिकतर परिवारों में श्रीरामचरितमानस, हनुमान चालीसा, गीता, कुरानशरीफ की उपलब्धता है। अतः स्पष्ट है कि वृहद हिन्दू धार्मिक विश्वास कर्मकाण्ड और नवीन जीवनशैली ने ग्रामीण जीवनशैली को महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित किया है जोकि परिवर्तन की प्रक्रिया (आधुनिकीकरण) के प्रभाव को प्रकट करता है।

xkeh.k lenk;k e cEgno ckck dk LFkkuh; xkeh.k nork dh ekU;rk izkIr g

गांव के लोग ब्रम्हदेव बाबा जो कि स्थानीय ग्रामीण देवता के रूप में पूजे जाते हैं तथा जिन्हे गांव का रक्षक माना जाता है उनके सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की यह मान्यता है कि गांव के लोग ब्रम्हदेव बाबा में (27.4 प्रतिशत) अत्याधिक (53.0 प्रतिशत) सामान्य विश्वास रखते हैं। जिसमें वृद्ध, शिक्षित व अनुसूचितजाति के उत्तरदाता अत्याधिक ब्रम्हदेव बाबा के प्रति

विश्वासवान हैं तथा युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं की ब्रम्हदेव बाबा के प्रति कम प्रतिशतता परिवर्तन को प्रकट करती है।

xkeh.k lenk; d vf/kdrj mRrjnkrk lR;ukjk;.k Hkxoku dh dFkk dk fo’k"k rkj ij lurs g

गांव में सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन 80.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवारों में किया जाता है जबकि उच्चजाति के लोग 40.5 प्रतिशत वर्ष में एकाधबार तथा अनुसूचितजाति के लोग 55.6 प्रतिशत विशेष पर्वों पर ही सत्यनारायण भगवान की कथा को सुनते हैं। अतः स्पष्ट है कि अनुसूचितजाति की अपेक्षा उच्चजाति में सत्यनारायण भगवान की कथा के प्रति विशेष रूचि प्रतीत होती है।

xkeh.k lenk; d rhu pkFkkb d yxHkx mRrjnkrk /kkfed xUFkk dk ikB ,o Jo.k fo’k"k rkj ij djr g

ग्रामीण लोगों में धार्मिक ग्रन्थों का पाठ एवं श्रवण व्यक्ति की धार्मिक आस्था का प्रमुख परिचायक है। गांव में लगभग तीन चौथाई (67.4 प्रतिशत) उत्तरदाता धार्मिक ग्रन्थों का पाठ एवं श्रवण करते हैं तथा 38.7 प्रतिशत एक चौथाई से ज्यादा उत्तरदाता यह मानते हैं कि उनके शोषण में धार्मिक ग्रन्थों की भूमिका है, 58.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह भी मानना है कि धार्मिक प्रथाएं व परम्पराएं उनके उत्थान में बाधक हैं। अ

तः यह मनोवृत्ति आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है।

vkt Hkh xkeh.k lenk; e Hkr&ir o vikdfrd 'kfDr;k rFkk tkn Vkuk o vk>k vkfn e fo’okl fd;k tkrk g

ग्रामीण लोगों के 10.9 प्रतिशत परिवारों में भूत–प्रेत व अप्राकृतिक तत्वों में अत्याधिक विश्वास किया जाता है तथा 60.9 प्रतिशत उत्तरदाता भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास नही रखते हैं। भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास की कमी उन परिवारों में अधिक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है जोकि युवा, उच्च शिक्षित व उच्चजाति के उत्तरदाता हैं। इसी प्रकार 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता भूत–प्रेत के प्रकोप को नही मानते और न ही कभी उनके परिवार में हुआ तथा 60.4 प्रतिशत उत्तरदाता जादू–टोना में विश्वास नही करते। जो उत्तरदाता जादू–टोना में विश्वासवान हैं उनमें से 89.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में देवी–देवताओं को प्रसन्न करने तथा अन्य परेशानियों के निवारण के लिए जादू–टोना (करावा धराई) का सहारा लिया जाता है। अतः उपर्युक्त दर्शित परिवर्तित मनोवृत्तियां आधुनिक परिवर्तन को प्रदर्शित करती है।

xkeh.k lemnk; e or vFkok miokl dk vkt Hkh egRo fn;k tkrk g

ग्रामीण समुदाय के 47.8 प्रतिशत उत्तरदाता व्रत अथवा उपवास रखते हैं अधिकतर परिवार के सदस्य वार्षिक व त्यौहारिक एवं साप्ताहिक व्रत रखते हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्य नैमिषारण्य तीर्थ स्थलों के अतिरिक्त हरिद्वार, प्रयागराज, बद्रीनाथ, केदारनाथ इत्यादि के दर्शन कर आये हैं। तीर्थ स्थलों पर जाने वाले आधे से अधिक उत्तरदाताओं का मुख्य उद्देश्य स्नान व दर्शन करना है तथा आधे से अधिक तीर्थ स्थलों पर जाने वाले उत्तरदाता यह मानते हैं कि वहां जाने से आत्मा को शान्ति मिलती है। मनोवृत्तियों में परिवर्तन के फलस्वरूप तीन चौथाई से अधिक उत्तरदाता व परिवारीजन मन्दिरों में पूजा के लिए आते जाते हैं। जिसमें 22.6 प्रतिशत उत्तरदाता प्रायः मन्दिरों में जाते हैं, 63.9 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी मन्दिरों में जाते हैं तथा एक चौथाई से अधिक 28.2 प्रतिशत उत्तरदाता फसल काटने के बाद कृषि सम्बन्धी पूजा पाठ करते हैं। होली, दीपावली, विजयदशमी व नवरात्र के पर्व को अधिकतर उत्तरदाताओं के परिवारीजन व स्वयं तकनीकीकरण के संसाधनों व तरीकों को अपनाकर पर्वों व त्यौहारों को नवीन तकनीकी के तहत हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। अतः स्पष्ट है कि उपरोक्त निष्कर्ष आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को प्रकट करते हैं।

xkeh.k lemnk; e lLdfrdj.k dh ifØ;k e fujUrj of) gk jgh g

ग्रामीण समुदाय के 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। शादी विवाह के अवसर पर 96.1 प्रतिशत उत्तरदाता जोकि युवा आयु समूह के शिक्षा के बढ़ते क्रम में उच्च शिक्षित, उच्चजाति, अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति के उत्तरदाता अधिकतर टैक्सी का प्रयोग करते हैं। दूसरी जातियों के यहां सम्पन्न होने वाले संस्कारों में 89.1 प्रतिशत उत्तरदाता भाग लेते हैं। खान–पान के सम्बन्ध में निम्न व उच्चजाति के भेद–भाव की समाप्ति का अधिकांश 75.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अनुमोदन किया है जोकि उच्च शिक्षित और युवा आयु अनुसूचितजाति व पिछड़ीजाति के उत्तरदाता इस भेद–भाव की समाप्ति के अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में समर्थक हैं। नगरीय आवास और जातिगत भेद–भाव की कमी से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि अधिकतर 70.4 प्रतिशत उत्तरदाता यह अनुभव करते हैं कि नगरों में जनसंख्या की अधिकता, आवासीय समस्या, व्यवसायिक विभेदीकरण और गतिशीलता तथा द्वितीयक संस्थानों की महत्ता में वृद्धि इत्यादि के कारण जातिगत भेद–भाव निरन्तर कम होता जा रहा है। अधिकांश उत्तरदाता 80.4 प्रतिशत यह मानते हैं कि शिक्षा के प्रसार के साथ–साथ अन्धविश्वास व संकीर्णता में कमी आयी है जोकि नवीन परिवर्तनों के तहत नवीन मनोवृत्तियों का उदय आधुनिक परिवर्तनों के आत्मसातीकरण का द्योतक है।

xzkeh.k lemnk;ksa esa lkaLd`frd dk;ZØeksa ukVd] ukSVadh dks ns[kus esa vf/kdrj mRrjnkrk :fp j[krs gSa

ग्रामीण समुदाय के 60.9 प्रतिशत अधिकांश उत्तरदाता नाटक–नौटंकी देखने में रूचि रखते हैं जिसमें युवा, अनुसूचितजाति के अधिकतर उत्तरदाता हैं। इस आधुनिक परिवर्तन के युग में भी धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों को लोग विशेष रूप से पसन्द करते हैं तथा 65.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं की रामलीला देखने में रूचि प्रतीत होती है तथा स्थानीय मेलों में आयोजनों पर अधिकतर उत्तरदाता मेलों में जाने की रूचि रखते हैं।

xzkeh.k yksx vkt Hkh yksdu`R; ¼fojgk½ dtjh o vU; u`R;½ dks vf/kd ns[kuk ilUn djrs gSa

ग्रामीण समुदाय के लोग 72.2 प्रतिशत नवीन तकनीकी से युक्त नवीन लोकनृत्य व नृत्यों के नवीन स्वरूप को देखने में अधिकांश रूचि रखते हैं तथा एक चौथाई से अधिक 38.3 प्रतिशत उत्तरदाता मोबाइल व रेडियों के माध्यम से लोकगीत आल्हा–ढ़ोला सुनने वाले हैं। आल्हा–ढ़ोला सुनने की कम प्रतिशतता आधुनिक परिवर्तन को दर्शाती है तथा जो उत्तरदाता आल्हा–ढ़ोला सुनने वाले हैं वे क्रमशः वृद्ध आयु के अशिक्षित व अनुसूचितजाति के उत्तरदाता हैं तथा ग्रामीण लोगों की 40.4 प्रतिशत रासलीला देखने की प्रवृत्ति प्रकट होती है जबकि रासलीला न देखने वाले ग्रामीण समुदाय में अधिकतर लोग हैं। अतः स्पष्ट है कि परिवर्तन के नवीन कारकों (आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, मशीनीकरण, औद्योगिकीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी व संचार क्रान्ति इत्यादि) ने सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिमानों, वृहद हिन्दू धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति की परम्परागत मनोवृत्ति के स्थान पर नवीन तकनीकी मनोवृत्तियों का उद्‌भव किया है जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया व परम्परा को समाज में स्थापित करने पर विशेष बल देती है।

lkj laxg

प्रस्तुत अध्ययन का मूल उद्देष्य ग्रामीण समुदाय में रहने वाले लोगों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना था। इसका एक प्रमुख उद्देष्य सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अनुसंधान विधियों द्वारा वैज्ञानिक स्तर पर ग्रामीण समुदाय के लोगों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में अन्वेषण करना है। अध्ययन में मुख्य रूप से जिन प्रष्नों को खोजने की चेष्टा की गयी है वे निम्न हैं :–

ग्रामीण समुदाय के लोगों की सामाजिक संरचना का स्वरूप क्या है ? ग्रामीण समुदाय संरचना किस प्रकार की है ? एवं ग्रामीण लोगों की भूमि स्वामित्व तथा उनकी कृषि के आधुनिकीकरण सम्बन्धी प्रतिमान क्या है ? ग्रामीण समुदाय के लोगों की राजनैतिक सहभागिता एवं संचार सम्प्रेषण के साधनो एवं नगरीय सम्पर्कता में अन्तःक्रिया किस प्रकार की है। ग्रामीण समुदाय के लोगों में सांस्कृतिक मूल्य एवं धार्मिक प्रक्रियाओं के क्या प्रतिमान है।

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेष के हरदोई जनपद की सदर तहसील के अन्तर्गत अहिरोरी विकास खण्ड के चार ग्राम सभाओं पर किया गया है। चुने गए ग्राम सभाओं में से 50 भूमिहीन, 103 सीमान्त कृषक, 38 लघु कृषक, 39 बड़े कृषक को निदर्ष के रूप में चुना गया है।

अध्ययन से प्राप्त विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित निष्कर्ष विस्तृत रूप में प्रत्येक अध्याय के अन्त में संलग्न है, परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में उन निष्कर्षों का पुर्ननिरीक्षण तथा सामान्यीकरण करने की चेष्टा की गई है। यद्यपि यह सत्य है कि इस सीमित अध्ययन द्वारा ग्रामीण समुदाय पर आधुनिकीकरण के प्रभाव सम्बन्धी वृहद विवेचनाएं नही की जा सकती परन्तु प्राप्त निष्कर्षों को ग्रामीण समुदाय में आधुनिकीकरण के प्रभाव से सम्बन्धी वृहद संकेत अवष्य माने जा सकते हैं। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् हैं :–

vk/k l vf/kd mRrjnkrk ;ok vk; leg d g %&

आयु सम्बन्धी तथ्यों का विष्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि आधे से अधिक (53.5 प्रतिषत) उत्तरदाता युवा आयु समूह के, एक चौथाई (23.9 प्रतिषत) उत्तरदाता वृद्ध आयु समूह के तथा 22.6 प्रतिषत उत्तरदाता मध्यम आयु समूह के पाये गए हैं। युवा पीढ़ी का ग्रामीण परिवार के मुखिया के रूप में आना निष्चित रूप से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा ग्रामीण परिवारों की संरचनात्मक विषेषताओं में उदीयमान नवीन परिवर्तन को प्रतिविम्बित करता है।

v/;;u {k= e vulfpr tkfr ,o fiNMh tkfr;k dh cgyrk g %&

जातिगत स्थिति का विष्लेषण ग्रामीण समुदाय की सामाजिक संरचना को स्पष्ट करता है। लगभग एक चौथाई से कुछ कम (18.3 प्रतिषत) उच्च जाति के उत्तरदाता (35.7 प्रतिषत) पिछड़ी जाति के एवं सर्वाधिक (46.0 प्रतिषत) उत्तरदाता अनुसूचित जाति के पाये गए हैं। अतः अनुसूचित जाति के उत्तरदाताओं की अध्ययन व अन्य कार्यों में सर्वाधिक संलग्नता नवीन आधुनिकीकरण की परम्पराओं के आत्मसातीकरण को दर्षाती है।

xkeh.k lenk; e ,d pkFkkbl l T;knk mRrjnkrk d"kd rFkk vU; d"kd etnjh o xj df"k dk;k e lyXu g %&

उत्तरदाताओं की व्यवसायिक स्थिति के अन्तर्गत (32.2 प्रतिषत) उत्तरदाता कृषक एवं 15.2 प्रतिषत उत्तरदाता कृषि मजदूर हैं। शेष (52.4 प्रतिषत) उत्तरदाता जीविकोपार्जन हेतु दैनिक मजदूरी कुटीर उद्योग, परम्परागत व्यवसाय, दैनिक व्यापार, दुकानदारी, षिक्षण कार्य, परिवहन चालक व सरकारी नौकरी करते हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय में लोगों की कृषि कार्यों को करने के प्रति रूचि कम व उपरोक्त अन्य कार्यों को करने में अत्याधिक रूचि आधुनिक परिवर्तन को दर्षाती है।

xkeh.k lenk; e vk/k l de mRrjnkrk fuEu ekfld vk; d g %&

उत्तरदाताओं की मासिक आय की स्थिति के अन्तर्गत (39.6 प्रतिषत) आधे से कम उत्तरदाताओं की मासिक आय (4000 या कम) निम्न है। (23.4 प्रतिषत) एक चौथाई उत्तरदाताओं की मासिक आय (4001–6000) है तथा एक चौथाई से कुछ ज्यादा (31.7 प्रतिषत) उत्तरदाताओं की मासिक आय (6001–10,000) के लगभग है तथा (5.3 प्रतिषत) उत्तरदाताओं की मासिक आय 10001 से अधिक है। अतः यह कहना उचित है कि अध्ययन में सम्मिलित आधे से कम उत्तरदाता निम्न मासिक आय वाले हैं। ग्रामीण समुदाय में निम्न मासिक आय वाले उत्तरदाताओं की कम प्रतिषतता आधुनिक परिवर्तन को दर्षाती है।

xkeh.k lenk; e vf/kdk'k mRrjnkrk fookfgr g %&

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति के अन्तर्गत तीन चौथाई से अधिक (80.4 प्रतिषत) उत्तरदाता विवाहित है। (6.6 प्रतिषत) उत्तरदाता विधुर/विधवा हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में अधिकांष उत्तरदाता आयु और अनुभव की दृष्टि से परिपक्व है तथा व अपने परिवार के उत्तरदायी सदस्य भी हैं तथा उदीयमान नवीन परिवर्तनों की प्रक्रिया में (आधुनिकीकरण) को भी यह उत्तरदाता आत्मसात कर रहे हैं।

v/;;u {k= e vf/kdrj mRrjnkrk f'kf{kr g %&

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति के अन्तर्गत (17.9 प्रतिषत) उत्तरदाता अषिक्षित (44.8 प्रतिषत) उत्तरदाता निम्न षिक्षित प्राइमरी/जूनियर षिक्षा प्राप्त (25.6 प्रतिषत) उत्तरदाता हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट षिक्षा प्राप्त एवं (11.7 प्रतिषत) उत्तरदाता उच्च षिक्षित, स्नातक/स्नातकोत्तर षिक्षा प्राप्त हैं। अतः यह कहना उचित होगा कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांष उत्तरदाता (82.1 प्रतिषत) षिक्षित हैं तथा उच्च जाति के उत्तरदाता उच्च शैक्षणिक स्थिति को प्रकट करते हैं। जबकि अनुसूचित जाति व पिछड़ी जाति के उत्तरदाता क्रमषः अषिक्षित व षिक्षा के बढ़ते क्रम में स्नातक/स्नातकोत्तर षिक्षा वर्ग में सम्मिलित हो रहे हैं। अनुसूचित जाति में षिक्षा का बढ़ता हुआ प्रतिषत आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के आत्मसातीकरण को दर्षाता है।

v/;;u {k= e mRrjnkrkvk d fuokl dju dk edku dPpk g %&

उत्तरदाताओं के निवास करने के मकान (54.8 प्रतिषत) आधे से अधिक कच्चे हैं। (25.2 प्रतिषत) उत्तरदाताओं के निवास करने के मकान अर्द्ध कच्चे एवं (17.4 प्रतिषत) उत्तरदाताओं का निवास करने का मकान पक्का है। केवल (2.6 प्रतिषत) उत्तरदाता झोपड़ी में निवास करते हैं। कच्चे मकानों में सर्वाधिक युवा, अषिक्षित व अनुसूचित जाति के उत्तरदाता निवास करते हैं तथा पक्के मकानों में सर्वाधिक मध्यम आयु, उच्च षिक्षित व उच्चजातीय उत्तरदाता निवास करते हैं। पक्के मकानों में रहने की सर्वाधिक मध्यम आयु, उच्च षिक्षित व उच्च जातीय लोगों की प्रवृत्ति आधुनिक परम्पराओं के आत्मसातीकरण को दर्षाती है।

vf/kdk'k mRrjnkrk ,dkdh ifjokj l lEcfU/kr g %&

ग्रामीण समुदाय में 38.2 प्रतिषत उत्तरदाता संयुक्त परिवार एवं 61.8 प्रतिषत उत्तरदाता एकाकी परिवार से सम्बन्धित हैं। एकाकी परिवार में दो तिहाई (69.8 प्रतिषत) उत्तरदाता अनुसूचित जाति व दो तिहाई (68.3 प्रतिषत) उत्तरदाता युवा आयु समूह के एवं (77.7 प्रतिषत) उत्तरदाता (प्राइमरी/जूनियर) निम्न षिक्षित उत्तरदाता सम्मिलित हैं। निम्न आय वर्ग के परिवार मुख्यतः एकाकी एवं उच्च आय वर्ग के परिवार मुख्यतः संयुक्त प्रकृति के हैं। उच्च जाति के परिवार अपनी परम्परागत संयुक्त परिवार की प्रकृति को बनाए हुए हैं जबकि अनुसूचित व पिछड़ी जाति में एकाकी परिवार की बहुलता प्रतीत होती है अधिकांष एकाकी परिवार दो पीढ़ी के परिवार हैं जबकि संयुक्त परिवार ये तीन या चार पीढ़ी के सदस्य पाये जाते हैं जबकि संयुक्त परिवारों में अधिकांष (24.3 प्रतिषत) लीनियस संयुक्त प्रकृति के हैं। अतः यह कहना उचित है कि अनुसूचित जाति के परिवारों में एकाकी परिवार की अधिकता उदीयमान नवीन परिवर्तन की प्रक्रियाओं (आधुनिकीकरण) का परिणाम है।

xkeh.k lenk; e lUrku d 'k{kf.kd] ookfgd o 0;olkf;d fu.k; yu dk dk; vf/kdk'kr% firk }kjk gh fd;k tkrk g %&

निकट रक्त सम्बन्धी के रूप में जो स्थान पिता व माता को प्रदान किया जाता है वह अन्य किसी को नही उत्तरदाओं के परिवार के परिवार में सन्तान की षिक्षा से सम्बन्धी निर्णय (47.9 प्रतिषत) पिता द्वारा एवं सन्तान के विवाह सम्बन्धी निर्णय भी (40.4 प्रतिषत) अधिकांषतः पिता द्वारा व व्यवसायिक भविष्य का निर्धारण भी (60.8 प्रतिषत) सन्तान के पिता द्वारा ही किया जाता है। अतः यह स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय के परिवारों में जिस प्रकार वयोवृद्ध सदस्य की महत्ता निरन्तर कम हो रही है। यह स्थिति आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के क्रियान्वयन को दर्षाती है।

xkeh.k lenk; d ifjokj d lnL;k d e/; lEcU/kk dh idfr lkekU; g %&

ग्रामीण समुदाय के परिवारों में सदस्यों के मध्य 30.9 प्रतिषत घनिष्ठ सम्बन्ध तथा 33.9 प्रतिषत उत्तरदाता यह मानते हैं कि परिवार के सदस्यों के मध्य सामान्य सम्बन्ध हैं तथा परिवार में कलह का प्रमुख कारण आय का सीमित होना तथा 24.4 प्रतिषत उत्तरदाता यह मानते हैं कि कलह का प्रमुख कारण व्यय की अधिकता एवं युवा सदस्यों की स्वतन्त्र मनोवृत्ति एवं 10.0 प्रतिषत उत्तरदाता यह मानते हैं कि कलह का मुख्य कारण सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद है। अतः स्पष्ट है कि नवीन परिवर्तन के फलस्वरूप मनोवृत्तीय परिवर्तन जिसने व्यक्तिवादी विचारधारा को जन्म दिया है जिसके कारण सम्बन्धों की सामान्य प्रकृति, कलह का पाया जाना एवं युवा सदस्यों में स्वतन्त्र मनोवृत्ति व सम्पत्ति सम्बन्धी विचार उत्पन्न हुए हैं जो आधुनिक परम्परा को दर्षाते हैं।

xkeh.k lenk; e fudV ukrnkj d :i e ekrk dk lokRre LFkku inku fd;k tkrk g %&

निकट नातेदार के रूप में जो स्थान माता को प्रदान किया जाता है वह अन्य किसी को नही। उत्तरदाताओं की सहभागिता की दृष्टि से एकता पायी जाती है। विवाह, मृत्यु के अवसर पर उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्य सदैव सम्मिलित होते हैं। धार्मिक उत्सव तथा प्रमुख त्यौहारों के अवसर पर तुलनात्मक रूप से कम पायी गयी है। अतः स्पष्ट है कि नातेदार के रूप में माता को सर्वोच्च स्थान प्रदान होना व्यक्तिवादी विचारधारा को दर्षाता है जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का एक अंग है।

xkeh.k lenk; e l;Dr ifjokj dk lkekftd lj{kk inku dju dh mRre 0;oLFkk o Hkkoukred ,d :irk inku dju dk ,d ie[k lk/ku ekuk x;k g %&

ग्रामीण समुदाय के 43.5 प्रतिषत लोग इस कथन से सहमत हैं कि संयुक्त परिवार सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की उत्तम व्यवस्था है इसी प्रकार संयुक्त परिवार के द्वारा भावनात्मक एकरूपता प्रदान करने का अनुमोदन 44.3 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने किया है। संयुक्त परिवार बालकों के पालन पोषण की भूमिका का अनुमोदन 45.6 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने किया है। संयुक्त परिवार को सामुदायिक प्रतिष्ठा व सम्मान सम्बन्धी भूमिका का अनुमोदन 53.9 प्रतिषत लोगों ने किया है। इसी प्रकार कृषि कार्य में संयुक्त परिवार भूमिका का अनुमोदन 42.2 प्रतिषत आधे से कुछ कम उत्तरदाताओं ने किया है। अतः स्पष्ट है कि भावनात्मक एकरूपता और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के सम्बन्ध में संयुक्त परिवार की भूमिका के प्रति उत्तरदाताओं का एक महत्वपूर्ण अंष आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी रखता है यह मनोवृत्ति युवा पीढ़ी और षिक्षित उत्तरदाताओं में अपेक्षाकृत अधिक पायी गयी है। उपर्युक्त तथ्यों से उत्तरदाताओं में नवीन परिवर्तन के प्रति उन्मुखता प्रतीत होती है।

xkeh.k lenk; d ykx ;g ekudj pyr g fd ,dkdh ifjokj 0;fDrxr LorU=rk dk ikRlkfgr djrk g rFkk dyg ,o l?k"k dk de djrk g %&

ग्रामीण समुदाय के 48.3 प्रतिषत उत्तरदाता इस कथन से सहमत हैं कि एकाकी परिवार व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को प्रोत्साहित करता है। 58.3 प्रतिषत उत्तरदाता यह मानते हैं कि एकाकी परिवार कहल और संघर्ष को कम करता है इसके साथ ही साथ 73.9 प्रतिषत लोग यह भी मानते हैं कि एकाकी परिवार अधिक उत्तरदायित्वों को सीमित करता है। अतः स्पष्ट है कि एकाकी परिवार आर्थिक उत्तरदायित्वों को सीमित करता है। अतः स्पष्ट है कि एकाकी परिवार के आर्थिक उत्तरदायित्वों की सीमितता, कलह की न्यूनता और व्यक्तिवादिता की वृद्धि का अनुमोदन उत्तरदाताओं के एक महत्वपूर्ण भाग ने किया है। आर्थिक उत्तरदायित्वों की सीमितता कलह की न्यूवता तथा व्यक्तिवादिता आधुनिक परम्परा के महत्वपूर्ण अंग हैं।

xkeh.k lenk; d vf/kdrj ifjokjk e deku okys lnL;k dh l[;k 1&2 g %&

उत्तरदाताओं के परिवार में कृषि के अलावा 8.7 प्रतिषत परिवारों में 1–2 सदस्य कमाते हैं तथा परिवार की मासिक आय रूपया 4001 से 6000 के मध्य है। 30.5 प्रतिषत उत्तरदाताओं के परिवारों का वार्षिक व्यय 72000 से 120,000 के मध्य है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण जीवन शैली में नगरीय जीवन ने परिवर्तन की प्रक्रिया (आधुनिकीकरण) के तहत अपना स्थान बनाया है। अपने लिए दैनिक उपभोग की वस्तुओं कि लिए क्रय/विक्रय करने के लिए मुख्यतः हरदोई (मुख्यालय) बाजार या निकटवर्ती अहिरोरी, बघौली या प्रताप नगर बाजारों में जाते हैं। अतः यह कहना उचित है कि उदीयमान नवीन परिवर्तन के फलस्वरूप ग्रामीण समुदाय के लोगों पर नगरीय प्रभाव से प्रभावित हो रहे हैं। ग्रामीण समुदाय के लोगों की आय

का स्त्रोत मुख्यतः कृषि है परन्तु आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने कृषि के नये तरीकों व आयामों को जन्म दिया इसके फलस्वरूप युवा पीढ़ी के उत्तरदाता नवीन तकनीकी कृषि की ओर उन्मुख हो रहे हैं तथा गैर कृषि कार्यों जैसे कुटीर उद्योग, परम्परागत व्यवसाय, दुकानदारी, प्राइवेट नौकरी, परिवहन चालक इत्यादि में संलग्न हैं। ग्रामीणों में यह संलग्नता आधुनिक परिवर्तन को दर्षाती है।

xkeh.k ifjokjk e ijEijkxr tkrh; 0;olk; df"k o df"k etnjh ,o vU; tkrh; dk; g %&

ग्रामीण लोगों के परिवार का परम्परागत जातीय व्यवसाय कृषि एवं कृषि मजदूरी व अन्य जातीय कार्य भी हैं। इनमें संलग्न 47.4 प्रतिषत उत्तरदाता कृषि एवं कृषि मजदूरी एवं शेष 52.6 प्रतिषत उत्तरदाताओं की संलग्नता परम्परागत जातीय व्यवसाय (कार्य) लघु व्यापार, पुरोहिती/कर्मकाण्डीय कार्य, नगरों में विभिन्न तकनीकी मजदूरी करते हैं तथा युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं (20—35) की रूचि परम्परागत जातीय कार्यों में कम दिखाई देती है जबकि वृद्ध आयु समूह में परम्परागत जातीय कार्यों के प्रति रूचि प्रदर्षित होती है। युवा आयु समूह के उत्तरदाता तकनीकी आधुनिक पद्धति कृषि व गैर कृषि कार्यों की ओर विषेषकर उन्मुख हो रहे हैं जोकि परिवर्तन की प्रक्रिया के पथ को प्रगति प्रदान कर रही है।

इसके अतिरिक्त जो उत्तरदाता कृषि मजदूरी करते है उनकी कृषि मजदूरी करने की 75.9 प्रतिषत प्रकृति स्थायी है तथा वे दैनिक रूपया लेकर कृषि मजदूरी करते हैं तथा उनके प्रति (48.2 प्रतिषत) शीरदारों का व्यवहार सहयोगपूर्ण है। 25.2 प्रतिषत स्त्रियां जाविकोपार्जन के लिए कार्य कर रही हैं। वर्तमान समय में उनकी संख्या 34.3 प्रतिषत है। स्त्रियों के कार्य की आर्थिक क्रियाओं में आधे से कुछ कम (45.6 प्रतिषत) घरेलू गृह कार्य (10.1 प्रतिषत) कृषि मजदूरी (18.9 प्रतिषत) नगरों में जाकर नौकरी, (25.4 प्रतिषत) जातीय कार्य करना है। इनका कार्य करने का आधार रूपया लेकर कार्य करना है। वर्तमान समय में स्त्रियों द्वारा आर्थिक क्रियाओं का यह स्वरूप आधुनिक परिवर्तन को दर्षाता है।

जजमानी व्यवस्था से 16.5 प्रतिषत उत्तरदाताओं की संतुष्टता ही प्रकट होती है जबकि 60.0 प्रतिषत उत्तरदाता जजमानी प्रथा से असंतुष्ट हैं। जो उत्तरदाता जजमानी प्रथा से संतुष्ट हैं वे शीरदार या उच्च जातीय बड़े कृषक हैं। अतः यह स्पष्ट है कि जजतानी प्रथा के प्रति आधे से अधिक लोगों की असंतुष्टता आधुनिक नवीन परिवर्तन के प्रभाव को प्रकट करती है।

vf/kdrj xkeh.k ykx Hkfo"; e viuh lUrku dk ukdjh vFkok df"k e lyXu djkuk pkgr g %&

ग्रामीण समुदाय के उत्तरदाता अपने व्यवसाय की तुलना में अपने पिता के व्यवसाय को (58.7 प्रतिषत) सामान्य महत्व देते हैं। सन्तान के भावी भविष्य के रूप में 41.7 प्रतिषत उत्तरदाता नौकरी पसन्द करते हैं तथा 26.1 प्रतिषत उत्तरदाता जो कृषक हैं वे अपनी सन्तान के लिए उच्च कोटि के व्यापार को भी पसन्द करते हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदायों में आधुनिक परिवर्तन के कारण ग्रामीण उत्तरदाता अपनी सन्तान के भविष्य के लिए विषेषतः नौकरी या व्यापार पसन्द करते हैं।

vk/k l vf/kd ykx cd ;k dk&vkijfVo lklkbVh l _.k ikIr djr g %&

ग्रामीण समुदाय के उत्तरदाता अपने कृषि एवं व्यवसायिक कार्यों के लिए ऋण भी लेना चाहते हैं तथा 63.5 प्रतिषत उत्तरदाता बैंक या को–आपरेटिव सोसाइटी से ऋण प्राप्त किया है। इनके ऋण प्राप्त करने का कारण कृषि (43.3 प्रतिषत) है। 39.1 प्रतिषत उत्तरदाता समाज में परिवर्तन लाने की कल्पना के बारे में सोंचते हैं कि किस तरह ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन की प्रक्रिया और तेज हो सके तथा भारतीय समाज में परिवर्तन के मुख्य घटक दहेज प्रथा, अषिक्षा, बेरोजगारी, चरित्रहीनता इत्यादि का उन्मूलन हो सके।

v/;;u {k= e rhu pkFkkb mRrjnkrkvk d ikl Hkfe dh dN u dN ek=k vo'; ik;h x;h %&

ग्राम सभाओं में लगभग 20.4 प्रतिषत परिवारों के पास कृषि के लिए अपनी निजी (पारिवारिक) भूमि नही है जबकि 79.6 प्रतिषत परिवार के पास कृषि के लिए भूमि है। जिन लोगों के पास भूमि है उनमें से एक चौथाई से अधिक उत्तरदाताओं के पास 0.01–1.0 हेक्टेयर के लगभग भूमि है तथा ग्राम सभाओं के लोगों की निजी भूमि में से लगभग 84.7 प्रतिषत कृषि योग्य एवं (92.2 प्रतिषत) पूर्ण सिंचित भूमि है। अतः स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की कृषिगत स्थिति व कृषि योग्य भूमि की अधिकता या पूर्ण सिंचित होना परिवर्तन को दर्षाता है।

xkeh.k lenk; d vk/k l dN de Hkfeghu o lhekUr d"kd mRrjnkrk df"k d fy, fdjk, dh Hkfe ij fuHkj g %&

भूमि के सिंचित रहने की वजह से ही हमारे अध्ययन के भूमिहीन तथा सीमान्त कृषक उत्तरदाता कृषि के लिए किराए की भूमि लेते हैं तथा जिनकी संख्या 40.0 प्रतिषत है। उत्तरदाताओं के किराए पर भूमि लेने का क्रम औसतन 0.1–1.0 हेक्टेयर तक 67.4 प्रतिषत उत्तरदाता लगभग किराए की भूमि लेने वाले हैं तथा उत्तरदाता किराए की भूमि 3–4 वर्ष तक के लिए बटाई या ठेका पर लेते हैं। किराए के रूप में भूमि मालिकों को फसल की उपज का आधा हिस्सा या 12001–18000 प्रति हेक्टेयर वार्षिक रूपया भी अदा करते हैं। अतः स्पष्ट

है कि भूमिहीन या सीमान्त कृषक उत्तरदाता किराए पर भूमि लेकर अपनी आर्थिक स्थिति को उच्चता प्रदान करने के लिए प्रयासरत हैं तथा यह तथ्य परिवर्तन की प्रक्रिया को दर्षाते हैं।

fiNy nl o"kk e vf/kdrj ykxk u dN u dN Hkfe dk vo’; Ø;&foØ; fd;k g %&

जहां तक पिछले 10 वर्षों में भूमि के क्रय का प्रष्न है भूमि खरीदने वालों की संख्या एक चौथाई के लगभग है। भूमि खरीदने वाले उत्तरदाताओं ने अधिकांष 0.1–1.0 हेक्टेयर के लगभग भूमि खरीदी है। भूमि खरीदने वाले ज्यादातर उत्तरदाता पिछड़ी जाति के हैं। गांव के लोगों ने अपनी ही ग्रामसभा में अधिकतर भूमि खरीदी है तथा एक चौथाई (25.0 प्रतिषत) उत्तरदाताओं ने अपनी ही ग्रामसभा से जुड़ी दूसरी ग्रामसभा में अधिकतर जमीन खरीदी है। इनके भूमि खरीदने का स्त्रोत अधिकांषतः चल/अचल सम्पत्ति का विक्रय करके या पुस्तैनी धन गिरवी या अन्य साधनों के तहत भूमि की खरीददारी की है। जहां तक पिछले 10 वर्षों में भूमि विक्रय का प्रष्न है भूमि बेंचने वाले आधे के लगभग (48.1 प्रतिषत) उत्तरदाताओं ने लगभग 4230 एयर भूमि का विक्रय किया है। इनकी भूमि को खरीदने वालों में पिछड़ी जाति के आधे से ज्यादा उत्तरदाता सम्मिलित हैं। ये लोग शादी विवाह के लिए, कृषि सम्बन्धी साधनों, मकान निर्माण, कर्ज की अदायगी, बीमारी, मुकदमा, नषाखोरी इत्यादि की वजह से भूमि का विक्रय किए हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण लोग नगरीय सम्पर्क एवं नवीन परिवर्तन की प्रक्रिया के कारण भूमि का क्रय–विक्रय किए हैं जोकि परिवर्तन की प्रक्रिया को दर्षाता है।

xkeh.k lenk; e df"k d {k= e vk/kfud oLrvk dk i;kx fnu ifrfnu c<rk tk jgk g %&

कृषि प्रधान विकासषील देष की आर्थिक प्रगति कृषि के आधुनिकीकरण पर निर्भर है। कृषि साधनों की उपलब्धता में बैल (10.9 प्रतिषत), देषी हल (8.7 प्रतिषत), आधुनिक हल (17.4 प्रतिषत), चारा काटने की मषीन (79.6 प्रतिषत), गन्ना पेरने की मषीन (4.3 प्रतिषत), थ्रेसर (15.2 प्रतिषत), रीपर (1.7 प्रतिषत), रोटावेटर आधुनिक जुताई मषीन (2.2 प्रतिषत), ट्यूबवेल (6.5 प्रतिषत), पम्पिंग सेट (86.1 प्रतिषत), ट्रैक्टर (17.4 प्रतिषत), स्प्रे मषीन (93.9 प्रतिषत), बुआई मषीन (9.6 प्रतिषत) उत्तरदाताओं के पास है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय में परम्परागत कृषि यन्त्रों व साधनों की अपेक्षा आधुनिक कृषि यन्त्र व साधन अधिक मात्रा में उपलब्ध है व दिन–प्रतिदिन उन साधनों व यन्त्रों की उपलब्धता बढ़ रही है। कृषि के क्षेत्र में नवीन वस्तुओं क्रमषः उन्नत बीजों का प्रयोग (84.3 प्रतिषत), आधुनिक उर्वरक (98.3 प्रतिषत), बीज बोने की आधुनिक विधियों का प्रयोग (91.3 प्रतिषत) कीटनाषक दवा का (100.0 प्रतिषत) प्रयोग हो रहा है। अतः स्पष्ट है कि कृषि के क्षेत्र में नवीन वस्तुओं का प्रयोग आधुनिकता लाने के लिए किया जा रहा है।

rduhdh df"k dk lh[kus ds fy, vf/kdrj mRrjnkrk njn'ku }kjk izlkfjr df"k dk;Øe dk ns[krs gS %&

ग्रामीण समुदाय में तकनीकी कृषि के प्रोत्साहन में दूरदर्षन का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि के आधुनिकीकरण तथा नवीन यन्त्रीकरण की प्रक्रिया के प्रगति के मार्ग को दूरदर्षन द्वारा अग्रसारित किया गया है। (60.9 प्रतिषत) उत्तरदाता नियमित रूप से तकनीकी कृषि जागरूकता कार्यक्रमों को देखते हैं। ग्रामीण समुदाय में (69.9 प्रतिषत) उत्तरदाता दूरदर्षन द्वारा प्रसारित कृषि विषेषज्ञों के सुझाव से विषेष प्रभावित हुए हैं तथा (80.4 प्रतिषत) उत्तरदाता दूरदर्षन द्वारा प्रसारित कृषि विज्ञापनों से पूर्णतः प्रेरित हैं तथा लगभग वही उत्पाद खरीद का प्रयोग करते हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदायों में लोगों को तकनीकी कृषि के गुर सीखने तथा कृषि के आधुनिकीकरण में दूरदर्षन की विषेष उपयोगिता है तथा दूरदर्षन के द्वारा ही कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है।

xzkeh.k lenk; ds vf/kdka'k mRrjnkrk ykdrU=kRed ¼jktuSfrd½ fopkj/kkjk eas vkLFkk j[krs gS %&

आधुनिक काल में ग्रामीण समुदाय को जिन परिवर्तन की नवीन शक्तियों ने प्रभावित किया है उनमें से एक प्रमुख शक्ति नवीन राजनैतिक संस्था और मूल्य है। ग्रामीण समुदाय में बढ़ती हुई षिक्षा, उद्योग धन्धों का विभेदीकरण बढ़ती हुई नगरीय सम्पर्कमा इत्यादि ने ग्रामीण समुदाय के सदस्यों की राजनैतिक जागरूकता व सहभागिता को प्रभावित किया है। ग्रामीण समुदाय के अधिकांष उत्तरदाता (65.2 प्रतिषत) लोकतन्त्रात्मक विचारधारा के प्रति आस्थावान हैं तथा जिन उत्तरदाताओं की लोकतन्त्रात्मक विचारधारा में सर्वाधिक आस्था है वे युवा आयु समूह के (71.6 प्रतिषत) उच्च षिक्षित, (100.0 प्रतिषत) उच्च जाति (80.9 प्रतिषत) के उत्तरदाता हैं तथा वे राज्य व राष्ट्रीय स्तर की पार्टियों में सर्वाधिक (40.4 प्रतिषत) समाजवादी पार्टी व (34.4 प्रतिषत) भारतीय जनता पार्टी के समर्थक हैं। अतः यह स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की उच्च राजनैतिक विचारधारा नवीन उदीयमान परिवर्तन की प्रक्रिया (आधुनिकीकरण) को दर्षाती है।

xzkeh.k lenk; ds ykx vf/kdka'k jktuSfrd ikfVZ;ksa dh jSyh esa fo'ks"k lgHkkfxrk djrs gS rFkk rhu pkFkkbZ ls vf/kd mRrjnkrk ernku djus tkrs gS %&

परिवर्तन प्रकृति का शास्वत् नियम है ग्रामीण लोग राजनैतिक पार्टियों की रैलियों में सर्वाधिक (70.0 प्रतिषत) सहभागिता करते हैं। सर्वाधिक राजनैतिक पार्टियों में सहभागिता करने वाले (72.6 प्रतिषत) अनुसूचित जाति के सामान्य षिक्षित युवा आयु समूह के उत्तरदाता सम्मिलित हैं तथा (65.2 प्रतिषत) लगभग ग्रामीण लोग मतदान करने अपने–अपने बूथों पर जाते हैं। जिसमे सर्वाधिक अनुसूचित जाति के युवा उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि

राजनैतिक रैलियों में अत्याधिक सहभागिता व मतदान का बढ़ता प्रतिषत आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के तहत नवीन राजनैतिक विचारधारा का परिचायक है।

xkeh.k lenk; ds vk/ks ls vf/kd ykx Lo;a tuizfrfuf/k cuus ;k lUrku dks tuizfrfuf/k cukus ds izfr vkLFkkoku gSa%&

परिवर्तन के इस युग में जहां मानव की जीवन पद्धति के समस्त आयामों में परिवर्तन उत्पन्न हो रहा है वहीं अब ग्रामीण समुदाय भी इससे अछूता नही रह गया है। परिवर्तन मनोवृत्तियों के फलस्वरूप ग्रामीण लोगों की यह विचारधारा है कि राजनैतिक विचारधारा के तहत अल्प समय में जनप्रतिनिधित्व करके वे अपनी आर्थिक, सामाजिक, व्यवसायिक स्थिति को ठीक करने का सबसे सरलतम मार्ग मानते हैं तथा आधे से अधिक (65.5 प्रतिषत) उत्तरदाता स्वयं या सन्तान कोद जनप्रतिनिधि बनाने के प्रति आस्थावान हैं। जो उत्तरदाता जनप्रतिनिधि बनने या सन्तान को बनाने के प्रति सर्वाधिक आस्था के स्वामी हैं वे क्रमषः अनुसूचित जाति के उच्च षिक्षित तथा युवा आयु समूह के उत्तरदाता हैं तथा ग्रामीण लोग (65.2 प्रतिषत) वर्तमान राज्य सरकार के विकास कार्यों व नीतियों से अत्याधिक संतुष्ट अनुसूचित जाति के कम षिक्षित व युवा आयु वर्ग के उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट है कि राजनैतिक जनप्रतिनिधित्व करने व सरकार के कार्य व नीतियों की जानकारी रखना व समझना ग्रामीण लोगों की मनोवृत्तियों में आधुनिक परिवर्तन का द्योतक है।

xkeh.k lenk; esa lapkj lk/kuksa dk izHkko fujUrj c<+ jgk gS%&

ग्रामीण समुदाय के सभी उत्तरदाता हिन्दी बोल लेते हैं तथा एक चौथाई से अधिक (32.6 प्रतिषत) उत्तरदात अंग्रेजी भी बोल लेते हैं तथा पढ़ने लिखने वालों की संख्या क्रमषः हिन्दी (82.2 प्रतिषत), अंग्रेजी (32.6 प्रतिषत) तथा कुछ उत्तरदाता संस्कृत व उर्दू भी पढ़ लिख तथा बोल लेते हैं। समाचार पत्र पढ़ने में (43.5 प्रतिषत) उत्तरदाताओं की नियमित प्रवृत्ति है तथा सर्वाधिक दैनिक जागरण व अमर उजाला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र पढ़ने में ज्यादा रूचिवान हैं तथा समाचार पत्रों में राजनीति से सम्बन्धित (38.3 प्रतिषत) तथा ग्रामीण विकास, अपराध सम्बन्धी, रोजगार सम्बन्धी व मनोरंजन सम्बन्धी खबरों व समाचारों को विषेष तौर पर पढ़ते हैं। ग्रामीण समुदाय के लोगों में रेडियो (41.7 प्रतिषत) सुनने की नियमित प्रवृत्ति प्रतीत होती है। यद्यपि अधिकतर उत्तरदाताओं के पास अपना रेडियो है और अधिकांष उत्तरदाता रेडियो घर पर ही सुनते हैं। रेडियो पर क्रमषः फिल्मी गीत, कृषि कार्यक्रमों को सुनने में विषेष रूचि व समाचार व लोकगीत सुनने में सामान्य रूचि रखते हैं। पत्रिकाओं को पढ़ने वालों में (34.3 प्रतिषत) उत्तरदाताओं की रूचि प्रतीत होती है तथापि टेलीविजन टेलीविजन (60.9 प्रतिषत) उत्तरदाता नियमित तौर पर देखते हैं तथा टेलीविजन देखने में सर्वाधिक युवा (70.7 प्रतिषत) उच्च षिक्षित (70.7 प्रतिषत) अनुसूचित, पिछड़ी व उच्च जाति के उत्तरदाता हैं।

सिनेमा देखने की प्रवृत्ति अधिकतर (32.6 प्रतिषत) दो चार महीने में नई फिल्म लगने पर देखने जाते हैं तथा भ्रमणषीलता के सन्दर्भ में अधिकांषतः नगरों के सम्पर्क में हैं तथा नगरीय प्रक्रियाओं से प्रभावित हैं अतः स्पष्ट है कि सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधन जो नगर में केन्द्रित हैं उनका प्रभाव ग्रामीण व्यक्ति पर निरन्तर पड़ता जा रहा है जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को दर्षाताहै।

xkeh.k le|nk; d dN mRrjnkrk dEI;Vj lk{kj g rFkk lgt tulok dUnk o ?kj ij bUVjuV dk i;kx djr g %&

आधुनिक तकनीकीकरण के इस युग में तकनीकी का मुख्य रूप ग्रामीण समुदायों में भी दिखाई देने लगा है। 14.3 प्रतिषत उत्तरदाता कम्प्यूटर का ज्ञान रखते हैं तथा 7.8 प्रतिषत उत्तरदाता मित्रों के यहां जाकर व साइबर कैफे पर जाकर कम्प्यूटर का प्रयोग कर रहे हैं तथा 4.3 प्रतिषत उत्तरदाताओं के पास स्वयं का पी0सी0 है। यद्यपि ग्रामीण समुदाय के लोग 91.3 प्रतिषत कम्प्यूटर को विषेष उपयोगी समझते हैं तथा उत्तरदाता सहज जनसेवा केन्द्रों पर जाकर इन्टरनेट का प्रयोग करते हैं तथा कम्प्यूटर व इन्टरनेट को विभागीय कार्यों के सम्पादन के लिए विषेष उपयोगी मानते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि कम्प्यूटर व इन्टरनेट के प्रति अत्याधिक सकारात्मक विचारधारा, संतुष्टता व संलग्नता आधुनिकीकरण के प्रभाव को प्रकट करती है।

xkeh.k le|nk; d dN mRrjnkrkvk dk NkMdj lHkh mRrjnkrk ekckby Qku dk i;kx djr g %&

तकनीकी के इस युग में जहां यातायात के साधन तो केवल दूरी पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हुए हैं वहीं संचार माध्यम ने समय व दूरी दोनो पर विजय प्राप्त की है। ग्रामीण समुदाय के लगभग सभी (91.3 प्रतिषत) उत्तरदाता मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं तथा (58.7 प्रतिषत) उत्तरदाता मोबाइल फोन को बहुत ज्यादा उपयोगी समझते हैं। उपयोगिता की दृष्टि से मोबाइल फोन ने ग्रामीण समुदाय के लोगों के जीवन के आर्थिक पक्ष, पारिवारिक पक्ष, व्यापारिक पक्ष, शैक्षणिक पक्ष, चारित्रिक पक्ष को प्रभावित किया तथा मनोवृत्तियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन का संचयन भी किया तथा (51.7 प्रतिषत) उत्तरदाता यह मानते हैं कि मोबाइल फोन का व्यक्ति और समाज पर नकारात्मक व सकारात्मक दोनो ही प्रकार का प्रभाव देखने को मिलता है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण लोगों के जीवन में अब मोबाइल फोन का अत्याधिक महत्व प्रतीत होता है जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को दर्षाता है।

xkeh.k le|nk; d mRrjnkrk b'oj vFkok Hkxoku d vfLrRo e vR;kf/kd fo'okl j[kr g %&

ग्रामीण उत्तरदाता ईष्वर अथवा भगवान के अस्तित्व में (कुछ उत्तरदाताओं को छोड़कर, 13.5 प्रतिषत) अत्याधिक विष्वास रखते हैं। जबकि वृद्ध षिक्षित उच्चजातीय उत्तरदाता ईष्वर अथवा भगवान में अत्याधिक विष्वासवान हैं। यद्यपि श्रीराम जी, हनुमान जी व शंकर जी का पूजन (25.2 प्रतिषत) अधिकतर उत्तरदाता करते हैं जिसमें वृद्ध उच्च षिक्षित उच्चजातीय उत्तरदाता अत्याधिक हैं तथा 13.5 प्रतिषत उत्तरदाताओं का एक समूह देवी–देवताओं की पूजा नही करता। ग्राम सभाओं में शीतला माँ तथा काली माँ का पूजन (70.4 प्रतिषत) विषेष तौर पर किया जाता है तथ जातीयता के आधार पर उच्च जाति के (73.8 प्रतिषत) उत्तरदाता त्यौहारों पर व सप्ताह में कई बार शीतला माँ तथा काली माँ का पूजन अवष्य करते हैं। ग्राम सभाओं में बलि प्रथा का (70.0 प्रतिषत) प्रचलन बहुत कम पाया गया है। यद्यपि जिन उत्तरदाताओं के यहां बलि प्रथा का प्रचलन है वे सभी उत्तरदाता मुस्लिम धर्म को मानने वाले हैं तथा विषेषतया मुस्लिम व अन्य धर्म को मानने वाले उत्तरदाता ही ईष्वर अथवा भगवान की मूर्ति पूजा नही करते हैं तथा ग्रामीण समुदाय में लोग देवी देवताओं की पूजा व आराधना (41. 0 प्रतिषत) विषेष पर्वों पर तथा (31.0 प्रतिषत) सप्ताह में तथा सामान्य तौर पर एक चौथाई उत्तरदाता प्रतिदिन पूजा व आराधना करते हैं एवं लगभग उत्तरदाताओं के परिवार में देवी–देवताओं की मूर्ति व चित्र विद्यमान हैं। जिसमें अधिकांष श्रीरामजी, हनुमान जी व शंकर जी की मूर्ति व चित्र मुख्य रूप से विद्यमान है। अधिकतर परिवारों में श्रीरामचरितमानस, हनुमान चालीसा, गीता, कुरानशरीफ की उपलब्धता है। अतः स्पष्ट है कि वृहद हिन्दू धार्मिक विष्वास कर्मकाण्ड और नवीन जीवनषैली ने ग्रामीण जीवनषैली को महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित किया है जोकि परिवर्तन की प्रक्रिया (आधुनिकीकरण) के प्रभाव को प्रकट करता है।

xkeh.k lenk;k es cEgno ckck dk LFkkuh; xkeh.k nork dh ekU;rk ikIr g %&

गांव के लोग ब्रम्हदेव बाबा जो कि स्थानीय ग्रामीण देवता के रूप में पूजे जाते हैं तथा जिन्हे गांव का रक्षक माना जाता है उनके सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की यह मान्यता है कि गांव के लोग ब्रम्हदेव बाबा में (27.4 प्रतिषत) अत्याधिक (53.0 प्रतिषत) सामान्य विष्वास रखते हैं। जिसमें वृद्ध, षिक्षित व अनुसूचित जाति के उत्तरदाता अत्याधिक ब्रम्हदेव बाबा के प्रति विष्वासवान हैं तथा युवा आयु समूह के उत्तरदाताओं की ब्रम्हदेव बाबा के प्रति कम प्रतिषतता परिवर्तन को प्रकट करती है।

xkeh.k lenk; d vf/kdrj mRrjnkrk lR;ukjk;.k Hkxoku dh dFkk dk fo'k"k rkj ij lurr g %&

गांव में सत्यनारायण भगवान की कथा का आयोजन 80.0 प्रतिषत उत्तरदाताओं के परिवारों में किया जाता है जबकि उच्चजाति के लोग 40.5 प्रतिषत वर्ष में एकाधबार तथा

अनुसूचित जाति के लोग 55.6 प्रतिषत विषेष पर्वों पर ही सत्यनारायण की कथा को सुनते हैं। अतः स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति की अपेक्षा उच्च जाति में सत्यनारायण भगवान की कथा के प्रति कम रूचि आधुनिक परिवर्तन को दर्षाती है।

xkeh.k lenk dh rhu pkFkkbZ dh yxHkx mRrjnkrk /kkfeZd xzUFkksa dk ikB ,oa Jo.k fo'k"k rkj ij djrs gSa %&

ग्रामीण लोगों में धार्मिक ग्रन्थों का पाठ एवं श्रवण व्यक्ति की धार्मिक आस्था का प्रमुख परिचायक है। गांव में लगभग तीन चौथाई (67.4 प्रतिषत) उत्तरदाता धार्मिक ग्रन्थों का पाठ एवं श्रवण करते हैं तथा 38.7 प्रतिषत एक चौथाई से ज्यादा उत्तरदाता यह मानते हैं कि उनके शोषण में धार्मिक ग्रन्थों की भूमिका है, 58.3 प्रतिषत उत्तरदाताओं का यह भी मानना है कि धार्मिक प्रथाएं व परम्पराएं उनके उत्थान में बाधक हैं। अतः यह मनोवृत्ति आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का द्योतक है।

vkt Hkh xkeh.k lenk; esa Hkwr&izsr o vizkd`frd 'kfDr;ksa rFkk tknw Vksuk o vk>k vkfn esa fo'okl fd;k tkrk gS %&

ग्रामीण लोगों के 10.9 प्रतिषत परिवारों में भूत–प्रेत व अप्राकृतिक तत्वों में अत्याधिक विष्वास किया जाता है तथा 60.9 प्रतिषत उत्तरदाता भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विष्वास नही रखते हैं। भूत–प्रेत व अप्राकृतिक शक्तियों में विष्वास की कमी उन परिवारों में अधिक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है जोकि युवा, उच्च षिक्षित व उच्च जाति के उत्तरदाता हैं। इसी प्रकार 91.3 प्रतिषत उत्तरदाता भूत–प्रेत के प्रकोप को नही मानते और न ही कभी उनके परिवार में हुआ तथा 60.4 प्रतिषत उत्तरदाता जादू–टोना में विष्वास नही करते। जो उत्तरदाता जादू–टोना में विष्वासवान हैं उनमें से 89.1 प्रतिषत उत्तरदाताओं के परिवार में देवी–देवताओं को प्रसन्न करने तथा अन्य परेषानियों के निवारण के लिए जादू–टोना (करावा धराई) का सहारा लिया जाता है। अतः उपर्युक्त दर्षित परिवर्तित मनोवृत्तियां आधुनिक परिवर्तन को प्रदर्षित करती है।

xkeh.k lenk; esa or vFkok miokl dks vkt Hkh egRo fn;k tkrk gS %&

ग्रामीण समुदाय के 47.8 प्रतिषत उत्तरदाता व्रत अथवा उपवास रखते हैं अधिकतर परिवार के सदस्य वार्षिक व त्यौहारिक एवं साप्ताहिक व्रत रखते हैं। अधिकांष उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्य नैमिषारण्य तीर्थ स्थलों के अतिरिक्त हरिद्वार, प्रयागराज, बद्रीनाथ, केदारनाथ इत्यादि के दर्षन कर आये हैं। तीर्थ स्थलों पर जाने वाले आधे से अधिक उत्तरदाताओं का मुख्य उद्देष्य स्नान व दर्षन करना है तथा आधे से अधिक तीर्थ स्थलों पर जाने वाले उत्तरदाता यह मानते हैं कि वहां जाने से आत्मा को शान्ति मिलती है। मनोवृत्तियों

में परिवर्तन के फलस्वरूप तीन चौथाई से अधिक उत्तरदाता व परिवारीजन मन्दिरों में पूजा के लिए आते जाते हैं। जिसमें 22.6 प्रतिषत उत्तरदाता प्रायः मन्दिरों में जाते हैं, 63.9 प्रतिषत उत्तरदाता कभी–कभी मन्दिरों में जाते हैं तथा एक चौथाई से अधिक 28.2 प्रतिषत उत्तरदाता फसल काटने के बाद कृषि सम्बन्धी पूजा पाठ करते हैं। होली, दीपावली, विजयदषमी व नवरात्र के पर्व को अधिकतर उत्तरदाताओं के परिवारीजन व स्वयं तकनीकीकरण के संसाधनों व तरीकों को अपनाकर पर्वों व त्यौहारों को नवीन तकनीकी के तहत हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। अतः स्पष्ट है कि उपरोक्त निष्कर्ष आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को प्रकट करते हैं।

xkeh.k lenk; e lLdfrdj.k dh ifØ;k e fujUrj of) gk jgh g %&

ग्रामीण समुदाय के 91.3 प्रतिषत उत्तरदाता आधुनिक वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। शादी विवाह के अवसर पर 96.1 प्रतिषत उत्तरदाता जोकि युवा आयु समूह के षिक्षा के बढ़ते क्रम में उच्च षिक्षित, उच्चजाति, अनुसूचित जाति व पिछड़ी जाति के उत्तरदाता अधिकतर टैक्सी का प्रयोग करते हैं। दूसरी जातियों के यहां सम्पन्न होने वाले संस्कारों में 89.1 प्रतिषत उत्तरदाता भाग लेते हैं। खान–पान के सम्बन्ध में निम्न व उच्च जाति का भेद–भाव की समाप्ति का अधिकांष 75.2 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने अनुमोदन किया है जोकि उच्च षिक्षित और युवा आयु वर्ग अनुसूचित जाति व पिछड़ी जाति के उत्तरदाता इस भेद–भाव की समाप्ति के अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में समर्थक हैं। नगरीय आवास और जातिगत भेद–भाव की कमी से सम्बन्धित तथ्यों का विष्लेषण यह स्पष्ट करता है कि अधिकतर 70.4 प्रतिषत उत्तरदाता यह अनुभव करते हैं कि नगरों में जनसंख्या की अधिकता, आवासीय समस्या, व्यवसायिक विभेदीकरण और गतिषीलता तथा द्वितीयक संस्थानों की महत्ता में वृद्धि इत्यादि के कारण जातिगत भेद–भाव निरन्तर कम होता जा रहा है। अधिकांष उत्तरदाता 80.4 प्रतिषत यह मानते हैं कि षिक्षा के प्रसार के साथ–साथ अन्धविष्वास व संकीर्णता में कमी आयी है जोकि नवीन परिवर्तनों के तहत नवीन मनोवृत्तियों का उदय आधुनिक परिवर्तनों के आत्मसातीकरण का द्योतक है।

xkeh.k lenk;k e lkLdfrd dk;Øek ukVd] ukVdh dk n[ku e vf/kdrj mRrjnkrk :fp j[kr g %&

ग्रामीण समुदाय के 60.9 प्रतिषत अधिकांष उत्तरदाता नाटक–नौटंकी देखने में रूचि रखते हैं जिसमें युवा, अनुसूचित जाति के अधिकतर उत्तरदाता हैं। इस आधुनिक परिवर्तन के युग में भी धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों को लोग विषेष रूप से पसन्द करते हैं तथा 65.2 प्रतिषत उत्तरदाताओं की रामलीला देखने में रूचि प्रतीत होती है तथा स्थानीय मेलों में आयोजनों पर अधिकतर उत्तरदाता मेलों में जाने की रूचि रखते हैं।

xkeh.k ykx vkt Hkh ykduR; ¼fojgk] dtjh o vU; uR;½ dk vf/kd n[kuk ilUn djr g %&

ग्रामीण समुदाय के लोग 72.2 प्रतिषत नवीन तकनीकी से युक्त नवीन लोकनृत्य व नृत्यों के नवीन स्वरूप को देखने में अधिकांष रूचि रखते हैं तथा एक चौथाई से अधिक 38. 3 प्रतिषत उत्तरदाता मोबाइल व रेडियों के माध्यम से लोकगीत आल्हा–ढ़ोला सुनने वाले हैं। आल्हा–ढ़ोला सुनने की कम प्रतिषतता आधुनिक परिवर्तन को दर्षाती है तथा जो उत्तरदाता आल्हा–ढ़ोला सुनने वाले हैं वे क्रमषः वृद्ध आयु के अषिक्षित व अनुसूचित जाति के उत्तरदाता हैं तथा ग्रामीण लोगों की 40.4 प्रतिषत रासलीला देखने की प्रवृत्ति प्रकट होती है जबकि रासलीला न देखने वाले ग्रामीण समुदाय में अधिकतर लोग हैं। अतः स्पष्ट है कि परिवर्तन के नवीन कारकों (आधुनिकीकरण, पष्चिमीकरण, मषीनीकरण, आद्योगिकीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी व संचार क्रान्ति इत्यादि) ने सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिमानों, वृहद हिन्दू धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति की परम्परागत मनोवृत्ति के स्थान पर नवीन तकनीकी मनोवृत्तियों का उद्‌भव किया है जोकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया व परम्परा समाज में स्थापित करने पर विषेष बल देती है।